भल लूआं बाजो किती

(निबन्ध-सग्रं)

भल लूआं बाजो किती

डॉ० किरण नाहटा

स्वस्ति साहित्य सदन
रानी बाजार, बीकानेर-334001

मूल्य : बारह रुपये मात्र

प्रकाशक : स्वस्ति साहित्य सदन, रानी बाजार, बीकानेर—334001
मुद्रक : एस. एन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032
संस्करण : वैसो, 1983 आवरण : पृथ्वी

BHAL LUAN BAJO KITI : KIRAN NAHTA PRICE : 12/-

ममताळू मां
अर
नेही अग्रज
रायचंद्र जी नै

विगत

भल लूआं बाजो किती

मरु-भोम—म्हारी आ मायड भोम, जुगां-जुगां सूं बिसराइजती रैयी है। खासकर साहित्य में तो सदा ही दुःख, निराशा अर सूनैपण रै प्रतीक रूप ही माण्डीजती रैयी है। मरु-भोम अथवा रेगिस्तान रो नांव सुणतां ही लोगां रा मुंह किरकिरा हुय ज्यावै, वांरी दीठ में रेत रो समन्दर पसर ज्यावै अर वांरी कल्पना में तिरण लागै है—कुदरत रो एक लूखो अर भूण्डो सो चित्राम।

ऐड़ी हालत में अठै कुदरती फुटरापै री बात करणी लोगां नै अपरोगी लागैली, पण के साचै अठै रै कुदरती फुटरापै री बात करणी अणूतो कळाप करणो हुवैला ? के मरु-भोम—म्हारी आ मायड भोम, इसी लूखी अर हीण है कै ईं पर चरचा करता ही मरभोजां ? के अठै रा लोगां री जिनगानी भी इत्ती ही लूली-सूखी अर उछाव सूं सूनी है ? के सैंखाट करती आंध्यां, बळबळती लूआं अर आभै सूं वंतळ करता घड़ी-घड़ी उठणिया बंभूळिया ही ईं प्रदेस रो सांच है ?.जद हूं आं अर आं जिसी दूजी सगळी बात्यां माथै विचारूं तो म्हनै की दूजो ही सांच निजर आवै।

च्यारंमेर पसरयोड़ा ऊजळ-निरमळ रेतआळा धोरा विरानगी रो नी, पवित्रता अर निरमळता रो अहसास करावै। समन्दरी छोळां सा पसरयोड़ा आं धोरां पर कुदरत पून रै हळवा हाथां नित नूवां चित्राम मांडै। कुदरत री आ हरकत देख'र यूं लखावै जाणै कुदरत दुनियां रै बीजा भागां में जका फूटरा सूं फूटरा चित्राम मांडै, वांरो पूर्वाभ्यास वा अठै करै। धोरां रो औ स्वच्छ कैनवास वींरी खातर कोरी स्लेट रो काम करै जिण माथै वा भांत-भांत रा चित्राम माण्डै अर मिटावै। ईं दौरान जिका रूप वी नै दाय आवै, वानै वा फाईनल रूप में दूजी-दूजी ठोडा माडै। कुदरत रो औ व्यापार किणी गुणी कलाकार री सृजन-प्रक्रिया रो अहसास करावै।

म्हारी ऊपरली बातां शायद कई जणां नै अणूती कल्पनावां लागैली

अथवा कोरी भावुकता लखावैली । पण न औ अणूती कल्पनावां है अर न ही आ कोरी भावुकता है। आ बा दीठ है, जकी कै मायड़ भोम रै प्रति साचै हेत सूं ऊपजै । अै वै भावनावां है जकी आपरी धरती री धूड़ मे रस्या-बस्यां जलमै । ओ बो हेत है, जको'क आपरी धरती री एक-एक धड़कण अर एक-एक सास रो लेखो-जोखो राख्यां पांगरै । आं बो समर्पण भाव है, जठै—'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' री बात भली-भांत साच लखावै । इसी मनगत मे पूग'र कोई कवि गा उठै तो वेजा कांई—

आ तो सुरगां नै सरमावै
ईं पर देव रमण नै आवै
ईं रो जस नर नारी गावै ।
धरती धोरां री
सूरज कण-कण नै चमकावै
चन्दो इमरत रस बरसावै
तारा निरछावळ कर ज्यावै
धरती धोरां री ।

आ अनुभूति किणी एक ही कवि री हुवै, सो भी बात नी है । अठै तो जुगा-जुगां सूं अलेखूं कवियां नै मायड़ भोम रै इणी हेत मे आपाद-मस्तक भीजतां देखां । जूनां अर नूवा सगळा कवियां री रचनावां मे मायड-भोम रो ओ हेत खरै रूप में प्रगट्यो है। आज सूं कोई पांच सईकां पैला रो कवि भी इणी हेत मे डूब'र लिख्यो हो—

बाजरियां हरयाळियां, बिच-बिच बेलां फूल ।
जइ भर वूठउ भादवउ, (तउ) मारू देस अमूल ।।

मारू देस रो ओ अमोलक रूप खाली कवि-कलाकारां रै दिल मे ही बसै, सो भी बात नी है । अठै तो जणो-जणो ईं अमोलक रूप पर रीझतो निजर आवै । और तो और, हजारूं कोस आन्तरै बैठ्या धन-लोभी कैई-जणिया प्रवासी राजस्थानी भी आपनै ईं भोम खातर झूरता निजर आवैला। ईं धरती री ओळ्यूं में आमण-दूमणा बैठ्या वां प्रवास्यां नै सगळी भौतिक सुविधावा भी कठै विलमा सकै ? जणै तो एयरकंडीशण्ड बंगलां मे भी वां रो जी कसमसावै अर बठै भी वांनै कमळ वेसळू में गट्टामाटी

खावण रा सुपना आवै। मीठा मतीरां री याद मे बांनै दाख अर दाड़िम रा भोग भी फीका लागै, सिट्टा रै मीठै मोरण आगै बासमती चावळ भी बेस्वादा लखावै अर काचर, बोरा री हूर में सेव अर अगूंर भी अणखांवणा लागै। इण रो रहस्य कांई है ? ओ ई धरती अर ई धरती री कूख सूं नीपजी वस्तुवां रो जबरो आकर्षण ही तो है। ओ ई धरती रै लूंठै हेत रो प्रमाण ही तो है।

हुय सकै, म्हारी अै बातां आपनै दाय नी आ रैयी हुवै। आप मन-ही मन सोचता हुवो कै ओ अणूतो ही मोदीजै है। माळाणी भूंडै भाटै माथै पळपळाट करतो पितळपाणो थेयड़'र तरास्योड़ी संगमरमरी मूरती सूं बींनै इधको बतावै है। आप कैवोला कै इयां लाम्बी चोडी बातां बघारयां के मरुभोम री नीरसता सरसता में बदळजासी ? भलै आप पूछोला'क जे ई धरती मे इत्ता ही गुण हुवता तो अठै रो कवि ही आ बात क्यूं कैवतो—

जिण भुंइ पन्नग पीयणा, कयर कंटाळा रूंख।

आके फोगे छांहड़ी, हुंछा भांजे भूख॥

जी भोम माथै हरियाळी रै नाम पर कंटीला कैर, आकड़ा अर फोगड़ा ही लाधै अर जठै पेट भरण खातर भुरट रा कांटा तकात खावणा पड़ै, कांई पड़्यो है, बीं धरती मे। ई धरती रो इत्तो गुमान, जिण रै आतंक सूं छोरयां मारवाड़ में ब्याहीजण री ठोड़ आखी ऊमर कंवारी रैवणो कबूलै —

बावा न देई मारूवां, वर कुंआरि रहेसि।

हाथ कचोळो, सिर घड़ो, सीचंती य मरेसि॥

साची ही बात है ! भला इसी भोम में रैवण सूं भी कांई लाभ जठै पाणी खातर आधी रात नै प्रीतम छोड़णो पड़ै—

वाळु बावा देसड़ो, पाणी संदी ताति।

पाणी केरै कारणै, प्री छंडै अध-राति॥

अब आप ही सोचो, इसी भोम वास्तै मोदीजणो मूगोपणो नी तो ओर काई है ? पलेक तो विचारो कै जठै हिमाच्छादित पर्वत-शृंखलावा नी, जठै कसमसाती छोळांआळो समंदर नी, जठै इठलाती-वळखाती नदियां नीं अर जठै केसर क्यारयां अर केवड़ै री बाड़यां नी, वी भोम रो मिनख जे आपरै कुदरती, फूटरापै वास्तै मोदीजै तो ई सूं बेसी निरमाई कांई

हुसी ?

मानूं कै कसमीर री घाटघा में ठौड़-ठौड़ पसरयोड़ै फुटरापै नै, कन्या-कुमारी रै लीलै समन्दर मे भाखर मान उछळती गिरती छोळा रै मन-भांवतै नजारै नै अर हिमाळै री आभै सूं बाता करती विराट हिमाच्छादित सिखरा री ओपती आभा नै निरखण रो मोको म्हांनै कोनी मिलै । कुदरती फुटरापै रो ओ राशि-राशि वैभव अठै ही विखरयोडो है पण के बींरै अभाव मे म्है अठै रै मुरंगै सांवण नै अणदेख्यो कर देवां ? के उन्हाळै री ढळती रात मे चालती सीळी-मधरी पून रै आणन्द नै भूल ज्यावा ? कै चोमासै मे उमड़-घुमड आवती कळायण नै देख'र मोद में नाचता मोरियां सारै नाचणो बन्द करदचा ? ना हुवो आभै सूं बतळावता हिमाच्छादित सिखर, नां हुवो दीठ रै पमार सू आगै ताईं फैल्योड़ो लीलो समन्दर, ना हुवो फुट-रापै मे न्हावती पहाडी घाटचा । म्है तो म्हारी कुदरत री आ छवि ही निरख'र मस्त हां । म्हांरै ईं गैलेपण पर जे कोई हांसै तो भला ही हांसो । कोई मोटो काव्यशास्त्री म्हारी ईं मनगत पर व्यंग्य करै तो भलाई करो । म्है भला आरा पाल्या मन रै सहज उछाव नै क्यूं रोकस्यां ? किणरी ही विराटता अर किण रै ही विस्तार सूं काईं होड ? ईं अवसर पर तो मन्नै अपभ्र श रै नामी कवि अब्दुर्रहमान री आ उकती याद आय रैयी है—

> जइ वहुल दुद्ध समीलिया य उल्ललई तदुला खीरी ।
> ता कण कुक्क समाह आ रब्बडिया या दडब्बडउ ।।

(जे मोकळै दूधआळी चावळा री खीर ऊबळै है तो काईं कण मूसी-आळी राबडी नी दडबडावै ?)

> जर भरह भाव छन्दे णच्चई णवरंग चंगिमा तरुणी ।
> ता कि गाम गहिल्ली ताळी सद्दे ण णाच्चेई ।।

(जे भरत मुनि द्वारा निर्दिष्ट भावा अर छन्दा रै मुजब नूवै जोवन रै फुटरापै सू भरपूर तरुणी नाचै तो काईं गाव री गहलो ताळी बजा'र नी नाचै ?)

काईं हुयो जे ईं धरती री कूख सू केसर, केवडा अर चम्पा री मैं'क नीं फूटै ? इणां खातर म्है खुद नै हीण क्यू समझां ? म्हारी मां री कूख सूं तो जका सन्त, सूरमा अर सतियां जलम लियो है, वांरै तप, तेज अर त्याग

री मैंक जुगां-जुगां सू पून-पांणी मे समायोडी है। आ बा मैं'क है, जकी कदे बगत परवाणे मोळी नीं पड़े। आ वा मैं'क है, जिणरी गन्ध सूं आज भी मतवाळा वोटयांरा में मायड भोम खातर होडां-होडी माचै। आ बा मैं'क है, जकी कर्नल टॉड जिस्या अलेखूं परदेस्या रै मन प्राणा में बसगी। आ वा ही गंध है, जकी टैस्सीटोरी जिस्या विद्वानां नै बिलमा लिया। आ वा ही गंध है, जकी बंगला अर गुजराती साहित्य नै सुवासित कर रैयी है। कठै तांई बखाण करा, इँ धरती री इँ मैं'क रो, कठै तांई बखाण करा इँ धरती रै मांयलै फुटरापै रो। जे थानै साच्यांणी इँ धरती रै मांयलै फुटरापै रा दरसण करणा हुवै, जे थे साच्यांणी इँ धरती री सरसता नै देखणी चावो तो घड़ी एक सगळा पूर्वाग्रहा नै अळगा राख'र पछै देखो।

फुटरापो ही देखणो हुवै तो इँ धरती रै रैवास्या रो जीवण देखो। कोमलता देखणी हुवै तो बांरै हिरदै नै देखो। निरमळता अर पवित्रता देखणी हुवै तो बांरै आचरण नै देखो। ज्यूं-ज्यूं आप रेगिस्तान रै मांयलै नै मांयलै भाग में बढता जावोला, आपनै बठै कूवां री ऊंडाई रै अनुपात में ही मिनखां में गहराव अर गम्भीरता नजर आवैली। ऊंडा कूवां रै मीठै पाणी रै अनुमान ही बांरो स्वभाव अर बरताव मीठो लागैलो। इसा धीरा, मधरा, मिठबोला अर सरल हिरदैआळा लोग आपनै और कठै लाधैला ?

फुटरापै रै बाद अब रैयी बात सरसता री तो बीरी भी अठै कमी कोनी। आपनै अठै री लोक-संस्कृति अर लोक-साहित्य में रस री अटूट धारा वैवती निजर आवैली। अर गीता री तान, बाता रा ठसका, अर नाच-ख्याला री मोहकता सहजा ही मन नै बिलमा लेवै। माझळ रात रा झीणा सुर में गूंजता मिसरी-सा मीठा गीत सुणनियै नै रसमग्न कर देवै। सीयाळै री धुंइ पर रमता 'वातां' रा बोल बात ही बात में कल्पना री रंगीन दुनिया मे धुगा देवै। खुला मंचां पर खेलीजता भांत-भात रा ख्याल हजारूं-हजारूं दिलां री धड़कण नै आपरी मुठ्‌ठ्या मे बान्ध लेवै। अठै रा भात-भांत रा नाच देख'र तो मन ही नी, तन भी नाचण लागै।

हुय सकै है'क अठै आप म्हनै भळै टोको। आप शायद पूछोला कै कुदरती फुटरापै रो अर त्याग-तप रो अथवा लोक सस्कृति रो कांई ताळमेळ ?

ई सूं वेसी म्हारी बातां सूं आखता हुय'र आप अठै तांई कैय सको हो'कै आ थोथी बातां में कांई पड़चो है ? साच तो ओ है कै निरभागिया अर हीणपुण्या मिनख ही ई धरती पर जल्मै । पूरवला पुन्न ओछा पड़णै रै कारण ही कोई इं सरापीज्योड़ी जमी (अभिशप्त भूमि) रो मूंढो देखै अर आखी उमर कुदरत री करड़ी मार झेलै । दाणै-दाणै तांई कळाप करणो अर पाणी री एक-एक बूंद खातर आठूं पोर, चोबीस घड़ी बळबळती लूवां में भचीडा खावणो कुदरत री क्रूर दृष्टि रो परिचायक नीं तो ओर काई है ?

साच है, आप री बात सोळा आना साच है, पण म्हारी भी एक बात रो जवाब तो आप देवोला । काई आप बतावोला कै कुदरत कीनै, बखसै भी है, कांई ? ऊंचा-ऊंचा पहाड़ी इलाका में रैवणियां के कुदरत री कड़ी मीट सूं बचै अथवा मैदानां में बसणियां माथै कुदरत री मीट सदा ही मोळी ही रैवै, के समन्दर रै नेड़ा रैवणियां नैं कुदरत री करारी मार नीं झेलणी पड़ै ? भाखरां में भूस्खलन हुवै जणां बसत्यां री बसत्यां हेठै दब ज्यावै अर समन्दरी छोळा ऊफणै जणै तो कोसां तांई मानखै री तो बात ही कांई कीड़ी तकात रा खुड़-खोज ढूंढ्या को लाधै नीं । सामूहिक मौत रो इसो तांडव नाच तो मरु-भोम रो मानखो आपरी जिनगानी में शायद ही कदे देखै । अब तो मानोला कै कुदरत री रीझ अर खीझ री आपरी ऊपरली व्याख्या कूड़ी है । मोको लाग्यां कुदरत बखसै कीनै ही कोनी जणै फेर खाली मरुभोम रै ही कुदरती क्रिया-कलापां नैं क्यूं बखाणो ?

देवण नैं म्हारी ऊपरली बातां रो भी पड़ूत्तर दियो जा सकै है । बात सूं बात तो निकळती ही रैवै, बीरो कांई निवेडो आवै ? पण हूं अब घणी बातां नीं कैयर बस एक बात ओर कैवणी चावूं । जका कुदरत री सोवणी गोद में बसण रो गरब करै, जका आपरै इलाकै रै कुदरती फुटरापै रो वखाण करता नीं धापै, बा नैं ओ एक सुवाल तो पूछां, कै ओ कुदरती फुटरापो बारै जीवण नैं कित्तो'क सजावै-संवारै ? कुदरती फुटरापै रो मेळ पाय'र बारो जीवण कित्तोक ऊंचो उठ्यो ? के बारो अन्तर-बाह्य जीवण मरु-भोम रै मानखै री तुलना में घणो सरस अर सुरंगो बण्यो है ? जद आ बातां माथै विचार करां तो निराश ही हुवणो पडै । लूट-पाट,

चोरी-डकैती, हिरयावां अर बलात्कारा री जित्ती वारदातां कुदरत री सोवणी गोद में वस्योड़ा आं मैदानी अंचळा मे हुवै अर मिनख रो जिसो कुत्सित अर कळूठो रूप बठै देखण नै मिलै, बीनैं देखतां तो मरुभोम रो मानखो घणो सावळहै। बीरैं अन्तर रैं फूटरापै री अर बी रैं हिरदै री उदारता री कांईं बात, जको खुद बिखो भोग'र भी दूजा रैं सुख री कामना करै—

जिण दिस नर कंवळाठिया, मतना कीज्यो बास ।
थानैं मुरधर झेलसी, जी भर देवो तास ।।

कवि री आ वाणी आखै मरुभोम रैं मानखैं रैं अन्तर रो उजास है इणी खातर छेकड कवि रै सुरां में सुर मिला'र एकर भळे कहस्यां—

जीवण दाता बादळधां, थां सू जीवण पाय ।
भल लूआं बाजो किती, मुरधर सहसी लाय ।।

अपघातां तळै ऊंघतो गांव

ओ गाव म्हारो ही है, पण पर-साल ई गांव में जिकी तीन वारदातां हुई ही, जद वां माथै सोचूं तो ओ विश्वास कोनी हुवै कै ओ म्हारो ही गांव है। ओ वो ही गांव है जिणरी स्तुति में कदै छायावादी शैली में एक मातरो मैं लेख लिख्यो हो, जको आज भी आधै-पूर्णै रूप में कठै ही म्हारै जूनां कागदियां में पड्यो लाध ज्यासी। जिणरी तारीफ करतो मन कदै धापतो नी हो अर जिणरी चर्चा चाल्यां हूं सारै ताईं घणो भावुक हुय जाया करतो हो, पण परकै बीत्योड़ा बै तीनूं बिरतांत शुभ्र, धवल रजत रेती रै धोरियां सूं घिरियोड़ै कचे-पके घरांआळै म्हारै गाव री बी 'इमेज' नै कठै ही खरोंचे है, जिणमें म्हनै म्हारो ओ गाव सुरगलोक सूं व्हालो लखायो हो।

एक-एक करनै बीत्योडी अै तीनूं दुर्घटनावां म्हारी गांव री 'इमेज' नै खण्डित करी है। गावआळा रै भोळैपण बावत जको एक किताबी मोह ऊपज्यो हो बी पर ठाडी चोट करी है।

पैली वारदात रात रै सून्याड में घटी ही। पेट-सूई जोध-जवान बैराग्या रै बेटे री बहू, ओधवायरै मोटयार अर लडोकड़ा सासरिया सूं धाप'र समक आधी रात नै गांव रै काळजै री ठोड बण्योड़ै कुवै में जा'र दबकी लगाई ही। झाझरकै जद रोळो फूट्यो तो समूळो गांव कुवै माथै भेळो हो। जित्ता मूंढा बिती ही बात्यां। बैराग्या री गिरस्थी सूं लेय'र गावरी पचायत व्यवस्था ताईं मोकळी बात्यां उगळीजी, पण सार की नी निकळ्यो। छेकड़ चटपट लास नै दाग देय'र बात नै ठण्डी-मोळी घालण री हुस्यारी ही सगळां वरती।

गाव में तो बगत लाम्या बात भूली पडी, पण वा आज भी म्हारो लारो कोनी छोड रैयी है। वी बात नै लेय'र मन में घणा गोट ऊपडै। सोचूं हूं कै के ओ बिरतान्त इयां ही बणणो हो? के सावरियो बी गोरडी री मौत इयां ही चावै हो? के बेमाता छठी रा अै ही लेख लिख्या हा? नहीं, अठै सांवरियै अर बेमाता री बात साव कूडी। दोनूं आप आपरी ठौड घणा

मोटा हुय सकै है। कठै ही म्हारी आस्था अर श्रद्धा रा केन्द्र हुय सकै। पण अठै बानै विचाळै त्याणो म्हनै नी सुवावै। आ तो साव मिनरां रै बस री बात ही। लारलै मोकळा दिनां सूं इं गिरस्थी री खटपट सू घणा जणा वाकिफ हा। आड़ोस्यां-पाड़ोस्यां सू के छानो हो ? ठावा-ठावा लोगा रै कानां भी वात पूगी ही, पण कोई इं कचोइजती बात नै सुधारण मे रस नी लियो। कोई मनां रै बधतै आन्तरै नै रोकण नें आडो नीं आयो। कोई रोजरी रामायण सूं आखती हुयोड़ी बहू नै धीज नी बन्धायो। कोई पीढियै रै मोह में मिनखाचारो भूल्योड़ा घरआळां नें दो करड़ी-काठी सुणा'र गेलै ल्यावण री दरकार कोनी समझी। क्यूं ? आखिर क्यूं ?

आ 'परमहंस' री सी स्थिति किण री देन है। के आज गावआळा भी सहरआळा री दांई इत्ता 'सभ्य' हुयग्या है कै वे 'अब पराये घर री बात में आडो आवणो 'शिष्टाचार' रै खिलाफ समझण लागग्या ? का पंच री जग्यां फदड़पंच कवावण रै डर सूं लोगां मूण्डो नी खोल्यो ? का पूरे गाव में दैलां जको रागात्मक सम्बन्ध हुया करतो हो बीरा तार कठै निमळा पड़ग्या या जावक ही टूटग्या ? जके सूं म्हारै-थारै रा विचार आया है, आपरै-परायै रो आन्तरो वध्यो है।' साचो पूछो तो अब समअनुभूति री वा भावना कठै है जिण सूं आपरो-परायो सुख-दुख एक सारीसो लखातो !

अपणयात खूटगी पण फेरूं भी गांव म्हारो ही है।

इं घटना माथै सोचूं जणै माथै में एक बात भळै ऊपजै। म्हनै यूं लागै है कै जात बिरादरी री पीचो पड़तो डर भी इसी घटना रो एक मोटो कारण हुय सकै है। आज जात-गंगा नै कुण गिनारै है ? हुक्के-पाणी टूटणै अर न्यात बारै काढण री बात्यां तो घणी बोदी पड़गी है अर साची पूछो तो आज रै हालात में अै आपरी अर्थवत्ता गमा बैठी है। बगत आलै घणो लारै छोड़ आयो है। पण अठै आ बात जरूर बिचारण जोग है कै इं व्यवस्था रै टूटणै सूं जको 'वैक्यूम' बण्यो है, हाल वो नै भरणआळी कोई माकूल व्यवस्था आपां नहीं बणा सक्या हा। जकै सूं तो ओ रोळो पड रयो है। अठै कैवणिया कैय सकै है कै जातीय पंचायतां री ठौड़ ग्राम पंचायतां रो गठण भळै के है ? नूवी पचायत व्यवस्था इं खातर ही तो लागू करीजी है। आ बात ऊपरी निजर सूं देख्या तो भळै साचळ लागै, पण जथारथ

बात की ओर ही है। आ पचायतां रो जूनी पंचायतां जिसो काण-कायदो कठै ? अर हुवै भी क्या सूं ? आ व्यवस्था ग्रामीण समाज री खुद री उपज तो आय कोनी। ऊपर सू थरप्योडी ई व्यवस्था में माधिया भाई ही पांगर रैया है। घणकरा सळिया अर स्याणा लोग तो आपू अळगा रैवण में ही सार समझै। ई हालत में ठावा आदमियां रै बिनां पंचायतां कै कर सकै है अर रैतो-खैयो बाजो बिगाडन में लाग-री है राजनीति।

ग्रामीण राजनीति री बात सोचूं जणै दूजोड़ी वारदात कानी ध्यान जावै परो। पैली बात नै बीत्यां नै कोई दो-ढाई महीनां भी नीं हुया हुवैला कै यी पैलां हीं भळै एक नाजोगी बात बणगी। मागण बी हीं कूवै में झामरकै एक भूख हड़ताली बिदकायोड़ो अगरवाळो आपरै ही किणी भाई-बन्धु माथै खार खाय नै मांय जाय पडयो। पडयां सूं पैलां भाई रै वश-नाश रा तीन हेला पाड़या। जाग्यो, अधजाग्यो गांव बा हेलां नै सुण्यो, *अणसुण्यो करग्यो। गांव जागै हो पण बी री चेतना सोयगी ही, उणी रात* नही बी सूं घणो पैलां ही गांव ऊंघण लागग्यो हो। आजादी सू पैलां अर आजादी रै अेडै-गेडै गांव रै मांय जकी चेतना ही जकी उछाव हो, जकी जागृति ही बा कीनै ठा कठै लोप हुयगी ?

ओ बो ही गांव है जठै रा लोग राड बधावण मे नही राड बुझावण मे विश्वास राख्या करता हा। बगत-बेवगत उठयोडी आवळ-कावळ बात नै ठण्डी धालण में सार समझता हा। अब बठै ही माधिया भाई बात बिगाडण में घणो रस लेवण लाग्या है। ओ भोळो वाणियो भी इना ही गैलसप्पां रै धक्कै चढग्यो हो। अै ही धिंगाणियां पंच बात नै कचोई। भायां-मायां रै लेण-देण रो मामलो होळै-सुसतै धिरजाई सूं मतै ही सळट ज्यातो। पण आं ही कुचरणी कर'र बात नै ऊंधै गेलै घाली। भोळै वाणियै नै उकसा'र आपरा लारला बट काढणा चाया। नेताई री धाक जमाणी चायी अर मांय-बिचाळै पराये घर री आग सूं स्वार्थ रा मिट्टा सेकणा चाया। मामलै वाणियै नै डरा धमका'र पांच-पचास री जुगाड़ बैठाण री करी। पण बात जमती नीं लागी तो भोळियै नै धरणै री बात सुझाई, अन-शन नै ताती करयो अर छेकड लाई नै अपघात री सीढ्यां तळै ल्या [illegible]। इत्तै सू तो आं रो काळजो ठण्डो नी हुयो, जी धाप्यो नी।

मरघोड़े वाणियै री लास नै नेय'र पुलिस री मदद सूं बिरतान्त नै बदाणो चायो । अठै भी मौ-पचास लंफण नैं हाथ मारया, पण बात आरै ढब कोनी बैठी अर सामलो वाणियो माफ निकळग्यो ।

ई बात माथै मोचूं जणै मोकळी ही बातां ऊरुळै । देखतां-ही-देखतां लारलै दस-पन्दरा बरसां सूं अै धिगाणिया नेता कठै सूं पागरग्या ? अब तो गांव में आं री तूती बोलै ब्याव-सावो हुवो चायै ओसर-मोसर आनैं सैं सूं पैलां याद करीजै । लोग बगत माथै विनायक नैं बितारणो भूल सकै पण अै कोनी बिसराइजै । जाणै है कै विनायक तो भूण्ड-बिगाड करो'क ना करो पण आंरै बिचरंथा पछै तो काम माड़ो ही पार लागै । ई हालत में लोग आनैं नी नूतै तो जावै किनै ? बापड़ी दुनियां डरती गोगो धोकै ? सगळा जाणै हैं कै थाणो आंरो, कोट-कचेड़ी आंरा, सिरकारू अैलकार आरा अर मोटोडी कुडस्यां माथै बैठ्या 'भारत भाग विधाता, एम. एल. अे, अर एम. पी. आंरा । आंरो कुण के बिगाड सकै है ?

आज तो गांव में आरा ही तिरायोडा भाटा तिरै । तिरै भी क्यूं नी ? छळ-कपट, दांव-पेच, कूड़-सांच अे की मे लारै है ? जको आंरै बस में आयग्यो यो तो जमी सूंघतो ही दीखै । सुभाव आरो इसो कै सुपना में भी सघळा कोनी रेवै । बीं में भी आंरी जोड़-तोड चालती रेवै । जबान तो खैर आंरी चालै ही है सा पण मोको लाग्या अे ओर-ओर चीज चलावता भी संकै कोनी । कित्ता कमंठ है अै लोग ! अर आंरी कमंठता अैळी को नी जावै । आं रै ई पुरुषार्थ री ही परिणाम है कै आज कूमलै चमार रो खेत आंरै लेतां सागै रळग्यो । कानियै बलाई री कोटी लडी आ रै बाखळ री शोभा बढावै, अर नेमलै, पेमलै, खेमलै जिसा तो दसूं जणां हाथ जोडयां आं रै आगै हाडता फिरै । ओ नजारो देखूं तो जूनै जुग रा सामन्त याद आवै ।

म्हनै यूं लागै कै सामन्तशाही मिटगी पण सामन्त जीवै है । हां, बगत सारू आंरो चोळियो जरूर बदळग्यो । मुंवारा मिलती मूछयां, कांधै झूलती दूनाळी, माथै फबतै केसरिये अर पसवाडै ठिणकनी घोड़ाआळा सिरदारां री ठोड़ धोळी-पीळी टोप्यांआळा मानवी खद्दर रै ढीला चोग्यां सागै जुड़योड़ा हाथ अर मुळकता मूण्डा लियां आ ऊभा

वारै सू तो आ अर वा सिरदारां मे की साम्य नजर कोनी आवै पण माय सूं कोई भेद भी तो कोनी दीसै। आज गांव री खुशहाली अर विकास वास्तै आ सू मोटो राहू और कुण होसी ? अर व्यापक परिपेर (परिप्रेक्ष्य) मे सोचू जणै लागै के ओ राहू खाली म्हारै गांव रै ही तो नही लाग रैयो है आज तो समूचो देस ही कूडी नेताई अर छिछली राजनीति रै इं राहू सू घणो आखतो हुय रैयो है।

अब भळै मोचूं के आखर इं दिसा मे विचारू तो म्हारी निजर देस रै भण्या-गुण्या मोटयारा पर टिक जावै, पण मोटयारां रो ध्यान आवता ही म्हारो ध्यान मत्ते ही तीजोडी वारदात कानी जावै परो।

ओ ही कोई जेठ-बैसाख रो महीनो हो। धोळै-दोपारे सागण बी कूवै मे ही भाग री मारी एक चोधरण आय'र दवकी लगाई ही। सामले कूवै मायँ काम करणियँ एक मिनख बी नै खाली घड़ियो लेय'र कूवैं चढ़ती देखी ही। सोच्यो सायद पाणी खातर चढी है, पण कूवै रा हेली-कोठा तो लारला कई दिना सू खाली पड़्या हा। मन मे की बैम हुयो। दौड़'र मायनै जा'र देख्यो'क सायद इं कूवै सूं किणी कुचमादी 'चाल' खोल दियो हुवै, पण 'चाल' तो काठो जड़योड़ो हो। बैम पुगता हुयो। दौड़'र बारै आयो तो सामलै कूवै मे ऊंधे पटतै किणी मिनख रै पगा री झलको पड़यो। उतावळो सो सामलै कुवै मायँ चढ़ो जणै ठा पड़यो कै खाली घड़ियो, एक जोड़ो चप्पल अर इडूणी नै छोड'र ल्यावणियो ऊंडी गोत लगायो।

बो दौड'र लुगाई रै खोजा-खोजा जाय'र मामधणी नै खबर करी। मारगेसर पीपळिया हेठै 'चरभर' रमता छोरां नै दोडा'र गांव रै पांच-सात ठाया आदमियां नै सनेसो भेज्यो।

देखता-देखतां घर-घर मे बात घूमगी। दोपारै री इं ताप मे बूढा-ठेरा, जोध-जुवान, टाबर-टीकर जको भी सुण्यो आय'र कूवै मायँ मगरियां माड-दियो। आगीता-पाछीता लोगा कूवै सूं लास काढ़णा रो जुगाड़ बैठाण लाग्या। कठै सू लाव मंगाई तो कठै सूं गावळ अर कठै सू ही जेवड़ी। कूवा कूवां मे वड़ण मे हुंस्यार मिनखां नै न्होरा काढ'र कूवै मे उतारया। थोड़ी देर मे मिनखां लास नै बारै ल्याय नाखी। चोधरण री मेली फाटगी ही, ... पड़ग्यो हो। मांरो-निछोर बा कठै री गोवची नार अबार घणी

अपरोगी (विकराळ) लागै हा।

रीता-कळपता घरआळा लास में दाग देवण खातर लेग्या। पण भेळा हुयोड़ा लोगां रो मगरियो हायो-हाय कोनी लिड्यो। बारै विचाळै वातां रो बजार घणो गरम हो। लोगां में ई बात री करड़ी रीस ही'क सागण ई कूवै में ही थोड़ा दिन पैलां ही दो मिनख पड़'र अपघात कर लियो पण निकमी पंचायत मूं तो इत्तो ई काम नी हुयो'क ई मूनोड़ै कूवै रै ढकणै रो जावतो करती। एक किवाड़ घड़ा'र ही तो लगावणो हो। किसो जुध जीतणो हो। लारली वार भी जद यो वाणियो मरयो हो अर वी सू पैलां भी जद'क बा पेट सूंडै लुगाई पड़ी ही वी बगत भी आ चरचा चाली ही कै आगै सूं इसी वारदनां नी हुवै ई वास्तै कूवै रो जावतो कर दियो जावै। पण बात चाली यात ही रैयगी। पंचायत रै धणी-धोरयां नै कठै इत्ती फुरसत कै वै ई मूनोड़ै कूवै रै जावतै बावत सोचै! अबार किसो चुनाव हुवणो है अर बीयां भी वां लायां रै और घणा ही काम है। जीव नै और घणा ही लफड़ा है। नेताई नै बधायण खातर कित्ता के कौतुक नी करणा पड़ै।

सोचू हूं कै इसी पंचायत पड़ो दरड़ै में। कांई गांवआळा में खुद इत्तो राम कोनी जको एक छोटे-से काम वेई ई नाजोगी पचायत रो मूण्डो ताकै। ई सूं पैला भी तो ई गांव में ठाडा-ठाडा काम हुया हा। वी बगत किसी पंचायत मारो लगायो हो। गांव रा सगळा सार्वजनिक सस्थान गांवआळा आपरी हिम्मत रै पाण ही तो ऊभा करया है। आ वेई लाखां रुपियां रो चन्दो भेळो कर्यो तो आज के ई छोटे सै काम खातर पइसा भेळा कोनी करीजै। अर पइसा भेळा करण री कांई बात है। गांव मे घणा ही वाणियां बसै। किण रै ही कनै सूं दो-च्यार सौ रुपिया लिया जा सकै। सळियो अर ठावो आदमी जाय'र मांगै नो वी नै कुण नटै है? पण लागै कै अब कोई इसा काम करणा नी चावै।

साची पूछो तो सार्वजनिक कामां मूं लोगां री रुचि दिनो-दिन घटती जा रैयी है।

ओ वो ही तो गांव है जठै कदै इसा भला कामां खातर निरो उछाह हो। आज सू चाळीस-पैंताळीस वरसां पैला हजार आठसोआळी आबादी-आळै ई गांव मे सार्वजनिक पुस्तकालय खुल्यो हो। उछाही नवयुवकां री

जमाने मे लाइब्रेरी नै चलावण सातर छह-छह रुपया साल्ताना चन्दो दियो हो। गांवआळां रै मनोरजन सातर नाटक मडली बणाई ही। घणां खेचळ करनै राजशाही रै जमाने मे गांव मे स्कूल खुलवाई ही। समाज-सेवा री मनस्या मू ग्राम-सेवा-सघ रो गठन करयो हो, जिणमे निमळा री दवा-औखद सू लेय'र अछूता रै टाबरिया री भणाई-गुणाई ताई री व्यवस्या करता हा। पण आज ? आज जद कै गांव मे पढ्या-लिख्यां री गिणती बधी है, सामाजिक उत्तरदायित्व री भावना बी अनुपात मे ही घटी है। करण नें तो गांव रा पाच-च्यार जणा सोळवीं तांई भणाई करली। ई सूं भी बेसी डाक्टरी, वकालत अर सी० ए० तकात रीं पढाई पूरी कर'र लोग आप-आपरै क्षेत्र मे चोखो नामून कर लियो। स्नातकां री तो खैर गिणती ही कोनी रैयी सा। पण अै 'सरस्वती पुत्र' गांव रै कठै आडा आवै ? आं सू गांव रा किसा काम सरै ? आं लोगां री प्रतिभा अर भणाई-गुणाई रो लाभ गाव नै कित्तोक मिलै ? साची पूछो तो आरै आचरण माथै विचारां तो लाज आवै। बी दिन री ही तो बात है कै कूवै माथै चौधरण री लास नै देख'र आ बिरळचानां मांयलो एक जणां आपरै दूजोडै भायलै नै कयो हो कै यार तूं भी कठै बोर करणआळी जग्यां लियायो। साळी ई 'डैडबोडी' न देख'र सारो मूड अपसैट हुय्यो। तास मे किसोक रंग जम रैयो हो। पण लैऊ तो कुचरणी करया बिना रहीजै कोनी। ई अळबाद मे के काढयो ? कर लियो नी 'हूर' रा दरसण।' अर बीरी ई बात नै सुण'र बीरै आसै-पासै ऊभा दूजोडा 'बिरळवान' ही-ही कर हसण लागग्या।

ओ चित्र आख्यां आगे घूमै जणै माथो चक्कर खावण लाग ज्यावै। इस्या डोळआळा आज रै भण्या-गुण्या मोट्यारा रै पाण समाज अर देस रै विस्तार री बात सोचणी ही गळत। पण देस अर समाज रै आडा अै नी आसी तो ओर कुण आसी ? आगे जोवो अर लारै जोवो छेकड़ काम तो आं मू ही सरसी। इण हालत मे आ नै बिसराया पार कोनी पडै। अठै सोचणो ओ है कै आज रै भण्या-गुण्या नवयुवका रै सोचणै रो नजरियो इण कदर व्यक्तिवादी अर भौतिकतावादी क्यू बणग्यो ? दोष कठै है ? खोट क्या मे है ? सोनो खोटो कै सुनार खोटो ? शिक्षक माड़ा कै शिक्षार्थी · का समूळी शिक्षा-पद्धति ही तन्तबायरी है ? अर खाली शिक्षा-

पद्धति नें ही क्यूं भांडां ? आज तो धर्म लेल्यो, राजनीति लेल्यो, बिणज-ब्योपार का प्रशासन लेल्यो खोट कठै कोनी ? जठीनें निजर दोडावूं बठी-नै प्रश्न-प्रश्न ही ऊभा दीखै। प्रश्नां रै इं जंगळ में खड़्यो सोचूं जणै यूं लागै कै घणो ही सोच लियो अब तो सोचण रो काम पाठकां नें भोळा'र सोज्याणै मे ही सार है।

पाती अेक प्रोफेसर री

परम सखा चरण बिहारीलाल,

लारलै कई दिनां सूं जी अमूझ रैयो हो। म्हारै मांयनै जको इतिहास रद्दो-बदळ हुयो बी री जाणकारी की ठावै भायलै नै करायां बिनां जनम अकारथ लाग रैयो हो, इण खातर घणै सोच-विचार रै बाद तनै घरू मिनख जाण'र आज ओ कागद लिखणो पोळायो है।

भायला! बरसां पैलां आपां हजार कोस आंतरै सूं आय'र अठै प्राइमरी स्कूल री मास्टरी पाय'र घणा राजी हुया हा। जकै बाद हूं तो होळै-होळै बधतो-बधतो एक कॉलिज रो प्रोफेसर, सांच-मांच रो प्रोफेसर बणग्यो हूं अर तूं जको हाल तांई मास्टर रो मास्टर ही पड़्यो है। म्हारी अै ओळ्यां बांच'र थारो मन कड़वास सूं भरैलो अर बी में ओ सुवाल पक्काई जलमैलो'क आखर हूं इत्ती तरक्की कियां करली अर हुय सकै तूं ओ भी जाणणो चावैलो'क सांच-मांच रै प्रोफेसर सूं म्हारो कांई मतलब है? तो भायला! ईं बाबत थारो समचार आवै बी सूं पैलां ही हूं थारी बात्यां रो उथळो देयदयूं तो किसी'क रैवै? आखर हुस्यार मिनखां रा अै ही तो गुण हुवै।

तो सुण भायला। थारै पैले सुवाल रै बाबत तो मनै ओ ही कैवणो है कै ओ म्हारो 'ट्रेड सीक्रेट' है अर तूं तो जाणै है कै आज रै जमाने में, सुण गैल-गपफो आपरै ट्रेड-सीक्रेट नै बताणो चावै। अब रैयो थारो दूजो सुवाल तो बी रो भी ठावो जवाब म्हारै कनै त्यार है। आ बात तो जाणी-पिछाणी है क घणकरा माणस दो भांत रा हुवै। अेक तो बै जका खाली पद विशेष नै ऊपर सूं ओढ लेवै अर दूजा बै जका बीं पद नै भोगै, बी नै मांतरै ढंग सूं जोवै अर बीं'रा सगळा गुण-लखण घणी चतराई सूं बपरा लेवै। अब तू ही बता आं दोनां में सांचलो अधिकारी किसो बाजै? क्यूं दूजो ही नी? हां, तो ईं रै मुजब ही हूं खुद रै खातर 'सांच-मांच रै प्रोफेसर' रो विशेषण

लगायो है ? अब तो तू समझ ही गयो हुवैला कै 'साच-माच रै प्रोफेसर' सू म्हारो कांई मतलब है ? फेर भी चाल तू ठैरयो स्कूलियो मास्टर; तनै लाई नै प्रोफेसरां रै गुणां रो पूरो पतो हुवै'क नी हुवै, इण खातर हूं ही सो की खुलासा माण्डदयूं ।

देख भायला ! प्रोफेसर रो पैलो खास गुण मानीजै बीं रो भुलक्कड़-पणों। हू भी अब तो इं गुण माथै होळै-होळै अधिकार जमातो जा रैयो हू। सुरू में तो मनै ईं खातर खासी खेचळ करणी पडी। हूं इं रो पैलो पाठ घरे ही पोळायो। पैलोपोत श्रीमतीजी री जकी-जकी फरमाइशां पूरी नी करणी हुंवती बानै आ कैयर उडा देंवतो कै आज तो बात सफाई चैसे उतरगी। काल जरूर याद राखस्यू। पैलां-पैलां तो ओ ओळाव श्रीमतीजी रै गळै गावक ही नी उतरतो अर वैं रीसाणां हुय'र घणा-घणा थोक सुणा-वता, पण हूं तो भी की गिनार नी करतो। श्रीमतीजी मनै बकझक कर'र रैय जांवता।

तू तो भायला इं हिटलरी थ्योरी सू वाकिफ हुवैलो ही कै अेक कूड नै सौ बार उथळ्या था भी सांच लागण लाग ज्यावै। इं थ्योरी रै मुजब को असर जद श्रीमतीजी माथै हुवण लाग्यो तो वी असर नै पुखता करण सारू, कणै मोजा बिना ही जूता पैर'र बारै भाग लेंवतो अर कणै कनै राख्योड़ी चाय नै किणी पोथी रा पाना फिरोळतो जाण-बूझ'कर पीवणी भूल ज्यां-वतो। धीरै-धीरै आ नुसखां रो ठावो अर चामत्कारिक असर हुवण लाग्यो अर श्रीमतीजी मनै सांचै प्रोफेसर भुलक्कडराम मानण लाग री है। इतो ही नी, अब तो बा आपरी भाइल्यां अर पाड़ोसणां रै बिच्चै भी गुमेज में भर'र म्हारै इं गुण रा नित नूंवा किस्सा सुणावण लागी है। इं रो ठोस फायदो ओ हुयोकै महिला-मण्डल री इं चरचा रै पाण हूं बारली दुनिया में भी होळै-होळै प्रोफेसर भुलक्कडराम रै नाव सू ओळखीजण लाग्यो हूं।

अै बिचारचोड़ी भूलां म्हारै रुतबै नै बरोबर बढावै ही है। लोकर री घरै भूल्योड़ी चाबी छोरां माथै अधूतो रोब गालिब करती पढावण सू भी मुक्ति दिरावै तो प्रिंसीपल री टेबिल माथै भूल्योड़ी स्कूटर री चाबी साय-किलयै प्रिंसीपल पर सम्पन्नता रो रोब झाडै। ईंयां ही स्टाफ रूम में भूल्योड़ो सम्पादक रो लेख री ताकीदआळो कागद बरोबरिया में ईसको

अर आदर दोनू समभाव सू जगावै तो सेठजी री दूकान माथै मूल्योड़ो पोथो सेठजी अर दूजा आवणियाँ-जावणियां गिरायकां माथै म्हारी विद्वता री अणूती छाप छोड़ै।

भायला ! मूलणै रै ई खास गुण रै अलावा भी प्रोफेसरां रा दूजा सगळा लखण भी म्हामे होळै-होळै वधता जाय रैया है। लारलै कई महीनां सू हूं भी म्हारै दूजा-दूजा पूग्योड़ा प्रोफेसरां री देखा-देखी किलास मिस करणो सुरू करदी है। जिको जित्तौ मोटो प्रोफेसर बो बित्तौ ही कम आप री रेगुलर किलासां मे जावै। ई रो सै सू मोटो फायदो तो ओ हो कै ईयां कैरयां कालेज मे तो कदै पाठयक्रम पूरो हुवै कोनी अर पाठयक्रम पूरो हुया बिना आधा छोरां नै तो म्हारै घरे चक्कर काटणो लाजमी हुज्यावै। अब तू तो समझदार है कै घर आया बापड़ा छोरा नै नाराज कियां करीजे। आं मे सू अेक-आध नै तो खुद री चामडी बचावण ताई मुफत मे पढ़ाणो ही पड़ै बाकी तो अब किलासां घरै ही लगावू। लारलै कई महीना मे घर मे जको टेलीविजन आयो है, स्कूटर आयो है, का फ्रिज आयो है—बै सै आ घरेलू किलासां री ही तो मैरबानी है।

म्हारो ओ आचरण तनै सायद की कम दाय आवै अर हुय सकै कै तू म्हारै माथै की आलतू-फालतू आक्षेप करै, पण म्हारै कनै थारी सगळी बात्या रो उथळो त्यार है। थारलै ज्यु पैला-पैला म्हारै दिमाग मे भी अै सै फितूर आवता हा, पण भाई तूं ही सोच इण मे गळत के ? जद डॉक्टर खुद री फीस खातर रोगियां नै अस्पताळ मे नी देख'र घरै बुलावै, कुरसी माथै बैठ्या हाकम न्याव-अन्याव रै सुवाल नै ताक मे राख'र चीणी री बोरयां अर घी रै टेणां रै हिसाब सूं मामला सलटावै अर बाकी-बाकी सगली दुनिया ही जद ई गैलै चालै तो हूं भी जे अेकलपै सू उथप'र ई ढाण चालण लागू तो वेजा के ?

नो भायला खास बात चाल रैयी ही किलास मिस करणै री, तो किलास सू ही सम्बन्धित अेक ओर बात चेतै आ रैयी है कै चोखो प्रोफेसर आपरी किलास मे क्दे पढ'र नी जावै। वो आपरा जुगा जूनां नोट्स री जै बोलतो थको पूरै रो पूरो सत्र गुजार देवै। तो भायला हूं भी अब आ बाण घाल रैयो हूं अर भगवान री दया सूं चोखी तरियां निभ रैयो हूं।

अठै भळै थारै मन में संका ऊपजैलो कै छोरां ई वासी अर वोदे ज्ञान रै खिलाफ रोळा नीं करै के ? भोळा ! संका थारी साव वाजिब है पण हाल तू कालेजां किलासां रो रहस नी जाणै। देख, म्हारै अठै जका इण्टैलीजैण्ट छोरा हुवै वै तो दो-अेक लेक्चर सूं ही उथप'र किलास में आवणो छोड़ देवै। अब रैया दादा किसम रा छोरा तो वां खातर इत्तो जाणलै के वांनै सो हाथबसू करणै री विद्या ही दूसरी हुवै अर ऊपरलै री दया सूं म्हारै मांयनै ई गुण री तो मोकळायत है। अब बाकी बच्या गवघू छोरा, तो वांरी कुण गिनार करै ? अर आं सें सूं भी मोटी बात है कै भलो हुवो बापडी युनिवर्सिटी रो जकी कै म्हानै हाजरी रै अलावा छोरां नै हाथबसू करणै रो दूजो अचूक हथियार आन्तरिक मूल्यांकन पद्धति रै रूप में झला दियो है। अब बोल छोरा जावै तो कठै जावै, वांरी घाण्टी तो म्हारै हाथां में है। जुग-जुग जीवो वै शिक्षाशास्त्री जका कै म्हारै हित में इतो मोटो काम करयो।

हां, तो भायला हूं तनै ई गुण रै धारण री बात बता रैयो हो, सो हूं भी आज ताईं कोई दसेक बार बिना पढ्यां ही किलास में जाय'र अजमा लियो है। अब वै पैलांआळासा मोका नी आवै जद कै लेक्चर त्यार नी हुवण री हालत में सी० अेल० री सोचणी पड़ै का कालेज पूग'र भी माथै दूखणै रो ओळाव काढणो पड़ै का किलास में जाय'र छोरां सूं माफी मागणी पड़ै। 'सॉरी, आज तो हूं लेक्चर त्यार कर'र नी ल्यायो हूं।' अे सगळा झन्झट खतम हुयां मनै कितो सुख मिल रैयो है ई बात नै तू सायद ही समझ सकै।

अब लै प्रोफेसर री अेक ओर घाण सूं तनै वाकिफ करावूं। असली प्रोफेसर आपरो घणकरो वगत ईनली-वीनली उठा-पटक में ही वितावै। वीं रै कालेज में तो पढण-पढावण रो सवाल ही कोनी—घरै पढणो भी वीनै कम ही सुवावै। जको जित्तो नामी प्रोफेसर वो बित्तो ही कम भणै-गुणै। पढणिया सगळियां रै बाबत बीरा विचार अे रैया करै'क बापडो हाल किलास में नी जम पा रैयो है ई वास्तै लाई पढण रो कळाप कर रैयो है। अठै तनै थोडोलो क इचरज मळै हुवैलो कै जद प्रोफेसर पढे-लिखै ही नी तो सेमीनारां में पत्र-वाचन, पत्र-पत्रिकावां में आर्टिकल अर साल सत्राई

पोथ्यां कठै सू त्यार करै ? भोळा ! आ ही तो जाणण जोग बात है। म्हांरो थोडो घणो काम तो ऐम० ओ० आळा छोरा कर ही देवै अर बाकी पांच-च्यार शोध छात्र क्यारै वास्तै पाळ'र राखा हा । काम बारो अर नाम म्हारो ।

प्रोफैसरां रो ओ गुण भी म्हनै घणो व्हालो लाग्यो—ईं खातर आज-कल हूं, भी सेमिनारां रा पेपर, मेगजीनां रा आर्टिकल अर पोथ्या री सामग्री जिस्या थोडा लूंठा काम तो शोध छात्रा कनै मू करावण लाग्यो हूं, पण ई बात मे म्हारी कांई खासियत रैयी ? की-न-की नूवां खटको भी तो हु वणी चाहिजै । तो भायला, ईं खातर हूं म्हारी समतावादी दीठ रै मुजब मोटोड़ा छोरा रै मार्गं-सागै छोटिया छोरां नै भी बारै डोळ सारू बराबर काम सूप रैयो हूं । आखिर बापडा बा छोरां नै भी तो गुरु-सेवा रो मौको मिलणो चाइजै ।

अब तनै जद बतावण ही ढूकग्यो तो ओतो-छानो क्यारो ? तनै तो ठा ही हैं'क मैंकन्ड्री री कापियां सूं लेय'र ऐम० ओ० तकात री कापियां जांचण रो काम मनै करणो पड़ग्यो है अर खाली एक ही प्रान्त री यूनिवर्सिटयां रो काम कर'र प्रांतवाद री ओछी बात नै वधावो देवणो नी चावू, ईं खातर न्यारा-न्यारा प्रान्त मे बण्योडी न्यारी-न्यारी यूनिवर्सिटयां री काप्या जांवण ताई मंगवाऊं । अेक मोटो सो'क अनुमान है कै साल भर में कोई पांच अेक हजार काप्यां जाचूं । अठै भळै तनै थोड़ो सो इचरज हुवैलो कै काप्या रो घणकरो काम गरमी री दो महीनां री छुट्या में हीं सलटाणो पड़ै, हूं अेकेलो जीव इत्तो सो काम किया पार घालूं । जे कापी नै दस मिन्ट ही लगावू तो 5 हजार काप्या खातर पचास हजार मिन्ट चाहिजै अर काप्यां री दूजी मगली औपचारिकतावां भी तो पूरो वगत लेवै । अठै भायला तनै भळै चेतै करावणो पड़सी कै हूं अेकेलो जीव नी हूं । हूं ठैरयो समतावादी मिनख । जद शोध छात्रा नै लेखादि लिखण रो काम भोळावू तो बापड़ा अे म० अे०, बी० अे० आळा नै काप्यां रो काम तो देवूं ही देवू ।

अठै अेक मिनट वास्तै सोचण री बात है कै जको काम आ छोरा नै आगै री जिनगानी मे करणो पडैलो जे वै ईं कांम नै अवार ही सीख लेवै

तो बता ई मे बांरो फायदो का म्हारो ? अठै तू भळै टोकाटाकी कर मकै कै कापी जान्चणिया सगळा ही छोरा कियां मास्टर-प्रोफेसर बणसी, थारी आ बात भी साची । भलां हीं आगे चाल'र वै सगळा ना बणो मास्टर-प्रोफेसर पण ई सूं बानै के घाटो पूगो ? उलटो वांनै तो आपरी जिनगानी मे अेकइस्यो तजुर्बो करण रो मोको लाधै जको तजुर्बो बै आगे री जिनगानी में की हवालै ही नीं कर सकता । अर मार्ग-मार्ग तू ई बात नै क्यूं भूल ज्यावै है कै कापी जाचण में किण रै ही भाग्य-विधाता बणणै रो जको अेक दुरलभ सुख हुवै बो भी तो बांनै ही मिलै ।

तो भायला ! हूं जद-जद खुद रै आं करतवा री बात सोचूं तो खुद नै जूनां आश्रमवासी ऋषियां सूं किणी भांत कम नीं पावूं । घर-गिरस्ती बांरै भी ही अर घर-गिरस्ती म्हारै भी है । शरीर सेवा सूं लेयर पोठा-मीगणां ताईं रो काम बै भी आपरा चेला-चाट्या सूं लेंवता अर हूं भी म्हारै समता।वादी नजरियै रै मुजब चेला अर चेल्यां दोनूं सूं म्हारी सुविधा साऊ अै काम निर्विकार भाव सूं लेवूं । बै आपरै चेलां रो मूल्यांकन बांरै आचरण अर काम नै निगै में राख'र करता अर हूं भी म्हारै चेला नै नम्बर काप्यां मे सिरुयोडा जड़ आखरां रै लारै नी देय'र बांरी चेतन गुरु-सेवा अर गुरु-भक्ति रै मुजब देवूं । गुरु-दिखणा बै भी लेंवता अर माकूल दिखणा पूग्यां बिनां हूं भी काम माड़ो ही करूं । अब तो तू मानैलो कै नी ? पण नी भायला ! ओज्यू म्हारी महानता नै प्रगासणिया खटका तो तनै बताया ही कोनी । वै गूढ अर मरम री बात्यां तो कणै ही कानो-कान ही करस्यां ।

इति शुभम् ।

थारो ही, धनू

लागा……दाग

ई लेख रो शीर्षक बांच नै आप सोच रैया हुवोला कै हूं कोई धर्म-भीरू आदमी हूं अर अबै सांवरियै रै घरै जावसै नै मनै डर लाग रैयो है, इण खातर हूं इयां गळगळो हुय रैयो हूं। तो इण बारै में म्हारो निवेदन ओ है कै म्हारी मनस्या थबार तो सांवरियै रै अठै जावण री जावक ही कोनी अर हूं आ भी जाणूं कै हूं इस्यो कोई अफलातून भी कोनी जिणनैं अचाणचकै ही सांवरियैं नैं बुलावण री दरकार पड़ ज्यावै अर जे इयां करतां ही आगलो आपतकालीन अध्यादेश लागू करसी तो अब दागल चुनरी लेज्यावण मे डर क्यांरो ? क्यूं कै म्हनै तो पको भरोसो है कै रुजगार री तलास में भटकता-भटकता कई भण्या-गुण्या बेकार भारतीय युवक अब ताईं तो बैकुण्ठ मे पूगनै कोई सहकारी ड्राईक्लिनिंग समिति जरूर ही खोलली हुवैला अर बी ड्राईक्लिनिंग रै चालता सांवरियो अब न तो दागल चुनरी खातर ओळमो देंवतो हुवैला अर न ही कबीर री भान्त कोरी-री-कोरी चादर लेज्यार भोळावणियै नै साबासी ही देंवतो हुवैला। इण खातर म्हारी चिन्ता रो कारण पारलौकिक तो पक्काई कोनी।

म्हारै ई स्पष्टीकरण रै बाद अबै आप सोचता हुवोला, कै म्हारो मतळब सायद किणी चरित्र रै दाग-वाग सूं है। तो जे आप इण दिसा मे सोचो हो तो भी आप गळती मार्थै हो। ई देस में भला अबै चरित्र री चिन्ता कीनै है ? आज तो अठै दो-दो रिपियां में चरित्र बिकै है। किणी ओथ-कमीश्नर नैं दो रिपिया अपडावो अर उत्तम चरित्र रो प्रमाण-पत्र ल्यो। जकै में इण मामले में म्हारी तो स्थिति ही दूसरी है। साहित मे पढण-पढावण रै म्हारै ई धन्धै मे जे कोई परेम-वरेम रै मामलै मे जमा ही कोरी रैय ज्यावै तो लोग और-और वैम करण लाग ज्यावै। इती ही नी एड़ी हालात मे कई शुभचिन्तक तो बिना बतळायां ही किणी कविराज तो किणी फार्मेसी का किणी'''स्पेशलिस्ट' रै पतै-ठिकाणै री सीध भळै

करण लाग ज्यावै । अबै आप ही सोचो ऐड़ी हालत में चरित्र-चरित्र नै साफ राख'र इस्यो उल्टो काम करूं ही क्यानैं ?

तो अबै आप सोचता हुवोला कै मामलो जद आध्यात्मिक अर नैतिक दोनूं ही कोनी जणै जरूर कोई गैरी बात हुवैला ? अर हूं आ भी जाणूं कै आपरी निजरा में गैरी बात रो मतळब कांई हुवै है। आप मन-ही-मन विचार रैया हुवोला कै हूं पक्कायत ही म्हारै साथै काम करणआळी किणी मिस री होठालाली का नेल-पालिस रा म्हारै सूट माथै अंकित ताजा दाग सूं विचलित हुय रैयो हूं । हां अबकाळै आप जरूर की-की साच रै नैड़ा पूग्या हो। बात पक्कांई सूट माथै दाग लावण री है; पण अै दाग आप सोचो जका नीं है। अै दाग है सै'र बिचाळै संचित निशालिस कादै रा। अबै भळै आप की गतमत में पजो कै म्हारै सूट माथै कादै रा दाग कींया लाग्या अर जे लाग ही ग्या तो हूं बांनै लेय'र इतौ हैरान क्यूं हुय रैयो हूं ? बी सूं पैलां ही हूं आपनै सारी बात सावळसर माण्ड'र सुणाऊं ।

हुयो इयां कै घण्टे भर पैला ही कालेज सूं घरै आवती वेळा म्हारै सूं पांच-सात पांवडा री छेती माथै मिनिस्टर-गाडी में जुत्या श्रीयुत् वैशाख-नन्दनजी नै न जाणै कुण कामण क्षालो देयनै बुलायो कै वै एकदम सड़क महिता नै तिलांजलि देयनै, म्हारै इण देस रा महान दळबदळूवां नै भी मात देंवता थका इण फुरती सूं दक्षिणपंथी सूं वामपथी बणग्या कै म्हारै आगै-आगै मध्यममार्गी बण्यो चालतो एक सायकिल-सुयार—म्हारो ही चेलो वांरी फेट में आयनै आण्टाचित आयो अर बो मायो धरती माता नै साष्टांग धोक देंतो-देंतो थोड़ा सा'क चरण-स्पर्श म्हारा भी कर लीन्या । ईं कळजुग मे भी ऐंड़ी देव दुर्लभ चरण-स्पर्शी गुरुभक्ति सूं म्हारो भी आसन डोल उठ्यो अर गुरुभक्ति रै ईं धक्कै सूं हूं मोटरसायकिल सूधो ही मीणां आळै कूवै सारै सचित कादै मे गंगा-स्नान करतो ही दीस्यो । ओ तो भलो हुवै वापड़ी नगरपालिका रो जको ऐन सड़क सारै इस्यै सातरै कादै री व्यवस्था कर राखी है। नी तो कुण जाणै कै ईं विचलन सूं म्हारा हाथ-पग टूटता का माथो ही रातो हुय ज्यांवतो। ऐड़ी सुलखणी नगरपालिका रा तो गुण गाऊं बिना ही थोड़ा । ईं रा गुण भूलै सो नुगरो ।

ई अणचिन्त्यै गंगा-स्नान रै बाद की हूं उठ्यो अर की आस-पास-आळा लोगां रळ'र म्हनै अर म्हारै फटफटियै नै उठायो । घणै चाव सू बणायोड़ो धोळो सूट काळै कादै रै छाबका सू मान्तरी मॉडर्न पेंण्टिग री छिब धारण करनै म्हारी सांवळी काया री सोभा बढावण लाग्यो । जनता जनार्दन रै हाथां हुयै म्हारै ई गज-उद्धार में मिण्ट-दो-मिण्ट लाग्या हुवैला कै इत्ती ताळ में तो आसै-पासै रै घरां में बैठ्या अर गैले बैवता कई जणा और आ ऊभ्या । म्हारै अेडै-छेडै एक छोटो सो'क मगरियो मंडग्यो । ई भीड में सू कण ही मिनिस्टर गाडीआळै नै दो-च्यार गाळ्यां ठोकी, तो कण ही सायकिल-सुवार रै मिस आज रै छोरा रै उछाछळेपण नै भूण्ड्यो तो कण ही नगरपालिका नै खरी-खोटी सुणा'र आपरै मन री भड़ास काढी । दो-एक स्याणा-समझदार म्हारै सूट री दुरगत माथै तो एकाध हितैषी म्हारै फटफटियै री दुरगत माथै अफसोस जाहिर करयो पण अफसोस कोई भलो आदमी म्हारी दुरगत माथै झूठा-साचा भी सान्त्वना रा दो सबद नी कैया । हुवो-हुवाओ होळै-होळै ओ मगरियो खिण्ड्यो अर हूं सही सलामत पूठो सडक माथै आ ऊभ्यो ।

ई हादसै रै बाद 'दाग छुडाऊ कैसे ?' म्हारी चिन्ता रो विषय नी हो, ई वेळा म्हारी चिन्ता रो विषय हो घर जाऊ कैसे ? बठै जठै कै म्हारी काया चन्दन-चर्चित हुई ही वठै सूं म्हारो घर पको आध कोस आन्तरै पडै हो । ई रास्तै में सैर रो सदर बजार बीच में पडै हो । ई गैलै नै पार करती बगत किता-किता परिचित लोगां नै इण्टरव्यू देणो पड़सी आ बात सोच-सोच नै ही म्हारी तो रू कांपै ही । मन में जाणै हो कै म्हारी ऐडी हालत देख'र हरेक मिलणियो होठां माथै मुळक अर ऊपर सूं सात्विक जिज्ञासा का हमदरदी ओढ्या पूछैलो—'साब कांई हुयो ?कोई एक्सीडेंण्ट हुयग्यो कांई ? कोई चोट-वोट तो नहीं लागी ? एक बात तो है सा, ई सवारी रो मजो हवा में उडती बगत सान्तरो ही आवै पण सागैमर कणै-कणै अणमांग्यो ओ सुवाद भी मिलै जको भी कम कोनी ।' अर, इसा, इसा सुवालां री मार अर सुरक्षा री बिन मांगी नसीहतां री बात सोच-सोच नै जी घबरावै हो, पण फेर सोच्यो कै जीवडा इयां डरयां के पार पडसी ? छेकड घरै तो पूगणो ही है, हां फटाफट पूग ज्यावू तो सावळ है अर इयां

जी नैं समझा'र बठै सूं भी'र हुयो।

बठै सूं कोई पांवड़ा तीस-पैंतीस एक चाल्यो हुंवूंला कै जवाई चौक रै मोड़ सूं पैला ही मुरट सूं साठो भरघोड़ो एक ऊट गाडो ऊभो लाध्यो। संकड़ी सड़क अर विस्तारवादी छकड़ो। वो तो सगळी राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मर्यादावां नै ताख मे राखनै पूरी सडक ही नी आजू-बाजू री भीतां तकात नै आपरै नकसै मे माण्ड राखी ही। बीनै भागेजोग सामै मोड़ माथै पांच-सात लकड़ीआळा गाडा भी ई गैलै मे आवण खातर रास्तो रोक्या ऊभा हा अर आरै बिचाळै पौराणिक का'णी री भान्त पूठो चाल'र रास्तो कुण देवै रो विवाद चाल रैयो हो। दोना कांनी रास्तो जाम हो अर लारै लगोलग भीड़ बधती जा रैयी ही। हर नूंवों आवणियो मिण्ट एक स्थिति रो जायजो लेवतो अर पछै पूरै जोस मे भरनै ई या बी पाळै कांनी सूं 'मुफत कानूनी सलाह' देवण लागतो। इया द्रौपदी रै चीर सी बधती आं दलीलां रो कठै अंत-पत नी दीसै हो ज्यूं-ज्यूं वाद बढ़ै हो म्हारी झाळ भी बढ़ै ही पण किसी सारै री बात ही। पांच-सात मिण्ट ताईं विवाद नी सुलझतो देख'र उपाळा चालणियां छोरां माय सू एक छोरो सडक माथै बैठ'र बैठ्यो-बैठ्यो ही गाडै सारै भुरट हेटकर निकळ'र बी पार जा लाग्यो, अबै तो बीरै देखादेख दूजा पैदल बैवणिया भी बीरो अनुकरण करघो अर बी अर ई पार जा अर आ पूग्या। इण भान्त थोड़ी भीड तो छटी पण ई सूं म्हारै के सा'रो पूगै हो? क्यूंकै हूं न तो उकड़ू बैठ'र निसर सकै हो अर न ही पूठो फिर'र दूजै गैलै ही घरै जा सकै हो। कारण म्हारै लारै दो-तीन गाडलिया अर एक ट्रक चीन री दीवार सा अभेद्य रक्षापक्ति बणाया ऊभा हा। ऐड़ी हालत में दोना पक्षां मे शान्ति समझौते री वाट उडीकण रै सिवा कोई चारो कोनी हो। बोळी देर माथा-पची रै बाद ओ तय हुयो कै सामलै मोड सूं आवता गाडलिया एकर आगली गळी मे ऊचा चढ ज्यावै जिण सूं म्हारै पसआळा लोग निरवाळ निकळ ज्यावै। ई समझौते रै कोई दस मिण्ट बाद आगै बधण रो लम्बर आयो। म्हारै तो अणूंती ही देरी हुयगी ही। अब तो फटाफट घर पूगण री मनस्या सूं एक्सलरेशन-वायर नैं थोड़ो और दाब्यो अर भारी भीड मे एकल ही पी-पीं पीपाटी बजातो आगै बधण लाग्यो। पण मनचीती कठै ह

पडी ही। थोडी दूर मार्थे किणी दूकान रो कायाकल्प हुय रैयो हो इण वास्तै आधी सडक तो ईंट, चूनै अर बजरी सूं रुघ्योडी पडी अर बाकी बच्योडी सडक मार्थै एक ट्रकआळो आ ऊभो हुयो, किणी मशीनी खरावी रै कारण नी वरन् विश्वव्यापी महान प्रेम री रक्षार्थ। हुयो यूं कै ज्यूं ही ओ ट्रकआळो ईं आधी सड़क में मद मथर गति सूं पार हुवण लाग्यो कै सामलै होटल री बैंच मार्थै बैठ्यै इण रै एक भायलै ईं नै देख लियो अर बो आपरै आजू-बाजू बैठ्या लोगां नै मैत्तीसवीं कौम में भी खुद रै प्रभाव नै जतावण खातर इस भायलै नै हाथ रो इसारो करने रोक लियो अर हाथ में झाल्योडै चाय रै कप रो त्याग करतै दोवां बीचै चाल रैयै अखण्ड हेत अर अटूट मैत्री रो परिचय दियो। अबै सुवाल एक कप चाय रो नीं हो, अर न ही सुवाल हो ट्रेफिक जाम हुवणै रो, ओ सुवाल हो निश्छल अर पवित्र प्रेम नै निभावण रो। अबै आप ही बताओ म्है दोना कांनी जाम हुयोडा लोग इण प्रसग में कांई बोल सकै हा। म्हारै कनै तो निर्विकार भाव सूं राम-सुग्रीव मैत्री सी ईं आदर्श मैत्री नै घटित होंवता देखण रै सिवा तो की उपाव हो कोनी।

ईं मैत्री-प्रसंग सूं निवड'र थोडा सो'क आगै बध्यो हो कै चोपडै सूं पैलां ही एक नायाव दृश्य म्हांरो रास्तो भळै रोक लियो। म्हारै सूं थोडी सी'क आगै दिल्ली सूं आयोडी एक बारात बनडै नै फेरा दिरावण खातर ले ज्यावै ही। नूंवी विवाह संहिता रै मुताबिक चोपडै में सड़क नृत्य सुरु हुयो। ईं सैर रो ओ एक अविस्मरणीय प्रसंग हो। छैल छबीला रसियां सागै जन्नत री हूरां सी सजी-धजी युवतियां रो उद्दाम नृत्य चाल रैयो हो। आखो बाजार इण देव दुर्लभ दृश्य नै देखण नै उमड पड्यो। इस्यै मोकै बापडै ट्रैफिक नै कुण पूछै हो? इण वगत हूं घणो असमंजस में हो, उत्तेजक नृत्य देखण री प्रबल इच्छा, दागी सूट नै लेय'र जलमी खिन्नता अर मास्टरी नैतिकता नै लेय'र आसै-पासै ऊभा स्टुडैण्ट्स रै बिचाळै निर्विकार बण्यै रैवण री दुविधा में उळझ्योडो खुद नै बडो दयनीय मैसूस कर रैयो हो, पण इण संकट सूं उबरणै रो कोई उपाय भी तो नीं हो। जे इस्यै मोकै टी-टी-पी-पी कर'र गैलो मांगण री बात करतो तो लोग का तो

ही अरसिक समझता अर का जमा ही कुण्ठित। अै दोनू विशेषण

म्हारै मार्गे जुड़ै आ बात मनै कतई पसन्द नी ही अबै भळै नृत्य समाप्ति रै इन्तजार रै सिवाय कोई रास्तो नी हो, इण खातर सू लटकाया खड़यो रैयो। छेकड पसीनां मूं हवाहोळ नृत्यलीन जोड़ा रा पाव थिर हुया जणै कठै जा'र बाजार मे गतिशीलता आई।

अठै सूं उवरता ही मोच्यो कै अबै तो दो मिट री बात और है, पण मिनख री मोच्योड़ी कद हुई? घर रै नैड़ोगी'क पूग्यो कै एक अणचिन्त्यो व्यवधान भळै आ पड़यो। बात आ हुई कै एक अधबूढो सो रगारो तो अर उणरी हसीन छोरी सड़क माथै एक साड़ी सुकावण में लाग रैया हा। मुतवायरो रगारो तो साड़ी रा दो पल्ला अपड़'र एक ठौड ऊभो हो अर उणरी 'आभै री बीज अर सावण री तीज' सी छोरी फुरती सू सड़क रै ईं पार सू बी पार ताईं आवै-जावै ही। वी री ईं आवा जावी रै कारण कणै तो गैलै बैवणियां खुद नै बचावै हा तो कणै बा छोरी ही फुरती सू आवणियां-जावणियां सूं बचै ही। इसै में दूर सूं आवतै एक सायकलियै छोरै रै मगज मे न जाणै काई फितूर उठयो कै बो छोरी रै नैड़ै आवतां-आवतां हसीना रै देह-स्पर्श रै लोभ सूं प्रेरित हुय'र एकाएक इसी कळा-बाजी खाई, कै सायकिल समेत सड़क माथै आ पड़यो। ईं बाजीगरी में छोरी तो आंदोलित आई ही आई, सूको छोरो भी को बच्योनीं। हसीना रै अंग-स्पर्श सूं वी रो दिल तो कितौक घायल हुयो पतो नी पण वी रा हाथ-पग खासा मुलड़ीजग्या हा, सूँवै लिलाड़ में गूमड़ो हुयग्यो हो अर डावोड़ी आंख माथै भी थोड़ी सी'क चोट आई ही, ऐडी हालत में भीड़ तो लागणी ही। बूढो बाप छोरै नै मूण्डै छूटी गाळयां ठोकै हो तो आहत आशिक री दुर्दसा सू द्रवित लोग सडक विचाळै कवायद करण खातर थूढै नै भी ओळमा देवै हा। आछो-खासो मसरियो मंडग्यो, पाछो ट्रैफिक जाम हो। आगै-लारै दोनां कानी तांगा, ट्रक अर गाडां री लैण बन्धगी। दोना कानी, पों-पों, टी-टी, पी-पी री होड सी लागगी, जणै कठै जा'र कई जणा बीच-बचाव करयो अर पाँच-सात मिण्ट मे सड़क आवण-जावणजोगी बणी।

ईं झमेलै सूं निसर'र आगै वध्यो अर सोच्यो कै अबै तो घरै पूगा ही पूगां। पण श्री अन्नाराम सुदामा सूं सबद उधार ल्यूं तो 'पूगणो किसो

म्हारै बाबैजी रै सारै हो ?' अबकाळै तो इसी यारी हुई कै मत पूछो बात। म्हारै घरआळै मोड मूं पैलां ही पांच-सात भदरीक पुरुष पड़या हा। बांरै पैराण मूं लागै हो कै चोखै घर-घराणै रा टाबर है, बांरा लेटेस्ट फैसन रा कपड़ा बतावै हा कै बै हाल-फिलहाल ही कळकतै का बम्बई जैड़ा महानगरां सूं आया है। अै पाचू-पातू भदरीक मिनख आधी-पूणी सड़क रोकनै न जाणै कुणसी गम्भीर चर्चा में उळझ्या हा। हूं सोचूं हूं कै का तो आज तास री बैठक कठै जमै री गम्भीर चर्चा ही थर का फळी-टीडसी रै गगनचुम्बी भावा रो दुःख अर बी रै सागै जुड़योड़ै शोषण री व्यथा ही, जकै सूं बै ट्रैफिक सूं साव अणजाण बण्या ऊभा हा। भाग-जोग री बात कै सड़क रै बाकी बच्यै भाग में आधो रस्तो तो मैनहोल रो खुल्यो-डो सुरसाई मुख रुध राख्यो हो अर लारै बच्योडै लीरै ऊपराकर जावतै सस्ता नीबू बेचणियै एक गाडैआळै पर उन्नत पगडीधारी एक सम्भ्रान्त सेठजी री पारखी निजर जा पडी। बाजार में जद कै नीबू 25 रिपिये किलो बिक रैया हा ओ भलो आदमी 5 रिपिये किलै में ही आपरो माल लुटा रैयो हो। आ बात दूजी है कै बी गाडै में का तो जमा ही सूका नीबू हा अर का गळया-सडया दागल नीबू। इण सूं काई हुवै ? आखर हा तो नीबू ही। सेठजी तो रस्तै रै सकडैलै-सूकडैलै सो की नै भूल'र बठै गाडै-आळै नै रोक'र बी री ढेरी में सूं फिरोळ-फिरोळ'र एक-एक नीबू दूढण लाग्या। अबै आवागमन रुकै तो रुको भला ही। सैं सूं पैलां हूं ही इं नाके-बन्दी कनै पूग्यो। पांच-सात पावडा अळघै सूं ही हूं हार्न बजावण लाग्यो पण ममाधिस्थ सेठजी माथै तो बी रो असर हुवण रो सुवाल ही के हो, हां भदरीक नौजवानां री मण्डली माय सूं दो एक जणा निजरां उठा'र देख्यो अर सामैं एक 'मास्टर' नै पूपाटी बजांता देख'र बै उपेक्षा भाव सूं पूठा वात्यां में मशगूल हुयग्या। सायद आ सोचनै कै ओ तो बापडो मास्टर है इणरी के गिनरत करणी, थोडी ताळ में सडक खाली हुयां मतै ही सार-कर निकळ ज्यासी। इं क्रम में हूं वारै एकदम कनै पूगग्यो पण बै माई रा लाल तो अवकाळै निजर ही ऊंची को करी नी। हूं मन ही मन मलातो बानै की कैवण-सुणण री सोचै हो कै म्हारै लार रो लार एक तांगो आ ऊभ्यो। तांगै रो चालक भीगती मसां रो कोई जुवान सो छोरो हो।

बण एकर दो वार तो नरमाई सू हेला मारया—'भाईजी छेड़ै हुया—भाईजी छेड़ै हुया।' पण ई नरमाई रो की असर असर नी हुवतो देख'र बो भी तेजी खायने, 'ओ किराड....' जिमो कोई चुभतो वाक्यांश कैयो कै न कैयो जाणै टांटियै रै छातै नै ही छेड़ लियो हुवै। वै पांचू-सातू ही बी माथै एकै साथै ही चढ बैठ्या, 'साळा, हरामी तनै बोलण री तमीज कोनी।' पण बो भायो भी कम कोनी हो, बण तो आ बात सुणतां ही आव देख्यो न ताव फटाफट दो च्यार चाबुक बां माथै फटकार नाख्या। अबै तो के कैणो? ई मू इसी उत्तेजना व्यापी कै मत पूछो बात। आछा-खासा लोग भेळा हुयग्या। उत्तेजित श्रेष्ठी-पुत्र धार्णै-कनेड़ी मू कम कोनी बोलै हा, तो बी नै भी की जणां, जावो-जावो की हुवै ज्यूं कर लिया री चुनौती भरी वाणी मू वातावरण नै उत्तेजित कर रैया हा। तर-तर लोगां री भीड़ बधै ही अर वातावरण री गरमी भी। दोनां कांनी रा पक्षधर भेळा हुय रैया हा अर घटना रै चश्मदीद गवाह रै रूप में म्हारो नाम दोना कांनी उछाळीजण लागग्यो। तांगैवाळो वार-वार 'बाबूजी' नैपूछण री बात कैवो हो तो श्रेष्ठी-पुत्र भी एकदम मास्टरजी सू प्रोफेसर साहब सम्बोधन पर उतर आया हा। लागै हो मामलो पुलिस ताई जासी अर मनै धिंगाणै ही गवाह रै रूप मे घसीटीजणो पड़सी। आ बात दिमाग मे आवता ही भारतीय पुलिस री सदाशयता अर विनम्रता रा अलेखू पढ्या-सुण्या किस्सा आंख्यां सामै आवण लागग्या। बांरी बाबत सोच-सोच'र ही हूं तो,एकदम विलबगनो सो हुयग्यो। हूं लोगां नै की कैवू बी सू पैलां ही म्हारै एक शैतान चेलो म्हारी दुरदसा नै लखग्यो। कण ही साची कैई है कै अऊत बेटो अर खोटो पिसो भी वखत-कवखत तो आडा आवै ही है। बो भीड़ नै छेड़ै करतो सीधो म्हारै कनै पूग्यो अर म्हारै कनै सू मोटर-सायकिल अपड'र म्हनै होळै सी'क कैयो, गुरुजी थे क्यांनै ई उळझाड में फंसो। होळै सी'क घर जावो परा हूं लारै सू मतै ही ओ फटफटियो पूगा देस्यूं। किलास मे आपरी हरकतां रै कारण सदा ही अणखावणो लागणियो ओ चेलो ई वखत तो घणो प्यारो लागै हो।

ई स्याणै चेले री बात मान'र अवार-अवार ही घरै पूग्यो हूं। आवतां ही मळै मूटआळी बात माथै मे घुळघुळावण लागरी है।

चिन्ता पूठी मुसर हुयगी है। काल ही तो मन्नै गर्ल्स-कालेज रै एक फंक्शन मे मुख्यवक्ता रै रूप में जाणो है अर आज ही म्हारै एकमेव सूट री आ दुर्दशा हुय रैयी है। जे ईं नै घरै धोवू तो पूठो म्हारै डोळ जोगो रैवै इण री गारन्टी कोनी अर जे स्थानीय ड्राई क्लिनिंग मे दयू तो दाग जावण री तो गारन्टी है पण सागै-सागै धवूरा नीं पडै इणरी गारन्टी नी है। टाडी दुविधा में पड्यो हू, जे आपनै कोई-कोई उपाय सूझै तो मनै जरुर-जरुर बताइज्यो, आपरो गुण मानूला भलो'क।

मोड़ो हुय जावैलो

एक बगत हो, बेईमानी अर बाणिया पर्यायवाची बण्योड़ा हा। दूजाँ री तो मनै ठा कोनी पण म्हे मारवाड़ी बाणियाँ तो बेईमानी खातर दूर दिसावराँ में इत्ता बदनाम हुयग्या हा कै महाराष्ट्र कांनी तो कीनें ही 'मारवाड़ी' कह्'र बतळाणो ही बीनैं गाळी काडणैं रो बरोबर हुंवतो। इत्तो ही नी वठै तो 'मारवाड़ी' सबद रो अरथ ही सबदकोसां में 'मक्खीचूस' अर 'बेईमान' लिखीजण लागग्यो। लारलै दिना में जदकै म्हामैं की जागरूकता आई, जणै ईं बात नै लेय'र म्हां लोगां कांनी सूं उजर-आपत्ति करीजी अर बात ठेठ राजस्थान रै मुख्यमन्त्री तांई पूगाईजी। बांनै बताइज्यो कै 'मारवाड़ी' सबद रो इत्तो भूण्डो अरथ करनैं खाली म्हां बाणियां नै ही बदनाम नी करीजै पण आपां सगळा राजस्थानी ही गैर राजस्थान्यां वास्तै 'मारवाड़ी' हां, अर ईयां आ आखै राजस्थान री बदनामी है। ईं रोळैरप्पै रो इत्तो सो'क असर हुयो कै म्हांरा मुख्यमन्त्री वठै रै मुख्यमंत्री सूं बात करनैं सबदकोसां सूं इसो भूण्डो अरथ हटावण री चेष्टा करणैं रो आसवासन दियो अर बात ठण्डी-मोळी पड़गी।

'मारवाड़ी' सबद नै लेय'र चाल्योड़ो ओ रोळो ओरां री भांत थोड़ो घो'त तो मन्नैं भी विचलित करयो। ईं रोळै मायं विचार करती बगत पैलो सुवाल म्हांरै भेजै में ओई उपज्यो कै आखर 'मारवाड़ी' सबद बा हलकां में इत्तो बदनाम क्यूं हुयो ? जरूर की-न-की लूठो कारण ईं रे लारै हुवैलो। आ बात तो किया मानल्यांकै कोई अकारण ही किणी सूं घिरणा करण लाग ज्यावै। ईं बात मायं गोर करयां ओमाफ लखावण लाग्यो कै 'मारवाड़ी' आप री लोभीवृत्ति अर कंजूसी री भूण्डी बाण रै कारण ही इत्ता बदनाम हुया हा। म्हारी ईं धारणा नै पुख्ता करण खातर हूं म्हारा समाज रा बूढ़ा-बडेरां सूं चालती ही पूछ बैठ्यो कै अठै सूं धोती-लोटो लेय'र जावणिया थां जिसा लोग किसै जादू सूं देखता देखतां लखपति, किरोड़पति

बण ज्यांवता। ई बात रै पडूतर में जकी बात्यां सुणनै मिलती वां में कई-कई बात्यां अणूंती ही चिमकावण जोग ही। वां में सूं एक जणो मनैं बतायो कै, "आगै बगालै कानी लोग भोळा हुंवता,खास करनै 'चासियां' जिसा लोग तो भाव ही पंछो हुंवता।" आपरी बात री पुष्टि खातर बैं केवण लाग्या कै "म्हारा दादोसा कैंवता कै म्है चासिया नैं कपड़ो देंवता जणै अडकूणी तांई रै हाथ नैं तो एक गज बतांवता अर कपड़ै नैं एक पासी नाप्या पछै बी नैं ही पाछो दूजै पासो भळै नापता अर इंयां आधै गज कपड़ै नै दोय गज कैंय'र बी कनै सूं दोय गज कपड़ै रा दाम लेंवता।" अब देखो ई बेईमानी रो काई-चांको ? भाव तो मनमान्या हा ही ऊपर सूं आ 'ईमानदारी' पांच रा पचीम बणांवती कांई ताळ लगांवती। 'मारवाड़्यां' री बेईमानी रो ओ अेकलो उदाहरण कोनी इसा-इसा पचामू उदाहरण लाध ज्यासी। ल्यो लगतै हाथां दोच्यार सूं आपनै ही सैंधा करवा दयूं। एक दूजो कारोबारी म्हनै बतायो कै, "म्हारा माल लेवण अर देवण रा बाट ही न्यारा-न्यारा हुवता, जणै केवता-ल्यारै बेटा लेवणियो बाट, अर माल देवणो हुतो जणै कैवता ल्या रै बेटा देवणियो बाट। अब थे तो जाणो ही हो'कै बै बापडा किसी मारवाडी जाणता। म्हारी बात सूं बां रै की पल्लै नी पडतो अर म्है लेवण देवण रै बाटां में ही चोखो मलो-फरक राख'र मामलै री टाट जचा'र मूंडता।" एक तीजो पाट रो ब्योपारी म्हनै बतायो कै, "म्हे पाट लेवण ज्यावता जणै आगलै कनै सूं मण रो सवा-मण पाट तो साहूकारो बोल'र लेंवता अर इतै सूं किसा धापता ? आगै गावां में दगडां रा बाट हुंवता। म्है जाण बूझ'र बाट सूं बोळो बेसी माल पालणै में घाल'र सामलै नै कैंवता देख बाट तो अब कोनी, पण म्हारो ओ एक पग तोल्योड़ो है भलो'क पांच सेर रो। इतो कैंय'र दब देणी बाटआळै पालणै में पग मेल देंवता। अब आप तो स्याणा हो ओ एक पग ही जोर दियां कांई ठा कित्ता पसेरी हुंवतो ?अब आप ही विचारो भला इसी-इसी बेईमानी रो कांई छेडो हो अर ई बेईमानी रै पाण साल-छह महीनां में लखपति बणिया मारवाडी धीरे-धीरे परदेस्यां रै घिचै घिरणा रा पात्र बणता गया तो ई में बेजा कांई हो ? पीढ्यां दर-पीढ्यां म्हां मारवाड़्यां रै शोषण रा शिकार बणता। अै लोग खुद री धरती मायै

ही दया घोळै दोपारै लूटीजता, चूसीजता जे मारवाड़्या खातर आपरै मन में स्थायी घिरणा रे भाव नें धार लियो तो इण मे अचंभो कांई ?

अब लूटण-खसोटण री बात चाल ही गी जणै म्हारै सूं तो रैयोजै कोनी। विणज-व्योपार में भांत-भांत सूं ठगणिया म्हे मारवाड़ी ब्याज-बिगवै में भळै लारै थयू रैवे हा। ममी-समी रा मारघोड़ा बापड़ा गरीब-गुरबा बगत-बे-बगत म्हारै फेट मे तो आंवता ही आंवता अर इंयां चाल'र अब में आयोड़ै रो पीच'र पाणी काढण में म्हारै बड़कां सू बैसी वीर कुण हा ? आगलै रो गैणो-गांठो ही नही बरतण-भांडा ताईं आधा-चौथाई दामां मे अडाणै राख'र च्यार, पांच अर दस रिपिया सैंकड़ै (120%) रो ब्याज लेय'र आगलै नैं तो इमो आडो नासता कै वो तो कांई वी री वई पीढयां ताईं सूधी को हुंवती नी ! अब जका ईं ढंग सू पईसो संचण में लाग रैया हा वांरी बधती माया रो कांई लेखो ? अठै आपां राजस्थान रै माय छोटै-छोटै गांवड़ियां तकात में पाच-पाच अर सात-सात मंजली टणकी हेल्या, ढोड-ढोड बण्योडी लूटी धरमसाळावां, फूटरा ओपता कुध-कारी नाळे जैडा मिन्दर अर लूठा जो'ड़ा आद देख रैया हां। साची पूछो जणै तो अै सै जूनी इमारतां म्हां मारवाड़्या रै धरम-पुन री वृत्ति रो नही बरन् म्हारी मिनख्याचारै सू भिस्ट भाव होणी अर ओछी प्रकृति रो बखाण करै।

सोचू'क आखै मुलक में बरगद री जड़ां सा पसरयोड़ा म्हे मुट्ठी भर मारवाड़ी करोड़ां-करोड़ा मिनखां रै जीवण नै नारकीय बणा दियो हो। जद कै थोड़ा सा'क हीण अर ओछी प्रकृति रा लोगां रै कारण ही देस अर समाज री भारी दुरगत ही, जणै अब जद कै आखो देस ही सुवारथ अर बेईमानी रै ईं गैलै चाल पट्यो है, ऐड़ी हालत में ईं देस रो अर ईं समाज रो कांई हुवेला ? आज तो आपां देख रैया हां, कै आखै समाज रो ही एक ध्येय हुयग्यो—पईसो, पईसो, पईसो ! पईसो भेळो करण री अर आगै बधण री एक इसी आंधी होड आपां लोगां मे चाल पडी, कै ईं रै फेट मे आयोड़ा आपां, सही-गळत, झूठ-साच अर नैतिक-अनैतिक सो की भूल बैठ्या हां। सगळां रै दिमाग मे बस एक ही बात आठूं पोर चोसठ घड़ी बसै'क ज्यादा सू ज्यादा आगै किंयां बधां। घणै-सू-घणो पइसो किंयां भेळो करां ? आज

तो आ तै समाज में पद अर पइसो ही माई-बाप हुय रैया है। पद सूं पइसो अर पइसै सूं पद रो ओ एक इसो चकरयाण चाल्यो है कै इं में उळझ्या बाद ओर छोर की को दिखै नी। अं कनै हुवै वो समाज में सो छून माफ है। आज तो आपां रै खातर पइसो ही सै सूं मोटो जीवन मूल्य बण रैयो है। साच, करुणा, दया, भाईचारो अर परेम जिस्या मिनखाचारै रा सासता मोल मोळा पड़ता जारैया है। लागै है कै लोगां रो विस्वास आ सूं उठतो जारैयो है। यू तो आज भी आपां आपसरी में बतळ करतां औरी जरुत नै हुंकारा अर आरै महतव नै बखाणा पण निजू जीवण में आनै धार'र चालण नै आपां में सूं कितांक जणा त्यार हा? आ किती मजेदार बात है कै आपां मैं सूं हरेक सामलै कनै सूं तो नैतिकता री अपेक्षा राखां, वी सूं ईमानदार वणणै री चावना करां पण खुदआळो वगत आं सगळी बात्यां नैं सफा ही बिसर ज्यावां। आपां सगळा री एड़ी मनगत रै कारण ही तो आज देस में आपाधापी अर बेइमानी दिनोदिन बधती जा रैयी है। आज तो साधारण कार-मजूरी करणियै सूं लेय'र ऊंचै-सू-ऊंचै ओदै मायै बैठ्यो मिनख भी आपरी बस पडती बेईमानी करणै सूं कोनी चूकै। साची पूछो तो आज साधारण कुली-मजूर सूं लेय'र मोटै-सूं-मोटै ओदेदारी में बाणियो जागग्यो है। जणै-जणै में जाग्योड़ो ओ बाणियो आखे देस नै फोड़ा घालै। आपां में बधती बाणियैआळी आ हिसाबू समझ ही आपां रै नैतिक पतन रो मोटो कारण बणतो जा रैयी है। इं रै फेट में आयोड़ा आपां खुद रै छोटै सूं छोटै सुवारथ रै खातर भी देस अर समाज रो मोटै मूं मोटो नुकसाण करता नी सका। साची पूछो जणां तो देस अर समाज री चिन्ता आज है किनै? देस रा मोटा सूं मोटा नेता ही आज जद आपरी लाज-सरम अर समझ सो की अडाणै राख'र कुडसी रै लारै पागल हुय'र राजनीत रै चोरावै मायै ऊभ नै फिटाई रो नागो नाच-नाच रैया है, तद साधारण मिनख सूं साच, नैतिकता अर ईमानदारी री अपेक्षा करणी ही फालतू है। साची बात तो आ है कै आज आपणो आखो समाज ही साच अर ईमानदारी रै सूधै गैलै नै छोड'र बेईमानी अर हरामखोरी कै ऊंधै रस्तै चाल पड्यो है। बेईमानी अर भिस्टाचार री जडां समाज में कित्ती ऊण्डी पैठगी है आज आ बात किनै ही बतावण री दरकार कोनी। आपां सगळा ही इण बात नै चोखी तरियां

समझां-बूझां पण अफसोस इण बात रो है कै इण बात सू वाकिफ हुंवतां थकां भी अर वाकिफ हो नी घणी बार तो आंरी मार सूं दुःखी हुयोडा— आपां नै कोई सूंवो गैलो नी लाध रैयो है। आखर गैलो लाधै भी कठै सू ? आज आपां रै बिचै सही गैलो बतावणियो अर आपानै सही गैलै ल्यावणियो भी कोई नीं रैयो है। एक वगत हो जद कै घर-परिवार सत-संस्कारां सू टाबरां नै साच अर ईमानदारी रै गैलै री ओळखाण करांवता, लोक-साहित्य साधारण मिनखां रै बिचै अर पारम्परिक शिक्षा-दीक्षा पण्डित लोगा रै बिचै इं राह खातर मन मे आस्था जगादेती अर साधु-सत धरम रै मरम नैं समझांवता वी रै सारै सूं इं गैलै माथै चालनै लोगां सामै एक आदर्श राखता। पण अफसोस ! आज तो आपांरै समाज मे आ तीनू ही बात्यां रा दरसण दुरलभ हुय रैया है।

अैड़ी हालत मे देस अर समाज री कांई गत हुवैली, इं रो अंदाज करणो कोई मुस्कल बात कोनी। जद-कद भी जठै-कठै भी जिण-किण भी देस अर समाज में अैडा हालात पैदा हुवै उण स्थिति में दो ही बात्यां हुया करै। एक तो इस्यै विश्रृंखल अर जर्जर समाज नै कोई भी सबळो अर सैंठो पाड़ौसी हड़पण नै लफै; पण आज रा अन्तर्राष्ट्रीय हालात अैड़ा है कै जल्दी सै इतै मोटे राष्ट्र माथै धावो बोलनै कब्जो नी करयो जा सकै, उणनै सीधम-सीधों आपरो उपनिवेश नी बणायो जा सकै तद अैड़ी हालात मे बै ताकता राष्ट्र विरोधी तत्त्वां नैं उकसावो देयनै उण राष्ट्र नै खण्ड-विखण्ड करणै री जुगाड़ बिठावै का बा ही लोगां रै बिचै सू कोई अैडो मोहरो ढूढै जकै नै बतौर तानाशाह उण राष्ट्र री गादी माथै बैठायनै उण रै मार्फत आपरै सुवारथा री सिद्धि करै। आ कोई नूवी अर अनोखी बात नी है। आज जद 'आपां रै खुद रै आजू-बाजू दीठ पसारां तो आपां नै अैड़ा राष्ट्रा री एक पूरी री पूरी जमात निजर आवै जठै काल ताई पिर-जातन्त्र हो, पण आज बठै अैड़ा कठपूतळा तानाशाह बैठ्या पराये इसारां माथै नाचता, आपरै ही भाई-बीरां नैं लूटै-खसोटै अर आपरै ही देस-वासिया माथै आतंक रो निर्मम चक्र चलावै। सोचूं कै आपां माय सू कोई भी भारी सघर्ष अर मोटै बलिदानां सू हासिल आजादी रो ओ हश्र तो चावैलो। मानल्यां कै आपां रै मुलक नें अैडी स्थिति मांय सू नीं गुजरणो

पढ़ैलो तो इस्यैं मोकै एक दूजी ही बात उभरनैं सामनैं आवै। वा आ कै आं बिगड़ता हालातां सू गरम खूनआळा जोशीला जुबान क्षुब्ध हुयनैं रक्तिम क्रान्ति री बात सोचण लागै अर हालाता सू दुःखी आम आदमी भी वांरो जुलम-जुला साथ नी भी देवै तो वांरो विरोध तो नी ही करै, तद अैड़ै सोच सूं परिचालित नवयुवक भूमिगत आन्दोलनां रै मरणै ढूकै। आपां रै देस में ही जलम्यो नक्सलवादी आन्दोलन अैड़ी ही मनगत री उपज कैयो जा सकै है। कनु सान्याल अर नागभूषण पटनायक जैड़ा क्रांतिकारी ई सोचनै सांच मान नै पूरी *निष्ठा अर लगन* सूं अैड़ा *आन्दोलनां* रा सूत्रधार बण्या। अठै ओ विवाद रो ममलो हुय सकै कै समाज अर देस नै बदळणै रो आंरो ओ नजरियो कठै तांई वाजिब है। खासकरनै गांधी जैड़ै अहिंसावादी नेता रै देश मे रक्तिम क्रान्ति री बात कठै ताईं समीचीन समझी जावैली। आ बात, आं रो ओ सोच सही मान्यो जावै या नी, ओ चिन्तन रो अलग मसलो हुय सकै, पण इतरी बात तो साफ ही है कै इण या किणी दूसरै भूमिगत आंदोलन सू जे रक्तिम क्रान्ति री बात उठै तो उण सू ठाडै खून-खराबै री स्थिति बणैली। हुय सकै कै अैड़ी रगतारंगी क्रान्ति पूठी किसी ही प्रतिक्रान्ति नै जलम देवै। वैड़ी हालत मे हिंसा अर प्रतिशोध रो खौफनाक सिलसिलो सुरू हुय सकै अर हिंसा अर प्रतिहिंसा रै रोळै में क्रान्ति मूल उद्देश्य सू ही भटकनै अैड़ै उजाड़ में उळझ सकै जठै कै पूरै-रै-पूरै राष्ट्र नै कल्पनातीत कष्टां मांयं सू गुजरणो पड़ै। कम्पूचिया रो उदाहरण सामै है, ईरान भी अैड़ी हालाता कांनी बधतो जा रैयो है। भगवान नी करै आपा रै अठै भी अैड़ी कोई बात वणै। इसी किणी अप्रिय बात नै टाळण खातर मौजूदा प्रजातान्त्रिक व्यवस्था नै पुखता करण री दरकार है। प्रजातांत्रिक मूल्यां खातर गैरी निष्ठा जगावण री दरकार है। पण औ सै बातां यू ही सिद्ध नी हुय जावैली। इण रै खातर जगणै री जरूरत है, सचेष्ट हुवण री जरूरत है, मोकै माथै त्याग अर बलिदान खातर त्यार रैवण री जरूरत है, नी जणा भाईड़ा हालात विषम-सू-विषम हुंवता जावैला। उण बगत राष्ट्र नैं संभाळणो घणो अबखो हुय जावैला। इण वास्तै अब भी जागो, अब

न्नी चेतो, भाई तेज जी रै सबदां में कैवूं तो—
चेतो,
चेतो कै थारी
नास्यां सारै फण साध्यां बैठ्यो है
पीणो सांप
पीवै
भामा, भरोसो अर सांस
पाछटी
जद ओ पूछ फटकारो देय नै जावैलो
तद थानै आजादी रो अरथ समझ मे आवैलो
अफसोस ! मोडो हुं जावेलो ।

बीजळी-पुराण

होळी रा दिन हा। झाझरकै रा च्यार-साढ़ी-च्यार वज्या हुयसी कै गाव रै टाडै विचाळै ढोल रै उनमान एक बोदो पीपलियो गडगड़ाइज्यौ। ई पीपलियै रो भूण्डो सुर थम्यो कै न थम्यो कै एक मिनख रा भारी बोल हवा मे तिरण लाग्या,—'सुणो ! सुणो ! भायड़ां ! आयगी, आयगी, गाव में बीजळी आयगी है। टाडै मे तो तार खीच'र लोटिया भी लगा दिया है, अबै तो जकै भाई नै घर खातर बीजळी री दरकार हुवै वो तुरता-फुरत दरखास देवै अर हाथू-हाथ बीजळी लेवै। आ ओळ-पचोळी वाणी सुण'र म्हारी ही नी आखै ऊंघतै गाव री नीद बिडरगी। काची नीद सू जाग्योडा लोगां नै ओ ओपरो रोळो सुण'र घणी झूंझळ आई तो की अचम्भो भी हुयो। म्हारो मन भी एकर तो थोडो असमंजस मे पडग्यौ। पछै सोच्यो, होळी रो बगत है, गांव में आं दिनां में दारू रो चा'ळो की बेसी ही बध्योडो है। कोई नशेडी पड़्यो रोळा करतो हुवैलो अर आ सोच'-र पाछो ही गूदडां मे वड़ग्यौ। पण नीद तो नी आई। पड्यौ इनै सू बिनै पसवाड़ा फोरतो रैयो। छेकड़ उथप'र मांचलियो छोड'र खडो हुयग्यौ। निमटा-निमटी कर'र हाथ मूण्डो धोय'र चावडी रो गुटको लेय'र टाडै विचाळै आय पुग्यौ। टाडै में पूगतां ही अणजाणै ही मूण्डै माथै मुळक आयगी अर झाझरकै आळै रोळै रो खराखरी अरथ समझ मे आयग्यौ।

टाडो जठै कै गाव रो बजार भी है बीरै बिचाळै एक सान्तरो ही कौतक देखण नै मिल्यौ। टाडै विचाळै कोई सौ-सवासौ मीटर री छेती माथै दो खेजडा खडया हा अर बारै ही विचाळै थोडै पसवाडै एक पुस्तकालय भवन बण्योडो है। आं दोनू खेजडा अर पुस्तकालय रै बिचै एक बोदी मूजेवड़ी बन्धेड़ी ही अर बो मूजेवड़ी सू ठौड़-ठौड बंध्योडा कोई सौ-डोढ सौ खल्ला-खूसडा टीरै हा। एक खेजड़ै माथै एक बोदो पीपलियो जुगत सू वन्ध्योडो हो तो दूजै खेजड़ै माथै कोई एक टेण री बकसड़ी बन्ध्योड़ी ही। ठौड-ठौड़

लटवयोड़ा खल्ला-खूसड़ा नोटियां री जग्यां सोभा देवै हा अर बोदो पीप-लियो अर बकसड़ी ट्रांसफोर्मर री ठौड़ ओपै हा।

टाडे में म्हारी ही तरियां जको भी आयो बो ईं निरालै सांग नैं देख'र एकर तो हंस्यो अर पछै ईं कुचमाद नैं लेय'र चालती भात-भांत री चर-चावां में भेळो हुयग्यो। कोई दसएक बज्यां ताईं ओ ही क्रम चालतो रैयो। घणखरा लोग तो ईं बात नै मजाक रै रूप में ही लो पण कई डौड़-स्याणां नैं आ बात नीं सुवाई। वै कैवण लाग्या कै आखै गांव नै खल्या हेटकर काढण री आ कुबुध कीं री? बात तो साची ही, दो-च्यार उदमादी मिल'र आखै गांव नै खल्लां हेटकर काढ दियो। खल्लां-खूसड़ा री आ अनोखी बानरवाळ देख नै म्हारै मन में भी मोकळा विचार आया-गया। मैं मू पैल्यां तो ओ ही विचार मन में जाग्यो कै ईं सांग रचणियै रै मन में कांई बात ही? कै वै म्हां गावआळां रो माजनो अर डोळियै ईं जोगो ही समझ्यो? का बै आ अनोखी बानरवाळ गांवआळा री तरफ सू नेतावां खातर सजाई ही? का ओ कोरो होळी रो मजाक ही हो? नी ओ कोरो मजाक तो नी हो। मनै लागै कै ओ मजाक समूळै गाव रै दुःख दरद अर बीरी उत्कट अभिलाषा नैं कारगर ढंग सू पेस करण रो ही एक न्यारो निरवाळो तरीको हो। साची पूछो जणा तो ईं सांग रै लारै एक तीखो मजाक हो अर हो एक मीठो-मीठो दरद। आप बी दरद सूं बीरै तीखैपण सू तद ताईं वाकिफ नी हुय सकोला जद तांईं कै आप म्हारै गांव री पूरी हाल हकीकत नीं जाण ल्यो।

ईं नौळ-पचोळी भूमिका रै बाद जरूर आपरै मन में म्हारै गांव री हाल हकीकत जाणणे री इच्छया जागी हुवैला? जे आप साच्याणी की जाणणो चावो तो कीं ध्यावस राखो। ईं घटना रो पैलो सूत्र आजादी हासल हुंवण सू जुड़योड़ो है।

बामण-बाणिया रै बसेपैआळो म्हारो ओ गांव सरू सू ही आसै-पासै-आळै गावा री तुलना में की जागरूक गांव रैयो है। गंगासाही राज में भी जकै गांव रा निवासी स्कूल, लाइब्रेरी अर नाट्यशाला जैडी प्रगतिशीलता री संवाहक संस्थावां सू जुड़योड़ा हा, जे बी गांव रा विकास अर प्रगति रा सपना आजादी रै सागै हवा सूं होड लेवण लागग्या तो इचरज क्यांरो?

आजादी हासल हुवण रै सागै-सागै ही म्हारो ओ गांव मोकळा-मोकळा सपना संजोया हा। आं सपना में कठै तो मीठा पाणी री दग-दग वैंवती टूटयां हीं, तो कठै टाबरियां री भणाई रो मोटो मदरसो हो, तो कठै बेमारां-सेमारां रै ईलाज रो सान्तरो सफाखानो हो, तो कठै सैर आवण-जावण खातर डामर री पक्की सड़क ही अर आ सू भी वेसी हो कठै बीजळी रै लोटियां रै पळपळातै च्यानणै में गुदिर्यै मैं गांव नै निरखण रो कोड।

आजादी पछै देसी रियासतां रै एकीकरण रो काम पोळाइज्यो अर ईं कम में जूनो राजपूतानो राजस्थान बणग्यो। राजावां री राज खतम हुयो अर पैले आम चुनाव रै सागै ही प्रजातन्त्र रो मोवणो वायरो लोगां रै दाझ्योड़ा काळजा नैं शीतळ करणा सरू करया। चुनाव नैं लेय'र मोटा-मोटा नेतावां रा दौरा सरू हुया। अैं नेता लोग जन चेतना री धरती जलम्यां विकास अर बढोतरी रै सपना रै बिरवा नै आस्वासनां री मेह बरसा-बरसा नैं मोटा हुवण में मदद करी। म्हां गांवआळा नै बारा ओज-स्वी अर उछाही भासण सुण-सुण नै लागतो कै सपनां री फसल तो पाकी-नै-पाकी। म्है जी खोलनै जूना सामन्तां री ठौड़ नूवां नेतावां रो समरथन करयौ अर बारै चूणीज्या बाद धणी नरमाई अर घणै कोड सूं म्हारी समस्यावां अर चावनावां वारै सामै राखी। मुळकता नेताजी राजधानी सू जल्दी-सू-जल्दी समस्यावां रै निराकरण अर नूवा निरमाण रा आदेस हवावण रा मीठा आस्वासन देय नैं बै जाय'र बै जाय।

साल-माथै-साल बीतण लाग्या, पण नेताजी तो पूठो गाव कानी मूण्डो ही नी करयो। म्हां लोगां रा मन थोडा मुरझावण लाग्या, पण हाल उछाह मरयो नी। सोच्यो इतो मोटो मुलक। मोटी-मोटी समस्यावां। बापड़ा नेताजी काई अेकले आपणै गांव खातर थोड़ै ही बैठया है। जिया-तिया कर'र मन नैं बिलमायो कै दूजै चुनाव रो बगत नेड़ो आयग्यो। जणै कठै जा'र नेताजी रा दरसण हुया। भोळा लोगां ओळमा दिया, पण नेताजी तो गजब स्याणा नीकळया। ओळमा सुण'र उलटा म्हांनै ही ओळमा देंवणा सुरु करया। पूछयो, 'आ पांच बरसां में थे म्हनै कदै याद करया। कोई शिष्ट-मण्डल लेयनै जैपर आया। थारी मागां खातर कदै मेमोरैण्डम

भेज्यो। यानैं केठा ? म्हारैं जी नैं किता सफड़ा रैवैं, कणैं जैपर आंवो जणा ठा पड़ै। मैं तो म्हारी गत देखनैं सैतरा-वैतरा हुय ज्यावोला। ओ तो हूं ईं जणैं धिकावूं। भोळा भाईड़ां। गळती थांरी। कदै रोयां बिना मां भी टाबर नैं बोबो चूगावैं ? जणैं पछै, ओ तो रैयग्यो राज। इंयां घर बैठया कियां काम हुवै ?" अर इसी-इसी मोकळी बातयां कैयनैं वैं म्हानैं तो पाणी-पाणी कर दिया। आं मीठी झिड़कयां रै बाद वैं ईं चुनाव जीत्यां रै बाद म्हारै गाव कानी खास ध्यान देय नैं काम करणैं रो वादो करयो। अर म्हे वी वन्दै नैं भळै सांच समझनैं नेताजी री जै-जैकार सूं आभो चक लियो।

खैर ! दूजो चुनाव भी हुयो। म्हांमें भी की समझ बापरी। अब म्हे भी नेताजी रै कैयां मुजब वगत-वगत मायैं लोगां कनै सूं पीसा भेळा करनैं जैपर शिष्टमण्डल भेजण लाग्या। अबकाळै नेताजी नैं भी लाग्यो कै गांव थोड़ो चेत्यो है, अब सफाई बिना काढया तो पार कोनी पड़ै। इण खातर वैं म्हारै प्रतिनिधियां रै मार्फत म्हां कनै सन्देश भेज्यो कै काम करावण खातर तो आपा नैं कुड़सी मायैं बैठ्या मिन्त्रीजी री मैर चाहिजैं अर हूं तो अठै जैपर में बैठयो थांनैं थांरैं अठै ल्यावण री चेस्टा करूं अर थे बित्तै थांरैं सुवागत सतकार री त्यारी करो। ओ सन्देशो पायनैं म्हारै तो पगां मे घूघरा बधग्या। पेट काट'र भी म्हे लोग हजारूं रिपिया चन्दै रा भेळा करया। नेताजी वादै मुजब मिन्त्रीजी नैं ल्याया। तकड़ो सुवागत सतकार हुयो। मिन्त्रीजी सागै जको ठाडो लाव-लसकर आयो बीनैं देख'र म्हारी तो आख फाटगी। बूढ़ा-बडेरां बतायो कै इस्यो ठाट-बाट तो 'धणी' (महाराज कुमार विजयसिंह, बीकानेर रियासत) पधारया हा वां रो भी नी हो। खैर भारी सभा हुई। आसै-पासै रै दसूं गांवां रा मिनख भेळा हुया। म्हे भी म्हांरी तकलीफा मिन्त्रीजी रै सामैं अरज करी। म्हे खारैं अर बिराइजणै पाणी सूं लारो छुड़ावण री बात खास जोर देयनैं कही ही, पण अचम्भै री बात कै मिन्त्रीजी पाणी, सड़क, बीजळी आद सगळां री जरूरत कबूल करता थकां भी छेकड़ में आ ही कैयी कै भाईड़ा थारी माड़ी हालत रो कारण थांमें फैल्योड़ी अशिक्षा है, इण खातर हूं थांरैं गाव में मोटोड़ो मदरसो खोलण री घोषणा कर'र ज्यावूं हूं। मिन्त्रीजी री घोषणा

सागै ही मंच माथै बैठ्या लोगां जोर-जोर सू ताळयां बजाई अर पछै तो देखा-देखी म्हांरा भाईडा ताळयां बजावण लाग्या तो थाम्या ही नीं थम्या।

खैर! जलसो खतम हुयो। हजारूं रिपिया खरच करणै रै बाद म्हांनै पीणै रै पाणी री ठौड मदरसो मिल्यो। ईं घटना नै लेय'र बाद में जकी कानाफूसी हुई बी सू पतो लाग्यो कै आपां रै एम. एल. ए. साब री पाणीआळै मिन्त्रीजी सू पटै कोनी, इण खातर बै आं मिन्त्रीजी नै लियाया अर अै मिन्त्रीजी बापडा पाणी कठै सूं देवै हा।

हूं जद ईं समळै प्रसग माथै विचार करूं तो म्हारै मन में कई-कई बात्यां ऊकळै। मनै लागै कै ब जिब मांग खातर भी मिन्त्री री मै'र अर मरजी रो जको ओ सिलसिलो ईं देस मे चाल्यो है, ओ साव ही गळत काम हुय रैयो है। आपां अठै आंवतां आपांरै प्रजातन्त्र नै गळत ढांण घाल दियो है। ईं बात रो नतीजो ओ नीकळ्यो है कै *आम आदमी रो अधिकार—अधिकार नीं रैय'र* फकत सत्ताधीशां री मरजी रो खेल बणग्यो अर प्रजातन्त्र रै चोगै मे सामन्तशाही वृतियां फळ-फूल रही है। साची पूछो जणा तो भारतीय प्रजातन्त्र मे आज भी अै ही सान्तशाही तत्व अर संस्कार हावी है। मोटमोटी कुडस्यां माथै बैठ्या नौकरशाह बडी चालाकी अर हुस्यारी सू आपरी स्थिति मजबूत करण खातर ही ऐडी-ऐडी गळत परम्परावां नै उकसाई है। अफसोस इणी बात रो है कै जन प्रतिनिधि कै-बीजणआळा नेता लोग भी आम आदमी नै ठगणै रै ईं षड्यन्त्र मे शरीक हुयग्या है। आं अफसरां रै मुण्डै सू 'हुकुम' अर 'बडो हुकुम' सुण-सुण'र आंरा भी सामन्ती संस्कार जागग्या है। अै आपरो विवेक खो बैठ्या है अर ईं रै कारण ही चेताचूक हुयोड़ा सा पूरी तरियां नौकरशाही रै बस मे हुयग्या है। घणी चिन्ता री बात तो आ है कै आपांरै नेतावां री अफसरशाही पर आ परवसता दिनोदिन बधती जा रैयी है। अचंभो तो जणै हुवै कै काल तांई जका खुलै मैदान मे ताल ठोक-ठोक'र भारतीय प्रजातन्त्र रै इण सरकारीकरण अर सामन्तीकरण रो पुरजोर सबदां मे विरोध करै हा अर इण विरोध रै कारण ही जका सत्ता हासल करी ही बै सारलै नेतावां सू भी बेसी परवसू हुयग्या है।

ईं घटना नैं लेय'र जको दूजो विचार म्हारै मन में आवै है वो ओ है कै जन समस्यावां नै गळत रूप में सेवण री जको वाण आज रै नेतावां में पड़ी है वा साव माड़ी बात है अर वीं सूं भी माड़ी बात आ है कै आम-आदमी में भी आं गळत परम्परावां नैं सेवण री मानसिकता बणती जा रैयी है। नी जणैं कोई कारण कोनी हो कै म्हे तिस सूं ताडज्योड़ा पाणी री मांग करी अर म्हांनैं पाणी री ठौड़ मदरसो वगसीज्यो। ई पाणी री म्हानैं कित्ती बडी पीं'ड़ हीं आ म्हे ही जाणां। ईं पाणी खातर रात-रात भर कूआं मायै माथाफोड़ी म्हांनैं करणी पड़ती, ईं पाणी रै गुटकै खातर नित-री ही पाच-पाच अर सात-सात कोस रो पैण्डो म्हानैं, करणो पड़तो अर ईं पाणी रै नांव मायै जो'ड़ां सूं वाटकी-वाटकी संच'र खोला री लीलोछम मूत पीवती-पीवतां म्हारी काया वांसगी, पण ओ किसो'क मजाक कै मांग्यो पाणी अर मिल्यो मदरसो। नयूक पाणीआळा मिन्त्रजी तो म्हारै एम. एल. ए. माथै रै लै-ढबआळा कोनी हा। प्रजातन्त्र में ईं सूं मूण्डो मजाक तो और काई हुयसी। प्रजातन्त्र रो इसो विडरूप तो सायद दुनिया भर में कठै ढूढयां नी लाधैलो। ओ मजाक अेकलो म्हारै गांव साथै ही नी हुयो है, अठै रा लाखूं-लाखूं गावां अर वांरा करोड़ा-करोड़ मिनखा मायै आयै दिन इसो मजाक हुंवतो रैवै है। ईं देस में योजनावां रै नाम मायै दिल्ली अर जैपर वैठ्या लोग निर्णय ले लियो कै ईं रोकड़ वरस में इत्ता कुआ, इत्ती अस्पताळा अर इत्ता मदरसा वणावणा है अर पछै मदरसै री दरकार हुवै वठै तो कुओ खुदवाइजै अर जठै कुअै री दरकार हुवै वठै सफाखानो खोलीजै।

आ तो हुई एक वात। अब पाछा ही गांव री कां'णी कांनी चाला। म्हारै अठै मदरसै री खुशी पाणी रै दु:ख में थोड़े ही दिना मे मोळी पड़गी। वधतै उनाळै सारै पाछो वो रो वो रासो जीव नै त्यार हो। अब ताई री घटनावां सूं म्हांनैं भी कीं अनुभव हुया अर म्हे गांवआळा पूठो ही चन्दो भेळो करनै शिष्टमण्डल जैपर दोड़ाणा सरू करया। अवकाळै शिष्ट-मण्डळिया नै समझायो कै भायडां! कीं खरचो वेसी भला ही हुवो पण ल्यावो पाणीआळै मिन्त्रीजी नैं ही। जैपर कई-कई गेड़ा काटया वाद म्हारै शिष्टमण्डळियां नै जको जवाव मिल्यो वींरो सार ओ ही हो कै

म्हांरा एम. एल. ए. साब इण खातर रात-दिन एका कर राख्यो है। हां वियांस वै ई चुनाव मे मदरसो खुलवा ही दियो इण वास्तै पाणी बेई वा माथै घणो दबाब देणो सावळ तो कोनी। हिसावसर तो अब ई काम खातर आगलै चुनाव री उडीक राखणी चाहिजै अर गागै एम. एल. ए. साब रा पग मजबूत करणा चाहिजै। जकै सू घणै वोटां सू जित्यां रै बाद घणै जोर सू नूवा पाणी-मिन्त्री सू म्हां खातर बात कर सकै। खैर! हुंवता-हुंवता, तीजोड़ो चुनाव भी हुयो अर सागो नेताजी पूठा जीतग्या। अब-काळै वै जीत्या रै बाद जद गाव मे आया जणै वांनै सोटा री माळा पैराइजी म्यूक कई बरसा रै पंचायती राज म्हारै भाईडा नै बोळा स्याणा बणा दिया। ई गरमागरम सुवागत रो असर भी गरम ही हुयो। नेताजी घणै जोस मे भर नै म्हारै सामै प्रतिज्ञा करी'क वै म्हारै ई भक्ति-भाव सू घणा खुस है अर ई पच बरसी गनसबदारी रै मांय-मांय वै म्हारै खातर पाणी री माकूल व्यवस्था करदेसी। हां जांवता-आंवता इती भोळावण भळै देयग्या कै अबकाळै पाणीमिन्त्री रै सागै मुख-मिन्त्रीजी नै भी ल्याय सू, पण बारै सुवागत-सत्कार बेई सावळ त्यार रैया। गावआळा ई भोळावण नै सुण भी ली अर समझली। पण सुवाल रिपियां रो अडै हो। ऊपरावळी रा काळ पड़ै हा रिपियो ल्यावै कठै सू अर बिना मिन्त्रयां रै पाणी कठै? छेकड ई विकट समस्या सू जूझण बेई गाव रै लोगा री सभा भेळी हुयी अर कई चोलणा-पचोलणा करयां रै बाद 'लोकल गोधा' (अै पैला तो कार्यकर्ता रूपी वाछडा ही हा पण जनता रूपी सूधी गाय रो चन्दो रूपी दूध चूघ-चूघ नै माटा मारणा गोधा बणग्या हा) मे सू कोई एक स्याणां गोधो सुझाव राख्यो कै लारलै छह मी'नां री राशन री चीणी अब-काळै भेळी ही आयसी अर काळै बजार री राशन री चीणी मे अर ई मे कोई पाच-साढ़ी पाच रिपिया किलै रो बटो चालै है। थारै जचै तो सा' चीणी ऊपरा-ऊपरी सळटा'र वा पीसां सू गाव रो ओ अंडो तो काढा। बाकी थोड़ा वो'त कम-बेसी हुयसी तो आगै देखस्यां। जबर मुझाव आयो। लोगां सुझाव देवणियै री अकल नै सराई। दो-च्यार वापडा साधारण मिनख थोड़ो विरोध भी करयो पण गांव रै चन्दै-चिट्ठ मे सिरै रैवणिया पाच-सात नाव जम'र ई प्रस्ताव रो समर्थन करयो अर छेकड़ प्रस्ताव

सरव राय मूं पारित मानीज्यो । प्रस्ताव पारित हुयो जको तो चोखो पण ई रै सागै गांव रै सार्वजनिक जीवन मे भळै एक गळत परम्परा सरू हुयगी । पंचायती राज आयां बाद म्है आ लोकल गोधां सूं ईयां ही परेशान हुवण लागग्या हा अर अब तो माटां नें खा'ळ मिलगी ही । अब तो अै गाव रै भलै रै नाव मायं कणै तो राशन रो कपड़ो बेचण लागग्या तो कणै गेहूं अर कणै किरासियो तेल सो कणै चीणी । म्है तो भोळै-भोळै चोखा पज्या । म्हानै के ठा कै गऊंनरी रा जाया जाण'र म्है जकै खेत-खळै रो गेली आनै दिखायो जको म्हारै जी रो जंजाळ बण ज्यासी । माटा अै गोधा तो म्हारां ही खेत-खळा चर-चरनै बेजा पसरग्या नी अब तो जे कणै ही घेरण जावां तो सामा मारण न्यारा आवै अर ई सूं भी बेसी चिन्ता री बात आ हुयगी कै मुफत रै चमकै पड्योड़ा अै गोधा खेत-खळा न्हाली हुयां अब तो सीधा म्हारै घरां मायं ही ढूकण लागग्या है । कीरै घर रो फळसो भूल सूं खुलो रैयग्यो हुवो या थोडो सो'क कमजोर दीसो अै फटाफट मांयनै वड'र घर बिगाडण मे पाछ कोनी राखै । आखर गांव-गाम है । कठै भाया-भायां रै बिचै कदै थोड़ी खींचताण हुयगी तो कदै धणी-लुगाई आपस मे थोड़ा बो'त चिड़भिड लिया का किण रै ही घरै कोई माणस-कुमाणस जामग्यो, बस इत्ती सी ढाल लाध्यां बाद तो अै म्लेट गोधा घर सेळ-भेळ करण नें त्यार ही खड्या है । बारला नेताजी तो बार-तीवार ही फोड़ा घालता हा पण अै तो अष्ट पौर चौबीस घड़ी छाती रा छोडा छोलता रैवै । आ बाळणजोगा री जमात भळै दिनों-दिन बढ़ै ही है । देखां कियां पार पड़सी ।

ई प्रासांगिक बात नै अठै छोड़'र पाछा आगै चाला । नेताजी रै आश्वासन रै मुजब छेकड एकदिन मुख-मिन्त्रीजी तो नी पण पाणीआळा मिन्त्रीजी जरूर गांव आ पूग्या । सागी सारली बार आळासा खेल खेलीज्या अर मिन्त्रीजी आपरै भाषण रै छेकड ही छेकड़ मे आ घोषणा करनें नूवो कुओ खुदवा'र का बोदोड़ा कुआ री बोरिंग करवा'र का आसै-पासै आळै गाव सूं मीठो पाणी ल्यार थांरी ई समस्या रो स्थायी हल करणै रो जुमो हू म्हारै विभाग नै सोपू—म्हांनै तो न्याल कर दिया । अब तो म्हारै विधायक महोदय री बधू बात कैवणी । बांनै यू लखायो कै ई घोषणा रै सागै ही

बै पूठो ही आखो गांव पांच बरसां खातर आपरै पट्टै लिखवा लियो है, पण विधायक महोदय रो ओ सोच साच नी नीसरयो। म्हारै गाव में भी अब पैलीआळी मी वातां नी रैयगी ही। की तो मोटोड़ी स्कूल री भणाई रै कारणै अर की गोधा री बधती जमात में सावळसर ठौड ठिकाणो नीं मिलणै रै कारण गांव में नेताजी रै विरोध में असन्तुस्टा रो एक न्यारो ही वरग त्यार हुवण लागग्यो हो। ओ वरग नेताजी अर थारै समरथकां नै जम देवणो तो दूर रैयो उल्टो बांनै चौडे-धाडै भांडणो और सरू करयो। वारै मुजब नेताजी थोड़ै सै'क लोकल गोधां री मिलीभगत सू आखै गाव नै अर आखै गांव नै ही नी आखै चोखळै नै भोदू बणायो है। यै कैवता, आपां रै हलकै मे हिसाब सर की भी काम नी हुयो। वै कणै गुजरात री तो कणै महाराष्ट्र री तो कणै किणी दिखणादै सूबै री प्रगति री बात बतावता। वारै मुजब इत्ता बरसा मे अठै मदरसो अर नूवा कुआ ही कै बीजळी, सड़क अर सफाखानो ही नी छोटा-मोटा बडै रुजगार देवणिया लघु उद्योगधन्धा सरू हुय ज्यावणा चाहिजै हा। इत्तो ही नीं, नै'र आद रै प्रबन्ध सू इं इलाकै रै स्थायी विकास रो रास्तो खुल ज्यावणो चाहीजतो हो। पण आपां रै नेताजी नै तो घर भरणै सू ही फुरसत कठै ? वै तो जैपर अर दिल्ली मे आपरा बंगला बणावण रै चक्कर में सो की भूल-भाल्ग्या। होळै-होळै इसी बात्यां रो असर भी लोगां में साफ दिखण लाग्यो। खाली म्हारो गाव ही नी म्हांरो पूरो हलको ही नेताजी अर बांरी पार्टी रै विरोध मे वैवणियै बायरियै मैं वैवण लाग्यो।

नतीजो सामां दीखै हो। चोथो चुनाव घणी भाग-दौड रै बाद भी जूना नेताजी नै ले डूब्यो। कोई जूनै सामन्ती परवार रो एक नूवो ही मिनख चुनाव जीतग्यो। नेताजी नै आंटा चित्त ल्याय नै म्है सोच्यो सावळ करयो। अबकी सरकार भी म्हारै विरोध नै लखसी। बी नै भी लागसी कै म्है जमां ही भेड-बकरचां तो नी हा, म्हारै भी अबै मारणा सीग आवा लाग्या है। म्है नूवा जीत्योडा नेताजी रो सान्तरो सुवागत-सत्कार करयो अर बानै अखरा-अखरा'र कैयो कै देख्या'क म्हानै भूल मती ज्याया। वै म्हारी बात रै पड़ूत्तर मे जकी-जकी बात्यां कैयी अर ईं भिस्ट सिरकार नै गैलै ल्यावण रा जका-जका गुर बताया बानै सुण-सुण'र म्हांनै लाग्यो कै

अबकाळै तो ई पंचबरसी में ही एक साथै ही पाणी, बीजळी, सफाखानो अर सड़क सो की मिल ज्यासी। म्हांनैं तो उलटी चिन्ता लागगी कै इत्ता सगळा काम हुयां बाद म्हे आगलै चुनावआळै बगत नूंवी मांग भळै किसी राखस्यां। पण, ई चिन्ता करणै रो तो ओसर ही नी आयो। ई वार जनता रै जोरदार विरोध रै कारण जूनो सरकार रा पाया हालग्या। जीत्योड़ा विधायकां में एक-एक रो इसो चक्कर पड़यो कै स्कूली छोरां-सा लैण बन्ध्या विधायक राज्यपाल रै मुण्डागै एक-दो-तीन-च्यार री माळनी बांचण लागग्या। राजनीत रा मोटोड़ा मल्ला मे जैपर रै अखाड़ै बीच कई दिनां ताईं दांव-पेच चालता रैया अर एक दिन अचाणचकै ही सुण्यो कै लाखां रिपिया अर मिन्त्री पद पायनै जनक्रान्ति रा गीत गावणियां कई विधायक जूना मुखमंत्रीजी भेळा जा मिल्या अर जनता रा नूवी सरकार अर नूवै कामां रा सै सुपना जब्बर आन्धी में भी टोरा सा उड-उड'र जन विसवास नै तीखा कांटां सू लहूभाण कर नाख्यो। दुरभाग सू म्हारला नूवोड़ा नेताजी आं दळ-बदळुवां में सिरै हा। बानै मिन्त्री पद तो नी मिल्यो पण कुण जाणै मुखमिन्त्रीजी बांनै किसो नीरो नीरयो'कै बै तो आगलै चुनाव ताईं पूठी नसड़ी ही ऊंची को करी नी। एड़ी हालात मे ल्याईं नै म्हां जनता जनार्दन री ओळू क्यां नै आवै ही।

खैर जिया-तिया कर'र दोरा-सोरा अै पाच बरस भी बिताया। पूठो ही चुनाव रो बायरियो बाजण लागण लाग्यो। म्हारला हारयोड़ा जूना बैली लारलै पांच बरसां मे निरवाळा बैठ्या हा, इण खातर बगत-बगत माथै हलकै नै संभाळण मे भूल नी करी। आखर नेताजी री आ नरमाई रग ल्याई अर आगलै चुनाव मे भळै बै ही नेताजी चुनाव जीतग्या। पूठा बै रा बै ही खेल खेलीज्या। लोटां री माळा सू हुयै सुवागत रै बदळै जन समस्यावा रै निराकरण रा आस्वासन दिरीज्या। म्हांनै भी लाग्यो कै अब काळै ठोकर खायोड़ा नेताजी म्हांरी सावळ सार-सभाळ लेवेला। अर-साच्याणी नेताजी आपरी जागीर नै बगत-बगत माथै सभाळण लागग्या। पण भाग री बात नूंवै मिन्त्री मंडळ में नेताजी री गोट मावळसर फिट को बैठी नी। बापड़ा ई नै बी नें तड़फा तोड़ता रैया, पण की खास पार पड़ीनी। पाछो ही विरोध बधण लाग्यो। लोग पूठा नेताजी नै भूण्डंण

लाग्या । नेताजी नैं बधतै जन असंतोष रो सनेमो आपरा चमचा सूं मिल्यो । इण सू नेताजी घणा उतांवळा हुयनैं जियां-नियां कर'र मुख मिंत्री जी नै आपरै हलकै रै दौरे खातर पटाया। मुख मिन्त्री री स्वीकृति रै मार्थ ही नेताजी आपरै हलकारां नैं म्हांरै क्षेत्र में दोड़ाया कै, मुख मिन्त्री जी री अगवानी खातर त्यार हुवै । वैं सनेमो मेंज्यो कै, वीसां दांनी मत देल्या, जी खोल नैं सुवागत करघा, जिण सू प्रान्त-धणी नैं राजी करनै हलकै मे कठै मदरसो तो कठै अस्पताळ, कठै बीजळी तो कठै पाणी जरूर हुंकारावाला। पण रोज-रोज साइज्योड़ो गाव मास्तरै सुवागत-सत्कार में लागणियै पइसा खातर सकपकायौ । इतौ ही नी की नूवा भण्योड़ा कुचमादी नौजवान अखबारां मे छप्योड़ी खबरां सू जोस खायनैं घेराव अर काळा झण्डा तकात री बात करण लागग्या। आ खबर नेताजी ताई पूगी । सुण'र घणा हुळफळाया, इं नैं तो मुख मिंत्री जी रै दौरे री तारी-खां तकात पकी हुयगी अर थीनैं घर मे ही ओ रोळो पड़ग्यो । जे छोरां साच्याणी ही इस्यो की उपद्रो खड़ो कर दियो जणै तो घणो गसी हुवैलो। विकास तो पड़ैलो दरड़ै मे खुद नेताजी री हालत भी पतळी हुय ज्यावै ली । अै सैं वात्यां सोच-सोच नै बापडै नेताजी री रातू नींद उडगी । पण नेताजी भाग रा बळी नीसरघा। मुख मिंत्री रै दौरे सू पैलां ही देस में आपात काल लागू हुयग्यो अर रातू-रात सो की बदळग्यो ।

बदळी परिस्थितिया मे अबै तो मुख मिंत्री जी ही माई-बाप हा। इण खातर सौ विरोध मतै ठण्डो पड़ग्यो । अब तो आखो गाव ही प्रान्त-धणी रै सुवागत सत्कार रै कार्यक्रम में जुटग्यो। आपात काळ रो एक झटकौ ही लोगा नै बांरी सही स्थिति सू वाकिफ करवा दियो । परजा ईं बात नै भलीभान्त समझगी कै राजा जको राजा ही राजा। चाहे वो वंश परम्परा सू सिहासन मार्थ आसीन हुयो हुवै या वोटा रो सायरो लेय'र सिंहासन विराज्यो हुवै । बीरै सुभाव में की अन्तर नी आवै । अर ओ ज्ञान उपजता ही आखै देस री भान्त म्हांरै गाव मे भी 'घणी खम्मा' रो अखण्ड जाप हुवण लाग्यो । अन्दाता सदेह पधार रैया हा इण खातर स्वागत सत्कार मे किणी भान्त री कमी नही आवणी चाहिजै आ बात परजा नै बिना समझायां ही समझ मे आयगी । बस अब कमी क्यां री हो। अन्दाता

रा अन्दाता जैपर पधारया जणै 250 सुवागत-दुवार वण्या हा तो ई गांव मे भी गांव रै डोळ मारू 'घणी खम्मां' खातर 25 दुवार तो वणना ही चाहिजै, म्हा गांवआळां बिना अफसरां रै सुझायां ही औ सान्तरो निर्णय ले लियो हो अर उण रै मुजब ही एक सू एक इधका सुवागत-दुवार अर उण सू इधको मंच बणाड्यो। इतौ ही नी वरमां लग वीजळी खातर तरसतै गांव मे एक'र भाड़ै रो जैनरेटर मंगवा'र वीजळी री व्यवस्था भी करी जी।

अन्दाता रै आवणै अर गांव मे वीजळी रै पूगणै रो नातो भोळा लोगा न जाणै किया जोड़ लियो ? अब तो लाग्या आंख्या फाड़-फाड़'र उडीकण नै वा टूकां नें जका मे लद-लद'र वीजळी रो सौ समान गांव में पूगणो हो। यू वाट जोवतां-जोवतां गांवआळा री आंख्यां रा कोया पथराइजग्या पण वो बीजळी रो समान तो वठै नी आयो। पछै लोगां सोच्यो कै अन्दाता सायद परजा नैं इन्दराज मे नाखण खातर सागै ही सौ लाव-लस्कर लेनै पधारसी। छेकड़ उडीकतां-उडीकतां वा घड़ी-पुळ भी आय पूगी। पचासूं मोटरां माथै मोटा मालक पधारया। पुलिस, पत्रकार अर फोटोग्राफरा रै अलावा चमचां री लाम्बी जमात सागै ही। अन्दाता रो शानदार सुवागत हुयो। अन्दाता ई छोटे सै गांव मे ओ सुवागत देखनै घणा राजी हुया। आ वात वांरी मुखमुद्रा सू लखावै ही। फूल-माळायां अर सुवागत भावण री औपचारिकता रै वाद अन्दाता रै वोलणै सू पैलां एक कविजी नै खड़ा करया वांरी प्रशस्ति खातर। कविजी ठैरया भावुक आदमी। वै आपरी भावनावां मे वैय'र 'घणी-खम्मा' नै बिड़दावणी सरू करयो अर ई क्रम मे जिकरो कर वैठ्या कै पाणीआळा मिश्रीजी जियां हाथू-हाथ पाणी रो आश्वासन दियो वियां ही मोटा मालक वीजळी खातर मैं'र करसी। आपरी जाण मे तो स्याई कविजी घणी ओपती बात कैयी, पण वांनै काई ठा कै अन्दाता अर भूतपूर्व पाणीआळा मिश्रीजी में तो वरगा वैर ह। आपरै मुण्डागै ही मंच माथै वांरी तारीफ सुण'र अन्दाता रो मूड एकदम विगड्यो। गोधो लाल कपड़ै सू विदकै विया ही वै ई वात सू विदकग्या ! अबै काई ? बण्यो-बणायो सौ खेल बिगड़्यो। अन्दाता रा वदळचोड़ा तेवर देख'र हाजरिया धूजण लागग्या।

अर परजा रो तो सिटी-पिटी ही गुम हुयगी। अन्नदाता आपरै भायण में भूतपूर्व पाणी मिन्त्री जी नै विडदावण खातर गावआळां नै खरो ओळमो दियो अर छेकड़ जांवता आपरी उदारता दरसावण खातर इतो ही कयो कै हूं जैपर जायनै थारै ई बीजळीआळै मसलै नै देखस्यूं।

अणजाणै मे बणी एक छोटी-सी बात सूं सा धूण-धाणी राख छाणी हुयगी। गांव रो हजारूं रिपियो अकारथ गयो। लोगां नै घणो अफसोस हुयो पण बोलै कांई। आपात काळ मे आपा रो मगळा नै डर लागै हो इण खातर आपस में खुसर-फुसर कर'र ही रैयग्या।

भाग-जोग आपात काळ हटणै री घोषणा हुई अर नूवो चुनाव सामै आयो। सागै ही देस री हवा पलटगी। लोगां रो दब्यो-चीथ्यो हीयो एकदम उछळ पड़्यो। समद रै चुनावां रै सान्तरा नतीजा सूं उछाही जनता सरकार विधान सभावां रै चुनाव रो एलान भी कर दियो। इण चुनाव में म्हारा जूनोड़ा नेताजी भी डरूं-फरूं हुयोड़ा सा ऊभा हुया पण नूवोड़ी पार्टी अर बीरै उमीदवार सामै बापड़ो कठै टिकै हो। चुनाव हुयो। नतीजो सामनै ही दीसै हो। नूवैं दळा रा नूवा नेताजी चुनाव जीतग्या। जीत रै बाद री पैली चुनाव सभा रै मांय ही गावआळा सागी बीजळीआळी मांग आरै सामै भी राखी। नेताजी नूवां-नूवां गादी बिराज्या हा इण खातर फटाफट गांव रै पांच सिरै आदम्यां री एक समिति बणादी अर बा माथै ओ भार नाख दियो कै बै एक दो बार नेताजी कनै जैपर धूगग्यावैं अर बै साल भर रै मांय-मांय म्हारै गांव नै [illegible], अर साच्याणी नेताजी आपरै वचनां मुजब काम कर दिखायो। इनै-बिनै भागादौड़ी कर'र म्हारै इलकै रै पूरै दस गांवां री बीजळी री योजना मंजूर करवा'र कार्य चालू कर दियो। इणरै बाद [illegible] अर बिनै बीजळी रो [illegible] खातर बारला ठेकेदार गांव में फेरा देवणो सरू कर्यो। बै आंवता ही आपात काळ रै बाद [illegible] नूवो [illegible] भाग [illegible] बा [illegible] में [illegible] हुयै जूनोड़ा लोगां [illegible] गांव में [illegible] री एक [illegible]। [illegible] रै मुजब बै गांव में [illegible] नै आ बात [illegible] कै [illegible] मांयै [illegible] हुयै ओ [illegible] एम० एल० ए० सांब रै [illegible]

को कोनी हुवै। असली माई-बाप तो हाल भी सरकारी अफसर ही है। बदळ्या है तो नेता बदळ्या है, अफसरशाही तो बा री बा है। जै नूवां नेताजी रै भरोसै घणां कूदया तो गाँव मे खम्भलिया लाग्यां रै बाद भी बीजळी रा सुपना ही देखोला।' अर इसी-इसी डारावणी बातां री इसी जब्बर घूटी गाँवआळां नै पाई कै वै फटाफट ई बात नै हैंकारग्या कै फो फनेक्सन एक तयसुदा रकम भेळी करनै आं देवतावां रै चढ़ापै रो बदोबस्त करणो जावै। जूनां देवता नूवां पुजारो। देर बयांरी ही। सुणी हा फटाफट हजारूं रिपिया भेळा हुयग्या। भोग री त्यारी हुवण लागी कै अणचिंत्यो ही बिजोक आ पड़यो। किणी सूरत नूवोड़ा नेताजी नैं ई भोग री भणक लागगी। वै ठैरया स्याणां मिनख। सोच्यो कै श्री गणेश में ही जे ई ढाळै काम चालण लाग्यो जणा तो म्हां में अर जूनोड़ा नेतावां में अन्तर ही काईं रैयो। वै फटाफट आपरै आं बाछड़ियां नै बुला'र ओरा कान खींच्यां। भेळी करयोड़ी रकम पूठी ही लोगां नै बांटण रो करड़ो तकादो करयो पण आप तो स्याणा हो मुसाणां गयोड़ी लकड़ी कदै पूठी आई कै? बाछड़ियां एक'र भोगआळै पिरोग्राम मे थोड़ी ढील-ढाल दे दी।

सिरकारू देवतावां नैं भोग रै जोग में बण्यै अजोग रो पतो लाग्यो जणै मांय रा मांय राता-पीळा तो घणा ही हुया, पण एक'र बगत देखनै सबूरी खायग्या अर मन-ही-मन जनता नै सान्तरो चिमत्कार दिखावण री बात गोखण लाग्या। खैर! एक'र तो नेताजी रै डर सूं बीजळी रा खम्भा भी लाग्या, तार भी खींचीज्या अर छोटा-मोटा फनेक्सन भी दीरीज्या। पण इस्यै मिजळै गांव नै बस मे लियां बिनां तो अफसरशाही रै निरंकुश शासन मायै आंच आवै ही ही। सुवाल पांच-च्यार हजार रिपिया रो नी हो। सुवाल हो जनता रै जागणै रो बीरै विद्रोही हुवणै रो। ई सुळगती चिणगारी न तो मरू मे ही नी थाम्यां तो गजब हुवणै रो भय हो न! इण खातर मौको तलासीजण लाग्यो।

तीन-च्यार मीना बीतता न बीतता ओ मोको भी हाथ लाग्यो। बीजळी लाग्यां बाद गाँव मे पैलो तीं'वार दीवाळी रो आयो। गाँव में बीजळी रै पळपळाटै में पैली दीवाळी मनांवणै रो ठाडो कोड हो। लोग इता

उछाही कै उछव-मोछब री भान्त बीजळी रैं ना'नोड़ा लोटियाँ री वानर-माळाँ तकात त्यार आप आपरैं घराँ नैं सजावणा सरू करया, पण जनता रैं कोइ करयाँ कांई हुवै ? माटा, बीजळी अफसरियां के मन्न छोड्यो जको तो राम जाणे, पर पूरमपूर च्यार दिनां गांव में एक खिण वास्तै भी बीजळी कोनी आई। बीजळी विभाग रैं छोटिया अैलकाराँ सूँ वात करता तो एक ही जवाव, सारैं ट्रांसफोर्मर बळग्यो अठै बीजळी कठै सू आवै। अौर ऊपर ताँई भागदौड़कर मोटोड़ा अफसराँ सू नीठ सम्पर्क साध्यो तो नशे में धुत म्हाँरै गाँव रो नाँव सुणताँ ही लाग्या गाळयाँ ठोकण नै कै म्हारी भेंट-पूजा बद करस्यो, म्हारी सिकायत नेताजी नैं ठोकस्यो अर म्हा सू काम भी चास्यो। जावो कोनी हुवै काम। बुला'र लियाओ थारैं बाँ नेताजी नैं। बापड़ा अरदास लेय'र जावणियाँ लोग पूठा आपरो सो मू लेय'र आयग्या, क्यू क नेताजी जैपर बैठ्या हा वाँ ताँई कुणै पुगै हा ? खैर! हुयो-सो-हुयो। सार वात आ ही कै म्हे पैलड़ो तिवार तो धुप्प अंधेरै में ही धोक्यो जको धोक्यो ही, साथैं बीजळी रैं अभाव में पाणी रा फोड़ा पाखती में देख्या।

ऊपरलै सगळै प्रसंग माथै गौर करयाँ दो बात्याँ सामनै आवै, एक तो —जनता रैं पइसैं सू पळणियाँ जनता रैं नौकराँ में भी शासक हुवणै रो ओ गुमान कठै सूँ जाग्यो अर दूजो ई रो इलाज काँई ? जठै ताँई आँमें गुमान जागणै रो सुवाल है। बापजी आ बात ही गळत है, क्यू कै अहंकार रो घूटियो तो अै अंग्रेजी शासनकाळ सू ही लेवता आया है, सुवाल तो ओ है कै प्रजातन्त्र रैं आया रैं बाद भी आँरो ओ नशो मिट्यो क्यू नी ? अर जद ई क्यू नी, माथै विचाराँ जणै लागै कै नौकरशाही रो ओ नशो क्याँ‍ेऽ मिटै हो। ई नै मेटण खातर का तो जन प्रतिनिधि कटिबद्ध हुंवता तो ओ मिटतो अर का जनता ही आँनै गैलैसर ल्यावण री बात तेवड़ लेती तो आ बात पार पड़ती। पण अठै दोनाँ काँनी डयको रैयो। जन प्रतिनिधि तो खुद आँमू भी बेसी निकामा अर भिस्ट निकळया, ई वास्तैं वै तो आँ सपूताँ नैं के सुधारैं हा ? अब रैयी वात जनता री, तो अशिक्षा, अज्ञानता अर जुगाँ री दासता री मारयोड़ी जनता में हाल तो

स्वतन्त्रता री पूरी समझ ही कों बापरी नी ! जठै, जठै भी थोड़ी घणी आ समझ बापरी है वठै-वठै निश्चित रूप सूं थोड़ो घणो बदळाव आयो है पण वठै भी हाल अपेक्षित परिवर्तन देखण नें नी मिले, एड़ी हालत में शिक्षा-दीक्षा अर प्रजातांत्रिक सस्कारां में जावक ही सारै रियोड़े म्हांरै ईं हलकै में जकै दिन आ चेतना जागसी, हूं सोचूं अठै बो दिन ही क्रान्ति रो पैलो चरण पूरो हुयसी ।

जद याद करूं हल्दीघाटी

सन छीतर मे आखै मुलक में अर खास करनै आपारै राजस्थान मे हल्दीघाटी चतुशती री जलसो घणै ठाट-बाट सूं मनाईजियो। ईं जलसे बाबत जे कोई आपसू ओ सवाल पूछ लेवतो कै ओ जलसो क्यूं मनाइजियो, तो आप ही नीं आप अर म्हां जिसा घणा साथी ई अढबै सुवाल नै सुण'र चिमकता। सुवाल अढवो भलां ही लागो पण म्हारा ही एक भायला वा दिनां ओ सुवाल म्हारी मित्र-मण्डली में राख्यो अर सुवाल सुणता ही हमास्त कोई घण-उछाही आवेश मे भरनै बोल उठयो कै, 'जग-विख्यात राणा प्रताप रै त्याग अर बलिदान, शौर्य अर साहस, स्वतन्त्रता-प्रेम पर स्वाभिमान नै चैते करणै वेई हल्दीघाटी शताब्दी रो उछव नी मनाइजै तो कांई कायरा अर कुमाणासां री काळो अर भूण्डी करतूता नै चितारवा वेई बांरी जैचन्दी साजिसां रा उछब अर त्योहार धोकीजै।' पड़ूतर अर प्रति-प्रश्न तो सावळ ही लखायो, पण म्हारा बै साथी तो पड़ूतर सुणतां ही उतावळा पड़नै कैवण लाग्या, बड़ां मिनखा! थोडो तो हीयो लड़ाओ। अरे! आखी दुनिया मे थानै इसी कोई उदाहरण नी लाधैलो जठै कै पराजय अर आहत अपमान रो उछब मनाइजियो हुवै, अर बी सू भी बेसी सोचण री बात आ कै ओ उछब कठै मनाइजियो अर किण रै खातर मनाइजियो। अफसोस! ओ उछब उण धरती माथै मनाइजियो जठै—

इळां न देणी आपणी, हालरियां हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण वड़ाई माय॥

री बात हांचळ चूघता टाबरिया नै घोकाइजती। जठै इंच-इंच जमी खातर सांवठी लडाया लडीजती। जठै रण सू नाठर्या धणी तकात नै फटकारतां वीरांगनावा रा मन खिणेक खातर नी झिझकता।[1] अरे!

---

1. कत घरे किम आविया, तेगा री घण त्राम।
लहगें मूझ लुकोजियै, वैरी रो न विराम॥

जठै मरण नैं मोटो मंगळ मानता।[1] वी धरती मायँ पराजय री शताब्दी रो उछव मन मे वैरी पीड़ जगावै अर आ ही पीड़ वी वगत ओरूं वध ज्यावै जद कँ आ वात ध्यान ढूकै कै ओ उछव उण प्रतापसी खातर मनाइ-जियो, जिणारै कुळ र जुझारां रो समरांगण में उद्दाम निरत देखनैं वीर-वरण री लालसा सू आभै उड़ती अपछरावां मांस याम नै ऊभ ज्यावती।[2] खुद सुरजजी दो घड़ी रथ रोक नैं वां सूरां रो साव बढ़ावण ढूकता।[3] जिण कुळ री कीरत खातर सावठी धरती ही ओछी पडगी, जिण कुळ री वीरता रा बखाण करती सुरसत री वाणी थकगी नैं जिण कुळ रै सूरमां नैं घडतां बिरमा री बूढ़ी काया मे नूवी जवानी पांगरगी, वी कुळ में जलम्यौ हो प्रतापसी। जद ही तो सुतंत्रता अर स्वाभिमान रो रसियो हो बो। आ आदरमां खातर ही तो सोवन थाळ, रुपलिया बाजोट, बावन तरकारी अर छप्पन भोग छोड'र घास री रोटी खाणो कबूलियो पण जब्बर री जोरां मरदी आगै निवणो नी कबूलियो। आं आदरसां लारै ही कांजमै दर कांजयै आखी उमर गाळ दी जिणां रो वरणन करता कवी थाकग्या पण बो नी थाक्यो।[4] अै वै आदरस ही हा जिणां रै कारण वो जग-व्हालो नै कवी-चावौ वण्यौ। अरे! अै वै आदरस ही तो हा जिणां रै कारण वो आपरै

1. सूर न पूछै टीपणौ, सकुन न देखै सूर।
   मरणा नू मंगळ गिणै समर चढै मुख नूर॥
2. कल्पमदल् नह पार संध्या नह माहण
   कटक पयाणा रम किये।
   त्र—हूर रम सूर वरे आय कैक ओोड़ी हाथां।
   बाधा भरे ठौड़ ताजी मुडै काया वेग॥
3. रविरथ पहर थकन हुय रहियौ,
   नमो नमो चितरग नरेस।
   जाबै नही नाम ससि जहियी
   पड़िया तो पड़ियो पंवेडेम॥
4 वधियो वासाव तणे वड पातां, राणा अजुवालता रहि।
   थे कणोकलह जिने गुण व्याळां, करे जीतो वीजोय कलह॥
   थाम्बर तणां होय तिम ऊजम, घर छन्दै वलै हींये धकचाल्।
   रेण वलै चितवै रुपक, राणो वलै करे रिणताल॥

सै सू मोटै वैरी अकबर रो भी हिय-हार वणग्यो ।[1] वो ही प्रताप आपरी जिनगानी रो सै सू मोटी हार हल्दीघाटी री हार नै किया विसरयो हुवैला ? अरे ! विसरणो तो दूर म्हनै तो पक्को भरोसो है कै वी जुद्ध रो नांव सुणाता ही वीरो काळजो अहमनीय क्षोभ अर ग्लानि सू भर आवतो हुवैला । जिण जुद्ध री बात चैते आवतां ही वीं री आंख्या गामै राजा रामसिंह अर झाला, वीदा जैड़ा न जाणै कितरा-कितरा स्वामीभक्त सहयोगिया रा चितराम तैरण लागता हुवैला । जिण जुद्ध री चरचा चालता ही चचळ चेतक री हीस रह-रह नै कानां गूजण लागती हुवैला । आज सुरगां वैठ्यो वो ही प्रताप जद आपरी ही धरती माथै इण उछव नै मनाइजतो देख्यो हुवैला तो उणरै हीयै कित्तो न कित्तो दुख नी जलमियो हुवैला, उणरै मन मे कित्तो न कित्तो अणेसो नी जाग्यो हुवैला ? हुय सकै कै उछव रै आयोजनकर्त्तावां रै मन मे प्रताप खातर सावठी श्रद्धा अर गैरो सनमान रैयो हुवै । प्रताप री आतमा नै दुखी करणै री बात तो वै सुपनै मे भी नी सोची हुवै, पण इण सब रै बावजूद भी देखादेखी[2] उतावळ अर अणजाणैपणै मे वै ई जलसै रो आयोजन करयो । वै आपरी जाण मे तो प्रताप रै सनमान खातर ओ जलसो आयोजित करयो पण साची पूछो जणांम तो ओ जलसो प्रताप रै सनमान खातर नी मनाइजियो, बल्कि ओ जलसो मनाइजियो आपांरी सांस्कृतिक सूझ और समझ रै दीवाळियैपण रो इजहार करण नै, ओ जलसो मनाइजियो आपांरी उधार लियोडी अकल रो दरसाव करण नै, ओ जलसो मनाइजियो आपारी भणाई-गुणाई री पोल उघाड़नै अर ओ जलसो मनाइजियो परम्परावां री धरती सू साव

---

1. धर वीहर परताप खड़ग धर,
   सूज विसर नहँ पाखर सेर ।
   अक्वर ऊवर माल आहाडो,
   ओइणै सेवग भूप अनेर ॥
   राव हींदवो अनै राव रवड़ा, राणो आपाणी कुल रीत ।
   पड़िया रहे अवर नर पावा, चडियो कुम्भ कलोधर चीत ॥
2. ई जलसै नू थोड़ै पैला ही सूर पचशती अर मानस चतुशती रा उछव घणै टाट-बाट सू मनाइजिया हा, सायद वारो इसारो आ जलसा खातर हो हो ।

अजाण बिराणी सभ्यता नैं लंफती आपांरी त्रिशंकु-गत नैं चौड़ै करण नैं। जे अै सै बातया साच न हुवती तो आपां ओ जलसो कदै नी मनावंता। जे आपां प्रताप री उण बगत री मनगत नै थोड़ी बोत भी ओळखता हुंता तो अैडी भूल कदै न करता। जे आपां प्रताप री उण पीड नै रँच मात्र भी लखना हुवता तो आपां रै हांथा ओ अनर्थ कदै न हुवतो। अरे प्रताप री सांचेली पीड़ नै लखणो तो दूर आपा तो उण पीड़ नैं उजागर करण-आळी कवी बाणी रै मरम तांईं भी तो नी पूग सक्या। कवी तो बरसां पहला प्रताप रै मार्मिक उद्‌गारां नैं प्रगासतो रीस में भर नैं गायो हो, 'जद याद करूं हल्दीघाटी नैंणां मे रगत उतर आवै', पण आपां जैड़ा मूढ-जनां नै ई ओळी रो सांच समझ नी आयो हो। जे ओ सांच ही समझ आज्यायतो तो ओ सो रोळो अर रोणो ही क्यां रो ? साची पूछो जणां तो हल्दीघाटी री बात नै चेते कर-कर नैं प्रताप री आंख्यां रगत उतरै ही अर हल्दीघाटी रै ईं जलसै नैं चेतै कर-कर नै म्हारी आंख्या में रगत उतरै है।" अर इण कथन री समाप्ती रै सागै ही म्है देख्यो कै बांरा नैण ही नी आखो मूण्डो ही सात्विक रोष अर चारणी रीस सू रातोचुट हुय रैयो हो अर आवेश मे नीसरयोड़ा, 'जद याद करूं हल्दीघाटी' रा बांरा बै बोल रह-रह नैं म्हारै काना टकरावै हा।

विराट जनता : बावनी सत्ता

राजस्थान री राजधानी जैपर। जैपर री एक सड़क री नाव पिंडत जवाहरलाल नेहरू मार्ग। ईं सड़क रो एक चौरावो शहीद स्मारक रै नांव सूं ओळखीजै। एकरसै म्हारा एक भायला बी स्मारक रै सारकर निसरता म्हनै पूछ्यो, "माहटाजी थे ईं शहीद स्मारक नै देख्यो के ?" हूं बारी बात रै मरम नै समझ्या बिना ही झट देणी बोल पड्यो, "देख्यो कै री के बात, अठै तो थे म्हैं मीना मे तीन सौ छप्पन बार ईं रै सारकर नीसरां भळै देखणै मे के बाकी रैग्यो ? ईं मे इसी के खास बात है जको थे मन्नै ओ सुवाल बूझ्यो ?" "की खास बात है जणै तो थानै बूझ्यो।" ठीमर सुर मे म्हारा बै साथी बोल्या, "थानै ठा है कै ओ शहीद स्मारक उण धरती माथै बणियोड़ो है, जठै गाव-गांव अर खंड-खंड हाल भी अलेख् सती, सूरां रा स्मारक ऊभा है। थानै वा में अर ईं मे की फरक को दीसै नी ?" वा रो प्रति प्रश्न हो अर म्हारो पड़ूतर हो, "फरक क्यू को दीसै नी, वां स्मारका में घणकरां मे बो कलात्मक सौष्ठव कठै है जको कै ईं स्मारक मे है। मरतै मिनख री पीड ईं मे तो समूण्ठ बोलै पण वां मे आ बात कठै ?" म्हारो ओ जवाब सुणनै बै पूठा कैवण लाग्या, थे साची कैवो हो, 'बांरो अर ईंरो के मुकाबलो अर मुकाबलो हुवै भी कठै सू, ओ परायी धरती री नकल है, उधार लियोड़ी अकल रो दरसाव है अर वै निज री धरती री उपज है, अन्तर रै अजस रो प्रगास है। ठीक है वांमे वो कलात्मक सौष्ठव कोनी जको कै थानै ईं में निजर आवै, इण रै बावजूद बै आपरी सादगी में सांचा तो है, आपरी संस्कृति री गैरी ओळखाण लियां तो ऊभा है, पण ईंमें आपारी जीवन्त सस्कृति रो संस्पर्श कठै ? थे खिणेक तो सोचो, कै अठै रै सूरमा रो सुभाव के है, बांरी साख-सोभा कै है, जिनगानी बाबत बांरो नजरियो कै है अर जिन्दगी अर मौत खातर बांरो सोच कै है, बांरी दीठ कै है ? जिण धरती रा सूरमा "मरणै नू मगळ गिणै, समर चढै मुख नूर" आळै सुभाव रा है, जका मरण नै

मोटो तिवार मान नें चालै, जूद्ध रो नांव सुणतां ही जिकण री अंग-अंग उछाव सू फरूकण लागै, जिकण रो नांव सुणतां ही पिसणां रा प्राण कांपै, वा सूरा रा वां वीरा रा स्मारक भी वारै सुभाव अर चिरत मुजब हुंवणा चाहीजै के नी ? अरे ! ओ कै ? नीची नाड़ गेरयां, मुण्डा लटकायां, हाथ्यां-थाम्यां मिनखां रा पूतळा नैं आपां वां जुझारां री स्मृति रूप थापां। आ पूतळा नें देख नैं देखणियै रै मन में वा सूरा रै प्रति कांई भाव जलमै ? ओ स्मारक अठै री परम्परा सू साव खिलाफ जायनैं अठै रै जुझारां री कैड़ी पोची इमेज बणावै ? ई रै विपरीत थे जूझारा रा जूना स्मारक तो देखो। साधारण-सू-साधारण भाटै माथै आड़-सू-आड़ सिलावटा रै हाथां उखे-रयोड़ा वारा रोबीला चैरा देखणियै रै मन में वीरता, उछाव नें उमंग रा भाव जगावै। घोड़ै माथै शान सू भालो का तलवार थाम्यां बैठयां रा वारा चित्राम कैडा फूठरा नें कैड़ा प्रभावी लखावै। इयां ही सतियां रा देवळयां भी नो वारै सत अर तेज नें प्रगासै। दो पग सामै देय नैं उछाव अर उमंग सू मौत सू भेण्टा करण नैं जांवती वां सतियां री गैरी आस्था अर द्रिढ विश्वास री अभिव्यक्ति हुई है वां देवळयां में। वांरै ओळू-दोळू ओक्योड़ा चांद अर सूरज री छिब जीवण रै प्रति वांरै नजरियै नै दरसावै। वै जीवण में उजास नें उजळता रा हामी हा, आसा नें उछाह रा संगी हा अर सुतंत्रता नें स्वाभिमान रा कामी हा अर अैड़ा सूरां री, अैड़ी सतियां री सन्तानां आज भी रणखेत में वां उजळ परम्परावां नै शान सू निभावै। वां में आज भी वो ही सूरापो है वो ही तेज है वो ही पोरुष है अर मातभोम खातर या ही श्रद्धा नें वो ही समर्पण है। अैड़ा आपां रा सूरमां, अैड़ी आपां री परम्परावां नें फेरूं आपां इसा खोटा नै कूड़ा स्मारक क्यू ऊभा करां ? बात सानी है कै न तो आ स्मारकां नें ऊभा करणआळी सत्ता कने आपरै सांस्कृतिक वैभव नें ओळखणआळी दीठ है अर न ही आपां जैड़ा सामा-जिकां नें इतो चेतो है कै संस्कृति रै नांव माथै बणणआळी अैड़ी अपरोगी नें भूण्डी वातां रो जम नें विरोध करां। वात दोरी लागसी पण है साव-सोळा आना सांच कै आज दो-च्यार अपवादां नें छोड़'र सत्ता अर समाज दोनू ही संस्कृति कानी सूं साव सूना हुया बैठया है। म्हारो तो था सू इतरो ही कैवणो है कै थे-म्हे जिसा आज रा बुद्धिजीवी वाजणिया मिनख

आं सैं बात्यां माथै थोड़ी गैराई नैं ईमानदारी सूं गोचा-विचारां नैं सामरथ भर काम करां।"

थां भितर री बात सुण नैं म्हारी तो आंख्यां सी खुलगी। जद-जद भी थारी बात्यां नैं चितारूं तद-तद ही नूवा-नैं-नूवा विचार सामैं आवैं अर आं बधता विचारां माथैं ही आ बात्या लारैं छिप्योड़ो थारो दरद भी ओळखण में आवैं। आपा आपणीं भासा, आपणैं साहित अर आपणी संस्कृति बाबत चिंता गाफल हा इण रो पतो तो एक-एक बात माथैं विचार करयां ही साचळसर लागसी।

जठै तांई सत्ता अर सस्कृति रैं सम्बन्धा री बात है, राज सरकार नैं अैंडी बात्यां नैं लेयर सोचण री फुरसत कठै? साची बात तो आ है कै बा सस्कृति री रिछपाळ का बधोतरी जैंडी बात्यां नैं गभीरता सूं लेवैं ही कोनी। उणरै खातर तो भासा, साहित, कळा अर सस्कृति अैं सैं दो नम्बर री बात है क्यूकै आ सैं बात्यां रो बोट अर कुडसी सूं कोई सीधो नातो कोनी। जनता आं बात्यां नै लेयर कदै बोलैं न बतळावै फेर क्यूं वा आ सगळी बात्यां खातर मगजपच्ची करै। कदै जद कै नेतावां नै जनता सूं सीधो नातो जोड नैं भावात्मक एको थापण री दरकार ही वां जनभासा रो मारो लियो। पण अबै बैं हालात तो रैया कोनी। वो तो आजादी सूं पैलां रो बगत हो जद कै जमनारायण व्यास अर हीरालाल शास्त्री जैड़ा नेता मायड भासा में मोकळा नैं मोकळा गीत रच'र, छापा काढ'र, पोथ्यां लिख'र जनता सूं सीधो रिश्तो कायम करचो। ओ बो बगत हो जदकै जनता अर नेता एक हा। जनता रो दुःख-दरद नेतावां रो दुःख-दरद हो अर नेतावां रा आदर्श जनता रा आदर्श हा। उण बगत बांरी शक्ति स्रोत जनता रो हेत नैं प्यार हो, बीरो विस्वास नैं नेह हो, पण आज तो बात्यां जमा उलटगी है। काल तांई जका कुड़सी रैं खिलाफ हा वैं ही आज कुडसी रा मालक है अर कुडसी हाथ आतां ही आंनैं ओ आतम्ज्ञान हुयगो कै बिना त्याग अर तप रैं, बिना सेवा अर बलिदान रैं जैं कुडसी नैं आप अर आपरैं बेटां-पोतां खातर अगेज नैं राखणी है तो जनता नैं जागण ही न दयो। जनता जाग्यां ही फोडा है। बा न्याव नै सांच री बात करैली, हित नैं कल्याण री बात करैली, विकास नै बधोतरी री माग करैली अर अैं सैं

व्हार्यां भला मत्ता नैं कद राम आवै। खास करनैं उण मत्ता नैं जिण री मोड़-मिजाज सामन्ती है, जिण रा संस्कार सामन्ती है अर जिण री मान-सिकता सामन्ती है। इं सू भी इधकी बात आ है कै जकी मत्ता होळै-होळै जनतान्त्रिक मूल्यां नैं छोड़'र तानाशाही कांनी वद रैयी, उण सत्ता सू आपां अैड़ी अपेक्षावां भी क्यूं करां ? ओ देस रो मोटो दुरभाग कै जिण जनतन्त्र खातर, जिण प्रजातन्त्र खातर लाखू-न-लाखू लोग आखी उमर अणमीत रा फोड़ा भुगत्या अर हमता-हूंसता आपरै प्राणां री आहुति दे दीनी, उणी देस में स्वराज आयां बाद, स्वतन्त्रता आयां बाद जनतान्त्रिक मूल्यां री सळरी नैं मैठो माज जमण री ठौड़, व्यक्तिवाद नैं वदायो मिल्यो जको कै राजतन्त्र का तानाशाही रो चरित्र है जनतन्त्र रो नीं।

साची वात तो आ है कै जे आपांनैं इं देस में जनतान्त्रिक मूल्यां री नीव ऊण्डी-नै-ऊण्डी लगाणी ही तो आपां जनतन्त्र री मूलाधार जनता नै कदै न विसरता। उण जनता री वाणी री सम्मान करता, उण में रच्यै साहित नै सिरमौर मानता, उणरी भावनावां री कदर करता, जुगान-जुग सू चालती वीरी सांस्कृतिक परम्परावां नै गरवनै गुमेज सू धारता-बचा-रता, वींरी रिछपाळ मे लागता, वीनै ओप' सजाता-संवारता अर साथै-साथै जुगानुकूल नूवै आदर्शां अर मूल्यां खातर उणनैं संस्कारित करता ! साची ही जे शासन अर मत्ता री ही मायड़ भासा री न्यारी निरवाळी अका-दमी बण ज्यांवती, टाबरां री भणाई-गुणाई रो माध्यम जनभासा हुंवती, अठै रै विश्वविद्यालयां मे जनभासा अर उण में रच्यै साहित नैं भणण-भणावण रो सान्तरो क्रम चालतो, अर जन संस्कृति रा संवाहक लोक-कलाकार दर-दर री ठोकरां नीं खावता अर न ही अठै री सांस्कृतिक परम्परावां रो अनादर नै तिरस्कार हुंवतो।

सत्ता री आ नंगी उपेक्षा म्हारी चिन्ता रो विषय नी हुंवती जे अठै री जनता अर अठैरा बुद्धिजीवी इण मामले मे जागरूक हुंवता। अफसोस तो इणी वात रो है कै सत्ता री मान्त अठैरा बुद्धिजीवी आपरो फरज सावळ-सर को निभायो नी। बुद्धिजीवियां रो एक वरग—जको कै साहितकारां रै नांव सूं ओळखीजै—मोटे मंच री चावना सूं मायड़ भासा नै छोड'र हिन्दी सू जा जुड़्यो। यूं राष्ट्रभाषा हिन्दी सूं जुड़णो कोई अपराध तो कोनी

पण एक दीठ सू गळत जरूर है । खास करनै उण स्थिति मे जद कै आप इण रै कारण आपरी मायड भासा नै हेय निजरां सू देखण लागा अर उण री अवहेलना अर अवमानना करण लागो । हिन्दी सू जुड'र भी मायड भासा नै आदर सू अंगेजो तो किणी नै ही उजर आपति कोनी ही । इणी भान्त हिन्दी मे लिखता थका भी आपरी धरती सू सैठो लगाव राखता, आपरी सस्कृति री सांची मे असली ओळखाण लोगां सामै धरता तो किणी भान्त रो अफसोस नी हुंवतो । पण दुख तो इणी बात रो है कै हिन्दी मे लिखणिया म्हारा घणखरा वीर आधुनिकता रै जोश में जो की लिख्यो उणरो सम्बन्ध ई धरती अर उणरी साधारण जनता सूं नीं जुड पा रैयो है । उण साहित मे अठै री माटी री गन्ध नी ही, अठैरी संस्कृति री सांचेली तस्वीर नी है बल्कि उणरी ठौड काळां री मार स्यू दाझ्योड़ी अठै री जिनगानी नै भूण्डैनै कुत्सित रुप में राखनै भुनावण री गहित चेस्टा बेसी ही ।

हिन्दी रा हिमायती साहितकारां सूं भिन्न जनभासा सू जुड्या साहितकारां री गत माथै निजर पसारता चालां । जनभासा का मायड भासा में लिखणियां साहिकारां मे भी पाव-दम नै छोड'र घणकरा साहितकार मंच रै मोह का मत्ता रै स्वाद मे अैडा उळझ्या कै वै आपरी असली ओळखाण ही गमा बैठया । अैडा साहितकार जन-जन री पीड नै, बांरी आसा अर आकाक्षा नै कठै तो अंगेजै हा अर कठै उकेरै हा । आं सूं जनजागृति अर नेतृत्व री आस करणी ही बेकार ही । जद कै ओ अैंटो वगत हो जिण वगत आ साहितकारा नै ई धरती री सेंसू घणी जरूत ही, क्यूं कै ओ सक्रमण काल हो । *अठै री घणकरी जनता साव अणपढ अर प्रजातान्त्रिक व्यवस्थावां अर* मूल्या सू साव अणजाण ही । उण वगत उण नै अैडै मार्ग दर्शक री जरूत ही जको वीनै सूवै अर चोखै नै बपरावण नै त्यार करती अर माथै ही जूतै मे जो की सानरो, साचो अर सानतो हो वी माथै द्रिढता सूं कायम रैवण रो हूंस जगातो नै होसलो वधातो । पण अफसोस कै उण वगत रा घणकरा साहितकार आपरै उण दायित्व नै नी समझ्यो, नीं सभाळचो, खैर ओज्यूं भी की खास मोड़ो हुयो नीं । ओज्यू भी आपां चेत नै इण दिसा मे सावधानी सू कदम वढावा तो बौत की कर सका । अठै आ वात लिखतां तो

खुशी है कै आज दिन दूणां नै रात चौगुणा साहितकार जनभासा सू जुड़ता जा रैया है, पण हाल भी करडी मैनत, पूरै संजम अर अटूट उछाव री दरकार है। नूंवी पीढी रै लिखारां री सैं सू मोटी सीव हो आ है कै हाल वांनै आपरी जूनी साहितिक परम्परावां री भरपूर जाणकारी नी है अर बिना उण जाणकारी रै उण रो उछाव आधो है अधूरो है।

साहितकारां रै बाद बुद्धिजीवियां रो दूजो तबको शिक्षाशास्त्रियां वकीलां अर बीजै-बीजै नौकरी पेशाआळा रो वर्ग। ईं वरग नैं अठै री संस्कृति नै लेय'र की खास चिन्ता कदै नी ही। ईं रो कारण भी साफ हो कै आं में सू घणकरा राजस्थान सू बारै रा रैवासी हा, वैं तो फकत रोजी-रोटी री जुगाड़ मे अठै आयनै बासो लियो, वांनै अठै री संस्कृति सू के लेणो-देणो हो। जियां आप-आपरै गोरख धन्धै में मस्त भारत रै कूणै-कूणै में पसरयोड़ा प्रवासी राजस्थानी उण-उण हलकै री संस्कृति सू जितोक लगाव रावै बस बितो सो ही क सम्बन्ध आं नौकरियां रो राजस्थानी साहित अर संस्कृति सू हो। अैड़ा लोगां सू भी स्थानीय संस्कृति रै उन्नयन का उत्थान री आस राखण ही गळत। हां, आज हालात बदळ रैया है अर आं सैं हळकां मे स्थानीय लोग दिनो-दिन बधता जा रैया है अर अब ईं वरग सू आ अपेक्षा कर सकां कै वै साहित अर संस्कृति रै महत्व नैं समझता थका आपरी भूमिका ईमानदारी सू निभावैला।

बुद्धिजीवियां रै ईं धड़ै रै बाद स्थानीय प्रतिभा रै एक अैड़ै वरग कांनी ध्यान जावै जको रात अर दिन माया लारै दौड रैयो है। आं लोगां री तीखी बुद्धि अर संजोरी प्रतिभा रो थोड़ो-घोत भी उपयोग जे ईं छेतर मे हुवतो तो पक्कायत ही स्थिति आज अैड़ी निराशाजनक नीं रैवती। म्हनै ध्यान है कै भरतिया-जुग रा दो-च्यार लोगां ही आपरी बगत ईं नै देयनै राजस्थानी रो कितो वडो उपगार करयो हो। पण लाखां रै बधतै लेखै रै बीच ईं वरग नै तो भासा, साहित नै सस्कृति जैड़ी बातां माथै सोचण नैं फुरसत ही कठै है ? हां अैडा लोगां नैं कदै दूर दिसावर बैठयां ईं धरती री ओळू आवै जणै पेशेवर राजस्थानी गीतकारां रै मूण्डै हळका-फुळका मनोरंजक गीत सुण नै मन री आ रळी पूरै।

ईण भान्त च्यारूं कांनी सूं बिसराइज्योड़ी अठ री आ संस्कृति जीवै

तो, खासकर नैं बां लोगां रै पाण जका क अणभमक्ष का अणभणिया बाजै। हां वै भी सावचेत हुय नै ई री रिछपाळ में नीं लाग रैया है बस सहज संस्कारवश ही वांरो ई सूं इतो गहरो जुडाव है। पण जे आपां अब ई दिशा में ध्यान नी दियो तो मन्नै लागै कै ओ मोटो आधार भी होळै-होळै कमजोर पड़तो जावैलो। अठै रीं जनता लोक सहित लोक परवां, मेळा-मगरिया अर धार्मिक उछवां रै मिस ओज्यू भी संस्कृति सूं सैंठो जुड़योड़ी है, पण ओ जुडाव भी होळै-होळै निमळो पडतो जा रैयो है अर अणचाई सेळभेळ लोक संस्कृति रै चावै अर मर्यादित रूप नैं मिसळण में लाग रैयी है।

जठै ताई लोकमहित रो सुवाल है आज होळै-होळै, दिनाध्या टावरियां नैं आपरै ओळू-दोळू बैठा नें मोठी-मधरी काण्या रै मिस संस्कारित करणआळी दादया-नान्या री गिणती लगोलग घटती जा रैयी है। नूवें ढाळै हयघोड़ी नूवी-भणाई-गुणाई भण्योडी मा-बैनां कनैं न तो आ काण्या रो अखूट खजानो है अर ही न बा कने ई खातर फुरसत अर अभिरुचि। ह्या ही धूई रै चौतरफ बैठ'र चिलम री चसकारा अर अमल री मनवारा रै बिचै मगन मोटयारां रै हुंकारै आगै बधती बातां रा निजारा भी विरल हुवता जा रैया है। अबै न तो पेसेवर कांणी सुणावणिया रैया अर न ही बांनै पोखणआळा सामन्त अर श्रीमन्त रैया।

लोककाण्यां रै बाद बात आवै लोकगीत नैं लोकसंगीत री। इण पख माथै विचारां तो लागै कै अठै रो पूरो जीवण ही गीत-संगीतमय हो। झांझरकै घटी रै घमरकै गूंजणिया झीणा-मीठा सुर कानां में मिसरी घोळता, मिंदर-मिंदर झालर रै झरणाटै भाव विह्वल हीयै सूं उमडता हरजस पूरै वातावरण नैं सांवरियै री अखूट मैमा सूं अभिभूत करता अर दिन भर री सतरी मैणत रै बाद भोगती रात रै शान्त-स्निग्ध वातावरण रै मांय बायरियै री लैरां तिरता गीतरेण्या रा ऊंचा तीखा बोल हिवड़ै नै रस सूं आप्लावित करता।

अठै तो साल रा तीन सौ पैंसठ दिन ही उछब हा। आखो जीवण ही गीत-संगीतमय हो। कदै किणी रै पांवणै नै विलमाइजतो, कदै किणी रो धेनड़ियो दुलराइजतो, *कदै देवरियां सूं मीठी मसकरयां ही तो* कदै बीरोसा वारणा, कदै बनै-बनी रा लाड-कोड हा तो कदै जच्चा-राणी री रळी

पूरीजै ही। कदै जेठसा मू अरदास ही तो कदै बनसा मू मनुहारां। कदै जात-झडूलो हो, तो कदै तीज-तींवार हा। कदै देई-देवतां रातीजोगा हा तो कदै जमा-जागण हा। कैवण रो मतळब ओ कै अठै तो नित-हमेस ही की-न-की मिस मोटा-मधरा गीत गूजता ही रैवता।

गीत जैडो ही बहुरंगी ने बहुआयामी हो संगीत रो पख। कठै ढोल तो कठै डामकी, कठै डेरू तो कठै डफ, कठै रावण हत्थो तो कठै सारंगी, कठै अळगोजो तो कठै बांसरी, कठै खडताल तो कठै मोरचग, कठै नड तो कठै पूगी, कठै माटा तो कठै नगाडा भान्त-भान्त रा साज अर भान्त-भान्त रो संगीत। मैं रळमिळ नै जिनगानी नै अैड़ी रंगराती करता कै सारै सर्वेया काळां री करड़ी छायां में भी कठैं हताशा अर निराशा नीं ही अर छातै अभावां रै कठै कुण्ठा अर कड़वास नीं हो।

पण आज होळै-होळै स्थिति बदळ रैयी है, लोक-काण्यां बाबत घटती अभिरुचि अर जाणकारी री बात पैलां ही हुय चुकी है। अबै सामन्तां अर श्रीमन्तां री छतर छिया में पनपणिया पेशेवर बातकारां री बात तो बावड़ण मूं रैयी। हां ई रो एक नूवो प्रयोग जरूर देखण नै मिल्यो। विजयदान देथा री काण्यां रो वाचन भण्या-अणभण्या लोगां री मण्डळयां मांय मोकळी बार हुयो। ओ प्रयोग एक सुखद अहसास हो। इणी भान्त नानूराम संस्कर्ता री काण्यां अर अन्नाराम सुदामा रै उपन्यासां रा श्रोतावां बिचै वाचन रा प्रयोग खासा उछावकारी रैया। अैड़ा सिमरथ रचनाकारां री रचनावां आज भी आम आदमी नै सामयिक समस्यावां सू जोड़ण में सक्षम है। अैड़ै प्रयोगां री सफलता रै लारै जठै खुद रचनाकार री जन-जीवण सू ऊण्डी ओळखाण अर सैठी सहानुभूति है बठै राजस्थानी भासा में जुगान-जुग ूं बात कैवण री आपरी लकब रो प्रभाव भी कम उल्लेखणजोग नी है। मन्नै भरोसो है कै जे आपां टाबरियां री स्कूलां रै मांय, लुगायां रै भूलरै अर मोटयारां री मण्डळयां मांय आधुनिक चेतना री संवाहक सिमरथ रचनाकारां री अैड़ी रचनावां रो सिलसिलो चालू कर सकां तो एक मोटो काम हुय सकै।

लोक काण्यां रै पछै बात आवै लोकगीतां री। हाल गांव-गांव अर गळी-गळी, उछव, परव अर अंढै-मैंढै आंरी मीठी मधरी रागळयां तो

सुणीजै पण आंरै विचै-विचै को अण ओपता अर अण खांवणा सुर भी गूंजण लाग रैया है। अै सुर है राजस्थानी लोकगीतां रै नांव मार्थ घड़ियोड़ा भूण्डा, फूहड़ अर एक हद ताईं अश्लीलता री सीव में आवणिया राजस्थानी रिकार्ड्स रा। दिनो-दिन वधतो आंरो चाळो मन मे भय उपजावै कै एक कांनी फिल्मी गीत लोक संस्कृति में भिसळाण लाग रैया है अर दूजै कांनी लोकसंस्कृति सूं साव अजाण आज रो भण्योड़ो युवक-युवतियां रो समाज जदा-कदा लोकसंस्कृति रो प्रसग उठै जद आ गीतां री फूहड़ अर निलज दुनियां नैं ही राजस्थानी लोक संस्कृति रो प्रतिरूप मान बैठै अर ओ डर तद औरूं गहरीजण लागै जद कै आकाशवाणी जैड़ा सिरकारू संस्थान भी आंनै मानता देवण लागै। ई मोकै म्हनै म्हारै एक डॉक्टर मितर री बात चेतै आवै। बीरै एकर राजस्थानी लोकगीत सुणणै रो चाव जाग्यो अर आं गीतां रै नांव मार्थ प्रचलित रिकार्ड्स सुण-सुण'र बो मन्नै कैवण लाग्यो कै भायला और की हुवो का ना हुवो आपांरा लोकगीत सैक्स रै मामलै में घड़ा खुला नैं बोल्ड है अर उणरी बीं धारणा रा कारण हा आं गीतां मे आवणियां, देवर-भाभी, काकी-जेठूत अर मामी-नाणदै आद रा रा अमर्यादित अर द्विअर्थक सवाद।

अफसोस व्यावसायिक मानसिकता आपरै ओछै सुवारथां रै खातर लोक संस्कृति रै सार्थ जोरांमरदी करणै लाग री है अर आपां निपट उदास ही नीं बैठयां हां बरन आपां मांय घणकरां नैं ओ भी पतो नी लाग रैयो है कै उणरी संस्कृति सार्थ की जोर-जबरदस्ती भी हुय रैयी है। मानू कै सैक्स जीवण रो सासतो सांच है पर फरक उणरी अभिव्यक्ति नै लेय'र है। एक कांनी सरस शृगार रै मांय उणरी निर्मळ अर मर्यादित धारा बैवै अर बीजै कांनी बीरो उछांछळो आवेश जीवण री मर्यादावां ही नीं भांगै पण उणरै सागै उणनै मैलो, गूदळो नैं अस्वस्थकर भी बणावै। एक उदाहरण सामै है। मोटयार री जात पराई-लुगाई कांनी ताक्यां-झाक्यां बिना रंजै कोनी। मोटयार री इण कमजोरी सूं नूबी-नवेली बीनणी नैं ब्याव रै दूजै दिन ही देई-थानां घूमतां गीतां-गीतां मे वाकफ करवादै, पण कित्ती चतुराई अर सुघराई सूं—

चीड़ी तनै चावळिया भावै, गोरी तनै चावळिया भावै
चदा-वदनी नार पियो पर नारयाँ रै जावै
दाड़्यू सूखै डागळै जी ढोला, घर सूखै गिगनार
गोरी सूखै बापरै जी ढोला घर बैठ्यां री नार।
चीड़ी तनै चावळिया भावै……

अबै देखो राजस्थानी लोकगीत रैं नांव बीच बाजारां बाजतै इण गीत रा बोल—

मोड़ा वेगा आवो छैला दूध राखू भाण्डाँ में
तो ही थारो जीवड़ो पराई राण्डाँ मे कै म्हानै उत्तर दद्यो
वा ! वा ! म्हानै उत्तर दद्यो
बाँध नै मत बाळो सायबा कै म्हानै उत्तरदद्यो।

ओ ऐकलो उदाहरण कोनी। अैड़ा तो मोकळा नै मोकळा गीत आज घड़लै सू राजस्थानी लोकगीतां रैं नांव माथै घड़ीजण लाग रैया है बापड़ा असली लोकगीतां री सान बिगाड़ रैया है। आज जरूत है लोक संस्कृति रै नांव माथै पागरती ईं दुष्प्रवृति नैं जड़ामूळ सू उखाड़ फैंकण री।

अीं व्यावसायिक मानसिकता रै अलावा आपांरी लोक संस्कृति नै दूजो गैरो झटको खुद रै ही लोगां कांनी सू झेलणो पड रैयो है। इणरो कारण नूवी पीढ़ी में लोक संस्कृति बाबत बधती अज्ञानता अर उपेक्षा है। ज्यू-ज्यू भणाई-गुणाई रो प्रचार-प्रसार बधतो जारैयो है त्यू-त्यूं आज रो भण्यो-गुण्यो तबको संस्कृति री आ झीणी-मधरी प्रवृतियां सू अळघो हुवतो जा रैयो है। ईं सांच नै उघाड़ण नै दो-एक उदाहरण सामैं राखूं हूँ।

कुँवरसा सासरियै पधारया है, हरखावती लुगायां 'हाँ रे बाला इण सरवरियै री पाळ' गीत उगेरै अर इणरै सागै ही कुँवरसा रो कोई एक मोडरेट भायलो साथै ल्यायोड़ो टेप बजावणो सरू करदे, ईं उदघोषणा रै साथैं कै लुगायां री ईं कांव-कांव सूं बचणै रो ओ ही सैं सू बढ़िया उपाव है।

धणी-लुगाई बाखळ मे ऊभ नैं कोई सरम रागली छेड़ै कै उण सू दैलां ही आज रो युवक वांनैं दुतकार नै बारै काढण री सोचैं अर जे थोड़ो-बोत तमीजआळो हुवै तो फुरती सू घर सू रोटी-टुकड़ो का की दाणा देयनैं

लारो छुडावण री तजवीज करै। उणरै ई एवसन सूं यूं लागै कै जे क्षणजाणै में ही आं लोक कलाकारां रा दोय-च्यार सुरीला बोल कानां पटज्यावैला तो भारी अनरथ हुय जावैलो।

ब्याव हुयगो है बनड़ी नैं सीख दरीजण लागरी है अर ई मोकै लोक गीतां री अथाग सम्पदा सूं साव अजाण बनडी री सखियां एक-आध मिण्ट तो आपसरी में खुसर-पुसर करै कै किसो गीत गावां, किसो गीत गावां अर पछै गाणो सरू करै—" छोट बाबुल का घर मोहे पी के नगर आज जाना पड़ा।" उण वगत लागै कै आं काल री छोरयां नैं जे आपरी परम्परावां री थोड़ो बोत भी ज्ञान हुवतो तो वै ई मोकै 'कोयलडी' जैड़ो मार्मिक गीत छोड़नै कोई फिल्मी गीत नी उगेरती अर उणरै बाद भी बनड़ी री तरफ सूं अरदास करती तो 'अेकर मारूजी घुड़ला पाछा घेर' री ही अरदास करती। दूजी किण ही बात री नी।

ऊपर लाअै तीनूं उदाहरण ही म्हारी पैली बात रै प्रमाण रूप है अर अैडा दसूं उदाहरण औरूं भी दिया जासकै है पण वांरी अठै दरकार कोनी। इत्ती सी बात सूं ही आपां नै ओ समझ लेंवणो चाहिजै कै नूवीं पीढी री ई वृत्ति में बदळाव जरूरी है। इण खातर उपाव करणा पड़ैला। एक कांनी उपेक्षा रै कारण लोप हुवती लोक संस्कृति री विविध प्रवृत्तियां नैं संरक्षण अर प्रोत्साहन देवणो पड़ैलो तो बीजै कांनी विकृत हुंवती जन रुचि नैं सचेष्ट हुयनैं सुधारणो पड़ैला।

जठै तांई लोक संस्कृति री संवाहक विविध प्रवृत्तियां रै संरक्षण री बात है म्हानै ई बात रो अजस है कै लोक कला मण्डल उदैपुर अर रूपायन संस्थान बोरूंदा जैडा गैर सिरकारू संस्थान इण मामलै में पैल करी है। एक कांनी स्व० देवीलाल जी सामर पूरी निष्ठा, लगन अर उछाव सूं ई काम में लाग्योड़ा हा अर आज भी डा० महेन्द्र भानावत जैडा वांरा चेला वित्ती ही लगन सूं ई महताऊ काम में लाग रैया है तो बीजै कांनी विजयदान देथा अर कोमल कोठारी भी मोकळो सरावण जोग काम करयो अर कर रैया है। लोक कला मण्डल जठै लोकनाट्य अर कठपुतळी कळा रै संरक्षण अर यथार्थ रो शानदार काम करयो है बठै रूपायन संस्थान लोक साहित अर लोक संगीत रै संकलन, संरक्षण अर प्रकासण री

महताऊ काम कर रैयी है। ओ स्व० सामरजी री सूझ-बूझ अर मैनत रो ही नतीजो है कै अठै री कठ-पुतळी कला देस-विदेस में घणी चावी हुई नै ठौड-ठौड़ राष्ट्रीय नें अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीत्या। इंयां ही आई कोमल जी रै कारण अठै रै लोक संगीत नें सान्तरो मंच मिल्यो अर लंगा वन्धु जैड़ा लोक गायका नै देस-विदेस में प्रमूत असनै हेत मिल्यो। लोक संस्कृति बाबत गैर सिरकारू क्षेत्र में चाल रैयी अै प्रवृत्तियां शुभ नै अनुकरणीय है पण इण बगत मनै तो फेरूं सिरकारू रीत नीत अर सत्ता री मानसिकता नै चेतैकर भाळ आरैयी। ई सुतन्त्रता दिवस री ही बात है। 15 अगस्त रै सिंझ्या री बगत राज्यपाल महोदय कांनी सू राजभवन में जळपान रो आयोजन करीज्यो। राज सरकार रा मन्त्रीगण मोटा-मोटा सरकारी अैलकार, अर शहर रा जाण्या मान्यां लोग उण मोकै भेळा हुया। हजारूं लोगा री ई भीड़ रै खातर जळपान री व्यवस्था सागै मनोरंजन री व्यवस्था करीजी अर इण खातर राजस्थान रा बा ही प्रसिद्ध लोक गायकां नै न्यूत्या जका कै देस-विदेस रै ठावा-ठावा मंचा सू राजस्थानी लोक संगीत रो प्रदर्शन करनै उणरो वर्चस्व थाप्यो हो। इती सो बात सुण्यां बाद हरकोई ओ ही सोचैलो कै चालो देर-आयद दुरुस्त-आयद। विदेशियां री निजरां पड़्यां रै बाद ही सही अठै रा लोक कलाकार सरकार री नजरां पर तो चढ्या। वांनै ओ सम्मान तो बखसीज्यो, पण नी पूरी घटणा सुण्यां बाद आपको म्हारी ही तरै रीस नैं रोस मे भरनै कैवोला कै ओ बा कलाकारां अर वी कला रो सम्मान नी वरन मोटे सू मोटो अपमान हो। हुयो यूं कै हजारूं लोगा री उण भीड़ में कलाकार तन्मय हुयनै आपरी कळा रो प्रदर्शन कर रैया हा। अर सत्ता अर सम्पति रै मद मे डूब्योड़ी वी भीड़ माय सू कोई दस-पान जणां ही तो बांरै कार्यक्रम नै ध्यान सू नी सुण रैया हा। राजभवन रै खुलै विशाल प्रांगण में पांच-पांच, सात-सात री टोळयां में ऊभा मिनखां रा झूमका आपरी ही वातां में मस्त हा, वांरै भावू तो मच माथै बैठ्या कलाकार फालतु में ही गळो फाड़ रैया हा। हूं पूछणो चावूं हूं कै जठै कळा री कदर करणिया लोग ही नी हा बो हृदयहीनां खातर अैड़ो आयोजन राख्यो ही क्यू गयो? अर बात इती ही नी ही झाळआवण-आळी बात तो आपनै अब बता रैयो हूं। आं कलाकारां रो एक-दल

आपरो कार्यक्रम पेश करनै मच सू उठ'र मांयनै गयो कै वांनै प
बुलाइज्यो कै लोगां रो मन वात्यां सू धाप्यो कोनी अर थे पाछा आ
उणां अपमानजनक दौर सू गुजरो। बापडा भोळा अर सीधा लोक गा
पूठा मच माथै आयनै आपरी कळा रो प्रदर्शन सरू करयो, वांरै गीत
एक दो बोल भी पूरा नी हुया हुवैला कै वांनै यू कैयनै मंच सू बीच मे
उठा दिया कै मोटा मालक कह रैया है कै, वा, वा रैवण दयो। वा
कलाकार आपरो सो मूढो लेयनै हेठा उतरग्या। कैड़ा अपमानजनक
कष्टदायक हा वै खिण। ओ वां लोक कलाकारां अर वांरी कला रो
अपमान नी हो वरन् लोकनै लोक संस्कृति रो भी ठाडो अपमान हो। म
रै हाथां लोक परम्परावां रै अपमान री बात सू म्हारा वै भायला ब
पोळायी अर सत्ता रै हाथां लोक संस्कृति रै अपमान री बात सू बात समे
तो आप सबसू फगत इत्ती सी अरज कर रैयो हू कै सत्ता री ठोकरां
रूळता आपां उठां अर इत्ता ऊंचा उठां कै आपांरै विराट रूप सामै बाम
सत्ता मळै अैड़ी हिमाकत री बात कदै न सोचै कदै न विचारै।

रूप रूड़ौ रोहीड़ौ

टाबर थका एक कैंबा सुणी, "रूप रूड़ौ गुण बायरो रोहीड़ै रो फूल।" ईं कैंबा नै सुण नै म्हारै मन में रोहीडै खातर कीं-कीं अनादर अर कीं-कीं हेयता रा सा भाव ज लम्या हा। ईं कैंबा रो जनक तो रोहीड़ै रै फूल री गन्धहीनता सूं बेराजी हुयो हुवैला पण म्हारो आदर्शवादी बालमन तो आखै गाछा नै फालतू सो मान नै एक अणूती रीस नै अंगेज्या बैठ्यो हो। रोहीड़ै खातर म्हारै मन री बा अणूती रीस अनादर रा बै ओछा भाव उण वगत सैंठै हरख अर लूठै आदर में बदळग्या जद म्हे पैली बार उणरै फूलां नै देख्या।

चेत-बैसाख रा दिन, आकरो तावड़ो, बळ-बळती लूआं। किणी खास काम सूं एक कमतरियै भायलै सागै कोस-दो एक अळघी ढाणी कानी जावै हो। नीचै धरती जगै ही, ऊपर आभो लाय बरसावै हो। खुरड़ खायोड़ी खुपरी-सी सत्वहीन रोही जमा ही बदरंग दीसै ही। सीपळियै री फाड़-सी धोळी-धप्प धरती घणी अणखावणी लागै ही। बगत-बगत री बात है। आ सागी ही धरती सावण-भादवै में कैड़ी फूटरी नै सुरंगी लाग्या करै। च्यारूंमेर पसरयोडी टणकेल धोरां रै बिचै-बिचै उग्योड़ा फोग, बुई, खीप अर भिणियां रा झूमका, ठौड़-ठौड पसरयोडी झाड़क्या, अर वांरै ओळूं-दोळूं पांगरयोडी सेवण, मुरट, अर बूर रै बिचाळै ऊभी खेजडयां अर जाळ्यां सूं लड़ालूम रोही रो रंग ही न्यारो हुवै। सारै ही ऊभा हरया-भरया खेत जिणां में कठै तो बाजरड़ी रा सीटा पून रा लैरका सागै लुळ-लुळ नै ईं धरती नै मुजरो करै, तो कठै मूग-मोठ रा पांगरयोडा बूटा अर दूर-दूर तांईं पसरयोड़ी काकडियें, मतीरियै री वेलां धरती नैं हरी चूनड़ ओढावै अर वांरै बिचै-बिचै खिल्योड़ा श्वेत तिल-पुष्प सुरंग चूनड़ में जड़्या मोत्यां री ओप पावै। उण बगत इण धरती रो रूप सिणगार निरख नै केशव री 'पियरस पूरी मत मयूरी' री उपमा चैतै आवै।

वा सागण ही सुहागण घण सी धरती हुणै एकाकी, ऊदास, दुःखी, दुहागण नार सी लखावै ही। मन्नै लगै हो कै कानाकाचो प्रीतम सुगुणी, सतवंती, सुहागण धरती रो सोळो ही सिणगार किणी चुगलखोर री आळ सूं खीझ नैं खोस लियो है नैं अणूतो ही कोप करतो धरती रै कूंपळ सैं कवळै डोल मैं लाय रा कोरडाँ सूं सपासप सूत रैयो है अर आहत धरती रा निसासा ही लूआँ रै मिस थाखो जिया-जूंण नैं दाझ रैया है। अरे ! ओ काँई ? निष्ठूर प्रीतम रै निर्मम अत्याचार सूं संतप्त निमळी धरणी रै हीयै री दाझ ही काळजो चीर नैं आग रै गोळैं रै अनुमान उछळ पडी है। भावा वेश में भरलै हूं भायलै सूं बोल उठ्यो, "देख ! देख, देख अपमान सूं आहत दुःख दग्ध धरती रै काळजै री आग किसी क हुप्प-हुप्प कर जगै है।" म्हारी बात सुण'र हूं जिण ठौड इसारो करै हो उण तरफ देखतो म्हारो भायलो हँसतो थको बोल्यो कै, "जागतो ही सुपना देखबा लाग्यो का अणूती गरमी सूं थारो माथो चक्कर खावण लाग्यो। अरे बावळा आग कठै ? अै तो फूलाँ सूं लडालूम रोहीडैं रा गाछ है।" उणरी बात सुणताँ ही हूं चिमक'र बोल्यो, "है ! रोहीडैं रा फूल इस्या हुवै ?" अर मारै ही बालपणै सुणी उण कँवा रो स्मरण हो आयो। लाली लियाँ केसरानी रगाँ रा आँ सोवणा फूलाँ खातर बरसाँ ही मन में अंजेजो अणूती रीस खातर अफसोस होवा लाग्यो। अरे। जिण धरती पर फूला रै नाँव माथै आक-कैर री फूलड्याँ टाळर और कोई सो फूल बेगोसी'क नीगै नीं आवै उण धरती माथै अैडा, सोवणा-सुरंगा फूल अर वै भी उण रूत मे जद कै आभै बरसती लाय आगै काचा फूल-पानडा री तो बात ही के ठेठ पाताळ ताइँ जडा पसारयाँ ऊभा व. -पीपळ जैड़ा जंगी गाछाँ रा भी हाल-बेहाल हुवै— मूं सीनो ताणत फूलाँ सूं लडालूम हुय जीवणो मामूली बात नी है। रोहीडैं रा आँ फूलाँ नें देख नैं मन्नै सिरीष रै खातर दीयोड़ी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी री 'कालजयी अवधूत' री उपमा चैते आवै। उणी छण हूं मन में नैहचो करयो कै मन्नै रोहीडैं बाबत पूरमपूर जाणकारी हाँसल करणी चाहिजै। ओ गाछ तो गुणाँ री खाण हुंवणो चाहीजै।

उण दिन रै उण संकळप रै बाद जद हूं रोहीडैं खातर जाणकारी करी तो म्हारो मन एक सुखद आह्लाद सूं भर उठ्यो। रूड़ा रोहीडैं

रा फूल गुणवायरा तो कठै कोनी। आ फूलां रो महत्व जाणै है आयुर्वेद रा ज्ञाता अर ईं गाछ री लकडी रो महत्व पिछाण्यो हो आपांरा बड़का। पुराणै जमानै मे जद कै अठै सीसूं का सागवान जैड़ै काठ रा दरसण दुर्लभ हा उण वगत आपा रै आडो ओ ही काठ तो आवै हो। कोमळता रै सागै सेंठापणो ईं काठ री खूबी। ओ काठ कंवळो तो इसो कै ई काठ ऊपरां कोरणी रो काम जिसो सोरो अर जिसो बढिया हुवै, के करै ओरै आगै सागवान। जदै तो अठै पोळी सूं लेयनै परीण्डै री जोड़यां ताईं अर संतीरा सू लेयनै खूंटया तांईं इण ही लकड़ी रो उपयोग हुयो है। आ सगळी ही चीजा मे कोरणी रो काम इत्तो फूटरो, नफीस नै कलात्मक हुयो है कै देखणियै रै मूण्डै मसै वाह-वाह रा बोल फूट पडै। रोहीड़ै री लकडी माथै हुयै ईं कलात्मक अर बारीक काम नै देख र सहजां ही ध्यान जैसाणै रै मोनलियै भाटेआळा जाळी-झरोखां कांनी जावै परो। बस आं दोनां में फरक इत्तो मौं,क कै एक पारख्या री निजरां चढग्यो अर दूजो हाल गुमनामी रै अंधारै में पड़यो है।

कोमळता रै साथै सैंठापणो ईं लकडी री दूजी री खासियत है, जुगानजुग मेह-पाणी मूं भीग'र लकड़ी जल्दी सैं खराब को हुवैनी। थळी प्रदेश मे तो हाल भी इण काठ री बणी अलेखू जोड़था इण कथन री सच्चाई री साख भरै। जठै मेह-पाणी सू बचाव है अठै तो सईकडां बरसां पैलां बणी चीज भी अैडी लखावै जाणै इणनै कारीगर हूणै घड़नै छोडयो हुयो है। दीवळ तो ईं लकड़ी रै लागै आय कोनी अर मेह-पाणी सूं बचाव हुया पछै ईंरो बिगाड़ जल्दी से पयाऊं हुवै है। पण ही तो आपां रै अठै चोपडै सू लेयर तम्बाकू रै गट्टां तांईं, खूटयां सूं लेय'र रथां अर बेल्यां तांईं, बिलोवणां री मू मैरी लेय'र भान्त-भान्तरी जोड़यां तांईं चोक्या अर बाजोटां सू लेय'र कुडस्यां अर सिंहासण ताईं साधारण मांचा, ढोलियां रा पगां सू लेय'र सान्तरा पिलगा तांईं इण लकडी रो भरपूर उपयोग हुयो है। हा, आ जरूर है कै बण बणावणियै री सरधा अर बणावणियै रै हस्तलाघव रै मुजब ही कोरणी रो काम हळको का भारी हुयो है।

बीच रै बरसां मे अंग्रेजी जोड़यां री चलस सागै सीमू अर सागवान रो चाळो चाल्यो अर इण लकड़ी रो उपयोग एक रकम बन्द सो हुयग्यो।

आज कोरणी रै काम खातर जागी ललक पूरी ई लकडी री याद दिराई है पण इण मे भी वात आ है कै ओज्यू कोरणी कै जूनै काम री ही पूछ वेसी है आज जूनी चीज्यां खातर तो नव कुवेरां मे अणूती ही ललक है अर हुवै भी क्यू नी जद आरा आदर्श पिच्छमी सभ्यताआळा लोग ही आंरै लारै विकना हुय रैया है तो अै भळै लारै क्यू रैवै ! पिछम रा लोग जद अठै री जूनी वस्तुआं नै मू मांग्यां दाम देय नै खरीदै तो आं नव कुवेरां री निजरां मे भी काल ताई री आलतू-फालतू आं चीज्यां रो मोल वदग्यो है । इण रो ही परिणाम है कै आज आ चीज्यां रा सौदागर नगर-नगर अर गांव-गांव घूम-घूम'र अै चीज्यां खरीदै । हूं अंड़ै ही एक सौदागर रै अठै रतनगढ जा पूग्यो । वठै देख्यो कै वीरो पूरी वाखळ ही अटाळघर वण्योड़ी है । वाजोटा पैयां, कुड़स्यां, मोडा, वलरै री जोडघां आद भान्त-भान्त री, वोदी-पुराणी चीजां री नुमाइश सी लग री हो । म्हारो संगळियो जकै रै सागै हूं वठै पूग्यो मनै वतायो कै," अै आं जूनी चीजां रै वोपार सू चोखो पइसो कमायो है । भोळा लोगां सू भांग रै भाव जूनी चीज्यां खरीदनै आनै थोडी ठीक-ठीक करनै बीनै ही पाछी ऊंचै दामां मे दिल्ली, मुबई आद महानगरां मे वैचै । आं जूनी चीज्यां खातर हूणै तो लोगां मे इतो कोड जाग्यो है आ त्यायां नै काणै तो जूनी घडत री नूवी जिनस घडनै बीनै कादै अर रावड़ सू रफड-रफड़'र वोदी वणाणी पडै ।" संगळियै री बात सुण मनै मोकळी ही हँसी आई अर सागै ही जैपर री एक घटना चैते आयगी ।

वठै म्हारै एक भायलै रो भायलो चित्रांम वणावतो हो । आपरै ईं हुनर सू वो जिमां-तिमां कर'र आपरो धाको धिकावै हो, पण भाईडै रै एक इसी विद्या हाथ लागी कै च्यार-छः मीनां में लखपति वणतो दीस्यो । एक'र हूं म्हारै भायलै नै उणरै बी भायलै रै बधापै रो राज पूछ्यो, उणै बो मुळकतो थको बोल्यो कै, "आपांरै देस री छळबुध नै कुण नावडै ? अठै जैपर मे रोज ही देसी-परदेसी सईंकडू पर्यटक आवै । माया सागै खेलतां आं लोगां कनै पइसै री कमी तो आय कोनी । आंनै जूनी चीज्यां खरीदणै रो अणूतो कोड अर ओ म्हारो भायलो जूनी शैली रा चित्रांम वणावण मे अणूतो ही चतरंग, अब ईंरी बधती माया रो कै लेखो ? ओ बजार मूं जूनी दीवळ ग्यायोड़ी हस्तलिखित पोथ्यां ल्याडै, जुगत सू वांरा आगर

मिटावै अर बीं कागद माथै ही मेवाड़ कलम, किशनगढ री कलम, बून्दी री कलम, पहाड़ी कलम का औड़ी ही किणी चावी कलम री ख्यात रचना री हू-ब-हू नकल उतारै अर जूनै कागद रै कारण चित्र हाथूं-हाथ सईकड़ा बरस जूनो बण ज्यावै । अबै इस्यै एक चित्राम रा पाँच सौ ल्यो तो थोड़ा अर हजार ल्यो तो थोड़ा, सामलै रै चित्त चढणै री बात है । अबै यूं ही बोलो ओ प्यार-छः मीनां में लखपति क्यूं नी बणै ?" बात सुण'र मनैं अफसोस भी हुयो अर हंसी भी आई, खैर छोड़ो । ओ एक न्यारो निरवाळो ही प्रसंग है । हां आं बात्यां सूं इत्तो जरूर लाग्यो कै पइसै खातर आपां की भी कर सकां हां, अब मनैं ईं बात में की सको को रैयोनी । देस री साख जावै तो जावो भलां ही, देस रो गौरव अर पुरातात्विक शान लूटीजै तो लूटीजो भलां ही अठै रै आम आदमी नैं तो माया सूं मतलब है, बा चावै कियां ही आवो । ईं प्रसंग रो समापन करता बात पूठी रोहीड़ै माथै ही ल्यावां ।

आ कँडी विडम्बना है के कुदरत जिण रोहीड़ै नैं वरदानरूप आपांनै सूंप्यो आज आपा उणनै ही बिसर'र इनै-बिनै हावका मारता फिरां । ईं रोह सूं ईं धरती मूं दिनोदिन रोहीड़ै रा गाछ विलाइजता जा रैया है, पण आपां नै इण बात री चिन्ता कोनी । वृक्षारोपण रै नांव माथै कणै तो अणछक तीखी सूळां सूं लडालूम बिलायती कीकर कांनी दोडां तो कणै पार्किंग सोनियां नैं लाड लडावां अर कणै यूक्लिपिट्स नै हीयै लगावां, बिना आ सोच्यां कै दळदळी जमीआळो ओ गाछ मरुमौम में के काम रो ! अरे ! जठै पीणै रै पाणी तकात रा फोड़ा भुगतां, जठै नमी रै अभाव में चालती बळबळती लूआं सूं बिना अगन काया सीझै, वठै भयंकर रूप सूं वातावरण री नमी सोखणियो ओ गाछ के काम रो । पण आपां तो नूवै लारै विकता हुय रैया हां । हर नूवी चीज चावै भासा हुवो का भेस आपानै प्रबल वेग सूं आप कांनी खींच रैयी है अर आपां इसा चमगूगा कै आं नूंवी चीजां रै आकर्षण में बधबध नैं बिना की सोच्यां-बिचार्यां जूनी परम्परावां नैं, जूनी बात्यां नैं दबादब छेडै करता जा रैया हां । म्हारै ईं कथन सूं आप आ ना समझलिया कै हूं नूवै रो विरोधी हूं, जूनै रो हिमायती हूं अर

इण खातर पुरोगामी हूं, आर्योडोक्स हूं, अतीत जीवी हूं। नूवैं सूं म्हारो की विरोध कोनी, जूनैं सूं कोई अणूतो हेत कोनी। म्हारैं तो एक ही कैवणो है कै जूनो छोड़ो या नूवों धारो पण दिमाग री खिड़क्यां हमेस खुली राखो गुणावगुण री कसौटी माथै कसनै ही किणी चीज नैं धारो, बपरावो।



डॉ० किरण नाहटा

जन्म : गांव काळू, तहसील : बीकानेर (राजस्थान) में

शिक्षा : एम० ए०, पी०-एच० डी०

लेखन : खासकर निबन्ध अर आलोचना पण समै-समै पर कविता, कहाणी अर साहित री दूजी विधावां में भी कई रचनावां विभिन्न पत्र-पत्रिकावां में प्रकाशित हिन्दी अर राजस्थानी में बराबर लिखणियां।

सम्प्रति : प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, सरदार शहर, जिला चूरु (राजस्थान)